THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI SURESH PRABHU): Sir, I beg to lay on the Table, a statement (in English and Hindi) showing the Supplementary Demands for Grants (Railways), for the year 2014-15.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS-*Contd.*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you very much. Now, Shri Md. Nadimul Haque. You have to adhere to the time. You have to finish it in eight minutes.

श्री मो. नदीमुल हक (पश्चिमी बंगाल): डिप्टी चेयरमैन साहब, मैं आपका शुक्रगुजार हूं कि आपने सदर-ए-जम्हूरिया के थैंक्स मोशन पर बोलने का मुझे मौका दिया। मैंने काफी मैम्बरों की बातें सुनीं, लिहाज़ा मैं अपनी बात, जैसा आपने कहा, मुख्तसर और जामे रखूंगा।

सर, नई सरकार को तकरीबन नौ महीने हो गए हैं और हम सब जानते हैं कि नौ महीनों में बहुत सारी उम्मीदें पूरी हो जाती हैं।

"हमने सोचा था कि बरसात में बरसेगी शराब।
आई बरसात, तो बरसात ने दिल तोड़ दिया।"

मैं शुरू में ही यह पूछना चाहता हूं कि क्या हुआ तेरा वादा? मैं यह सवाल उठाना चाहता हूं कि सरकार के वादों और एक्शन में इतना फर्क क्यों है? यह फर्क किसी एक मामले तक महदूद नहीं, बल्कि हर सूबे में नज़र आता है। अब मनरेगा को ही ले लीजिए। इस गारंटी स्कीम से गारंटी शायद अब गायब हो गई है, जबकि सोशल सेक्टर और पब्लिक वर्क प्रोग्राम्स में इसका शुमार दुनिया की बड़ी स्कीमों में होता है। वर्ल्ड बैंक ने भी इसको देही तरक्की की एक मिसाली स्कीम का दर्जा दिया है, लेकिन मौजूदा सरकार ने क्या किया? सरकार ने इस स्कीम के तहत ब्लॉक्स की शरह घटा दी है और मज़दूर और सामान के रेशियो में भी तरमीम की है। क्या बेहतर नहीं होता कि यह सब करने के बजाय अगर सरकार रियासतों और ग्राम पंचायतों की मदद करती ताकि मनरेगा के ज़रिए प्रोडक्टिव ऐसेट्स तैयार किए जा सकते? यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रेज़िडेंशियल सेक्टर में सोशल सेक्टर को नज़रअंदाज़ किया गया है। जहां हेल्थ बजट में 6000 करोड़ रुपए की कटौती की गई, वहीं डिफेंस बजट में 13,000 करोड़ रुपए की कमी आई है। हद तो यह है कि पिछले नौ महीनों में पेट्रोल और डीज़ल पर लगी एक्साइज़ ड्यूटी में चार मर्तबा इज़ाफा हुआ है।

डिप्टी चेयरमैन साहब, यह सारा हाउस जानता है कि जिस दिन बजट पेश किया गया, उसी रात तेल की कीमतों में फिर इज़ाफा किया गया। खास ध्यान में रखने की बात यह है कि एग्रीकल्चर ग्रोथ अब नेगेटिव हो गई है।

"चमन में फसले बहार आई और गुज़र भी गई
मैं फिक्र ही में रहा आशियां बनाने की।"

सर, सदरे जम्हूरिया ने अपनी स्पीच में कोऑपरेटिव फेडरलिज्म का ज़िक्र किया है। मेरे और हमारी पार्टी के ख्याल में फेडरलिज्म को सिर्फ कोऑपरेटिव ही नहीं, बल्कि ऑपरेटिव भी होना चाहिए। कहने का मकसद है कि मरकज़ी हुकूमत यानी सेंट्रल गवर्नमेंट को रियासतों से भी सीखना चाहिए।

सर, आज आपके इल्म में होगा कि मग़रिबी बंगाल की हुकूमत ने "कन्याश्री" नामक स्कीम लॉन्च की है, जिसके तहत अब 22 लाख लड़कियों को फायदा पहुंचा है। हमारा लक्ष्य है कि अगले दो वर्षों में यह फिगर 44 लाख तक पहुंचाई जाए। आपको यह जानकर खुशी होगी कि यूनिसेफ ने भी "कन्याश्री" की तारीफ की है और अब यह स्कीम यूनिसेफ की पार्टनरशिप के साथ चल रही है। क्या यह बेहतर नहीं होता कि मरकज़ी हुकूमत भी रियासतों की कामयाब स्कीमों को सारे मुल्क में लागू करे। अफसोस की बात है कि पिछले यौमे जम्हूरिया के परेड के मौके पर "कन्याश्री" के tableau को निकालने की इजाज़त नहीं दी गई।

डिप्टी चेयरमैन साहब, मैं बंगाल की मां-माटी-मानुष सरकार को सलाम करता हूं कि उसने कई ऐसे कदम उठाए और वेलफेयर प्रोजेक्ट्स शुरू किए जिनकी वजह से जंगल महल इलाके में extreme left wing violence में ज़बर्दस्त कमी आई है। लेफ्ट विंग तशद्दुद के कामयाब मुकाबले के लिए ऐसे एक़दाम पर मब्नी एक कौमी या नेशनल मॉडल बनाया जा सकता है और जहां-जहां यह वॉयलेंस होता है, वहां इसे लागू किया जा सकता है।

डिप्टी चेयरमैन साहब, हाल ही में हुकूमत ने लैंड एक्विज़िशन ऑर्डिनेंस का इत्लाक़ किया है। इससे कब्ल लैंड एक्विज़िशन ऐक्ट मुल्क में लागू था। ऑर्डिनेंस के ज़रिए ऐक्ट के कई प्रोटेक्टिव प्रोविजन्स को हटा दिया गया है, मसलन सोशल इम्पैक्ट असेसमेंट की अब कोई ज़रूरत नहीं है। 70 फीसद मुतास्सिर खानदानों की इजाज़त की जरूरत नहीं। इस ऑर्डिनेंस के तहत अब मल्टीक्रॉप्स और इरिगेटेड ज़मीन को भी हासिल किया जा सकता है। यहां मैं कहना ज़रूरी समझता हूं कि तृणमूल कांग्रेस वही पार्टी है, जिसने यूपीए-II में भी लैंड एक्विज़िशन बिल की मुखालफत की थी। ...**(समय की घंटी)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

श्री मो. नदीमुल हक: यह लास्ट प्वाइंट है। आखिर में मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे मुल्क में कसरत में वहदत यानी unity in diversity की मिसाल दी जाती है। हमारे मुल्क की यह एक निशानी है और यह unity सिर्फ बातों तक महदूद नहीं, बल्कि ऐक्शन में भी ज़ाहिर होनी चाहिए। Sir, before me, our senior leader has said that unity in diversity can be beautiful in action like it is in the Indian cricket team. हमारी पार्टी ने पार्लियामेंट में एक अलग किस्म की unity in diversity का मुज़ाहिरा किया है। हमारे पहले स्पीकर एक क्रिश्चियन थे, दूसरे हिन्दू और तीसरा मैं आपके सामने खड़ा हूं। यह कोई मनसूबा या प्लानिंग के तहत नहीं किया गया, लेकिन ऐसा हुआ। यही हमारे मुल्क और हमारी डेमोक्रेसी की खूबसूरती है। सर, मैं अपनी बात एक शेर के साथ खत्म करता हूं कि –

[श्री मो. नदीमुल हक]

"वो वक्त भी देखा है तारीख की नज़रों ने,
लम्हों ने खता की थी, सदियों ने सज़ा पाई।"

جناب ندیم الحق (مغربی بنگال): ڈپٹی چیئرمین صاحب، میں آپ کا شکرگزار ہوں کہ آپ نے صدر جمہوریہ کے تھینکس موشن پر بولنے کا مجھے موقع دیا۔ میں نے کافی ممبروں کی بات سنی، لہذا میں اپنی بات، جیسا آپ نے کہا، مختصر اور جامع رکھوں گا۔

سر، نئی سرکار کو تقریبا نو مہینے ہو گئے ہیں اور ہم سب جانتے ہیں کہ نو مہینوں میں بہت ساری امیدیں پوری ہو جاتی ہیں۔

ہم نے سوچا تھا کہ برسات میں برسے گی شراب

آئی برسات تو برسات نے دل توڑ دیا

میں شروع میں ہی یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا ہوا تیرا وعدہ؟ میں یہ سوال اٹھانا چاہتا ہوں کہ سرکار کے وعدوں اور ایکشن میں اتنا فرق کیوں ہے؟

یہ فرق کسی ایک معاملے تک محدود نہیں، بلکہ ہر صوبے میں نظر آتا ہے۔ اگر منریگا کو ہی لے لیجئے۔ اس گارنٹی اسکیم سے گارنٹی شاید غائب ہو گئی ہے، جبکہ سوشل سیکٹر اور پبلک ورک پروگرامس میں اس کا شمار دنیا کی بڑی اسکیموں میں ہوتا ہے۔ ورلڈ بینک نے بھی اس کو دیہی ترقی کی ایک مثالی اسکیم کا درجہ دیا ہے، لیکن موجودہ سرکار نے کیا کیا؟ سرکار نے اس اسکیم کے تحت بلاکس کی شرح گھٹا دی ہے اور مزدور اور سامان کے ریشیو میں بھی ترمیم کی ہے۔ کیا بہتر نہیں ہوتا کہ یہ سب کرنے کے بجائے اگر سرکار ریاستوں اور گرام پنچایتوں کی مدد کریں تاکہ منریگا کے ذریعے پروڈکٹیو ایسیٹس تیار کئے جا سکیں؟ یہ کہنا غلط نہیں ہوگا کہ پریزیڈینشل سیکٹر میں سوشل سیکٹر کو نظر انداز کیا گیا ہے۔ جہاں پلنٹھ بجٹ میں 6000 کروڑ روپے کی کٹوتی کی گئی، وہیں ڈیفینس بجٹ میں 13,000 کروڑ روپے کی کمی آئی ہے۔ حد تو یہ ہے کہ پچھلے نو مہینوں میں پیٹرول اور ڈیزل پر لگی ایکسائز ڈیوٹی میں چار مرتبہ اضافہ ہوا ہے۔

ڈپٹی چیئرمین صاحب، یہ سارا ہاؤس جانتا ہے کہ جس دن بجٹ پیش کیا گیا، اسی رات تیل کی قیمتوں میں پھر اضافہ کیا گیا۔ خاص دھیان میں رکھنے کی بات یہ ہے کی ایگریکلچر گروتھ اب نگیٹو ہو گئی ہے۔

"چمن میں فصل بہار آئی اور گزر بھی گئی

میں فکر میں ہی رہا آشیاں بنانے کی"

سر، صدر جمہوریہ نے اپنی اسپیچ میں کوآپریٹو فیڈرلزم کا ذکر کیا ہے۔ میرے اور ہماری پارٹی کے خیال میں فیڈرلزم کو صرف کوآپریٹو ہی نہیں، بلکہ کوآپریٹو بھی ہونا چاہئے۔ کہنے کا مقصد ہے کہ مرکزی حکومت یعنی سینٹرل گوورنمنٹ کو ریاستوں سے بھی سیکھنا چاہئے۔

سر، آج آپ کے علم میں ہوگا کہ مغربی بنگال کی حکومت نے 'کنیا شری' نامی اسکیم لانچ کی ہے، جس کے تحت اب 22 لاکھ لڑکیوں کو فائدہ پہنچا ہے۔ ہمارا لکش ہے کہ اگلے دو سالوں میں یہ فیگر 44 لاکھ تک پہنچائی جائے۔ آپ کو یہ جان کر خوشی ہوگی کہ یونیسیف نے بھی 'کنیا شری' کی تعریف کی ہے اور اب یہ اسکیم یونیسیف کی پارٹنرشپ کے ساتھ چل رہی ہے۔ کیا یہ بہتر نہیں ہوتا کہ مرکزی حکومت بھی ریاستوں کی کامیاب اسکیموں کو سارے ملک میں لاگو کریں۔ افسوس کی بات ہے کہ پچھلے یوم جمہوریہ کے پریڈ کے موقع پر 'کنیا شری' کے tableau کو نکالنے کی اجازت نہیں دی گئی۔

ڈپٹی چیئرمین صاحب، میں بنگال کی ماں-ماٹی-مانش سرکار کو سلام کرتا ہوں کہ اس نے کئی ایسے قدم اٹھائے اور ویلفیئر پروجیکٹس شروع کئے جن کی وجہ سے جنگل محل علاقے میں extreme left wing violence میں زبردست کمی آئی ہے۔ لیفٹ ونگ تشدّد کے کامیاب مقابلے کے لئے ایسے اقدام پر مبنی ایک قومی یا نیشنل ماڈل بنایا جا سکتا ہے اور جہاں جہاں یہ وائلینس ہوتا ہے، وہاں اسے لاگو کیا جا سکتا ہے۔

ڈپٹی چیئرمین صاحب، حال ہی میں حکومت نے لینڈ ایکوزیشن آرڈی-نینس کا اطلاق کیا ہے۔ اس سے قبل لینڈ ایکوزیشن ایکٹ ملک میں لاگو تھا۔ آرڈی-نینس کے ذریعے ایکٹ کے کئی پروٹیکٹیو پروویژنس کو ہٹا دیا گیا ہے، مثلا سوشل امپیکٹ اسیسمینٹ کی اب کوئی ضرورت نہیں ہے۔ 70 فیصد متاثر خاندانوں کی اجازت کی ضرورت نہیں۔ اس آرڈی-نینس کے تحت اب ملٹی-کراپس اور اریگیٹڈ زمین کو بھی حاصل کیا جا سکتا ہے۔ یہاں میں کہنا ضروری سمجھتا ہوں کہ ترنمول کانگریس وہی پارٹی ہے، جس نے یو.پی.اے.-II میں بھی لینڈ ایکوزیشن بل کی مخالفت کی تھی ---(وقت کی گھنٹی)---

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

†جناب ندیم الحق : یہ لاسٹ پوائنٹ ہے۔ آخر میں، میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ہمارے ملک میں 'کثرت میں وحدت' یعنی unity in diversity کی مثال دی جاتی ہے۔ ہمارے ملک کی یہ ایک نشانی ہے اور یہ unity صرف باتوں تک محدود نہیں، بلکہ ایکشن میں بھی ظاہر ہونی چاہئیے۔ Sir, before me, our senior leader has said that unity in diversity can be beautiful in action like it is in the Indian cricket team. †ہماری پارٹی نے پارلیمنٹ میں ایک الگ قسم کی unity in diversity مظاہرہ کیا ہے۔ ہمارے پہلے اسپیکر ایک کرشچن تھے، دوسرے ہندو اور تیسرا میں، آپ کے سامنے کھڑا ہوں۔ یہ کوئی منصوبہ یا پلاننگ کے تحت نہیں کیا گیا، لیکن ایسا ہوا۔ یہی ہمارے ملک اور ہماری ڈیموکریسی کی خوبصورتی ہے۔ بس میں اپنی بات ایک شعر کے ساتھ ختم کرتا ہوں۔

وہ وقت بھی دیکھا ہے تاریخ کی نظروں نے،

لمحوں نے خطا کی تھی، صدیوں نے سزا پائی

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Venkaiah Naidu would like to intervene. Shri Venkaiah Naidu.

THE MINISTER OF URBAN DEVELOPMENT; THE MINISTER OF HOUSING AND URBAN POVERTY ALLEVIATION; AND THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI M. VENKAIAH NAIDU): Mr. Deputy Chairman, Sir, I, in fact, was not inclined to intervene in the debate, because my colleague and the leader of the party, the hon. Finance Minister, had intervened. But, subsequently, I had an occasion to intervene in the Lok Sabha. So, some of my colleagues— Misraji and others — were telling me, 'you are not to be seen here, in your own House.' And, some people, out of love and affection for me, I am told, have even taken my name 3-4 times. So, I thought, I should also make an intervention and place my views before the hon. House.

Sir, we are discussing about the President's Address and on the thanks giving motion to the hon. President of India. The President's Address to the Joint Session of Parliament is a comprehensive document of the direction in which the Government wants to move, about the priorities of the Government and then about our broad vision for the future of the country.

Sir, if you look at the Address, whether it is *Pradhan Mantri Jan Dhan Yojana*, whether it is Direct Benefit Transfer Programme, whether it is PAHAL, whether it is *Swachh Bharat Mission*, whether it is Clean and Open Defecation-Free India, whether it is Skill Kind, whether it is *Deen Dayal Upadhyaya Antyodaya Yojana,* whether it is

†Transliteration in Urdu Script.

[Shri M. Venkaiah Naidu]

Housing for All, whether it is *Pradhan Mantri Krishi Sinchai Yojana or Rashtriya Gokul Mission* or Food Processing with special emphasis on farmers, whether it is *Padhe Bharat Badhe Bharat,* whether it is *Beti Bachao, Beti Padhao Abhiyaan* or the Team India concept all these are very clear. I am not speaking about my Ministry. This we can discuss later when we come to rejuvenation of urban mission or Smart City, etc. But, priority-wise, if you look at all the programmes that have been enunciated in the hon. President's Address, they all speak about priorities of this Government.

I don't want to, normally, touch my friends' name. My friend, Nareshji, had some dig at the Government. And, then, just now, Tyagiji, who is our former friend and I don't know what will happen in future. Of course, a friend is a friend. He is a former colleague.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: A friend is always a friend.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Yes; a friend is always a friend. He is always a friend. He is a very friendly person that way.

SHRI K.C. TYAGI: Is this your gesture to your other friends also?

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: But, they should all remember the history. Sir, if you take the analysis of this Parliament, the maximum number of SC MPs are in my party and in my Government, the maximum number of ST MPs are in my party and in my Government, the maximum number of farmer MPs in the Parliament, त्यागी जी, एक बार थोड़ा देख लीजिए, वे हमारी सरकार में हैं, हमारी पार्टी में हैं। And, Sir, the maximum number of women MPs are also in our party. Sir, maximum number of people who belong to different walks of life and also to poorer sections are from my party...*(Interruptions)*...You will see that. When we come to Budget, we can discuss this, Sukenduji. इसमें क्या प्रॉब्लम है? We are there. The Budget is going to come up for discussion in this House and we will have an ample opportunity. I don't want to mix up both and then make a Budget speech in President's speech and President's speech in Budget speech. I don't want to have that; I would like to have my own speech in between. So, please cooperate. My point is, Sir, this is the mandate of the people. The people are very clear. They are tired. That is why they have retired many of the parties and then gave a clear mandate to Shri Narendra Modi because people thought he is a messiah of the people. Earlier, the people used to call him 3D Modi—decisive, dynamic

and development. Now, 4D also has come. Now, he is decisive, dynamic, development-oriented and also devolutional. During his period, the devolution of 42-47.5 per cent of the funds of the Central Government going to States is a historic evolution. It is like a revolution in the country which is hailed by one and all. As an Urban Development Minister, Sir, I am extremely happy. Rajivji brought the 73rd and 74th Constitutional Amendments to strengthen the local self-governance. But, unfortunately, what has happened? His intention was very good. He tried also during his regime. But, the Government at various levels, State Governments—I am not saying this party Government or that party Government--have not really devolved in those 29 subjects and 3Fs—funds, functions and functionaries—to the local bodies as they were expected. With the result, the local urban governance, the local governance of the Panchayati-raj is under big stress. We know how the urban life in India is because there is a lack of funds. Keeping that in mind, for the first time, Sir, the issue of funds for urban local bodies, for the Panchayati-raj bodies has been addressed too, by this Government, which is a historic step. One must be happy about that, really.

Then, coming to the Team India, we may be different political parties. But, if you look at the allocations that are made, the States like Andhra Pradesh, West Bengal, Bihar...

SHRI SUKHENDU SEKHAR ROY (West Bengal): You are speaking on the Budget...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Please, Sukhenduji...

SHRI SUKHENDU SEKHAR ROY: You are talking about Budget allocations.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I am talking about Team India. ..*(Interruptions)*.. If you want to speak something, I will sit down and you can continue.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Sukhenduji, let him speak.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: You have discussed from Jammu and Kashmir to international things here. In a passing reference if one is saying something, one must have the patience to hear the other side also.

Sir, every scheme of our Government, every programme of the Government which was mentioned by the hon. President, is aimed at empowering the common man, aimed

[Shri M. Venkaiah Naidu]

at empowering the rural India, empowering the vulnerable sections of the country. That is the thrust of the President's Address. Sir, it is empowering even the federal structure of the country. That is the point I wanted to make. If States are strong, then only the Centre can be strong. So, keeping aside political differences, we have seen how West Bengal or Bihar or Andhra Pradesh have been given comparatively higher allocations.

So, my point is, coming to...

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): Sir, this is wrong. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Okay, you can counter it. ..*(Interruptions)*...

SHRI JESUDASU SEELAM (Andhra Pradesh): Sir, it is wrong. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Seelam, no, please. ...*(Interruptions)*... Seelam, please listen to him. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, look at the Pradhan Mantri ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Listen to what he is saying. Why do you interrupt? Please sit down. Mr. Seelam, it is not going on record. ...*(Interruptions)*...

SHRI JESUDASU SEELAM:*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let him complete his speech. ...*(Interruptions)*...

श्री सुखेन्दु शेखर राय: आपने अभी बोला कि बजट में ...(व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Sukhenduji, please. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: The people have given their verdict. The verdict is very clear. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nothing else will go on record. ...*(Interruptions)*... Please sit down.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, 13.2 crore new bank accounts have been opened. Is it not a fact? People had been kept aloof from the financial inclusion. The people who have been kept aloof from the banking system of the country, after these

*Not recorded.

many years of Independence, have now been taken care of by this Government within a hundred days of Government coming to power. Sir, 13.2 crore bank accounts have been opened. It is empowering the rural people. It is empowering the poor people. It is empowering the women.

Then, coming to the Direct Benefit Transfer Programme, Sir, which was started by the previous Government, has been extended; it is being strengthened so that the money directly reaches the people without any pilferage in between. The third one is, Sir, PAHAL, the transfer of LPG subsidy has been extended across the country. From 1st January, Sir, so far, I am happy to know a fact from my colleague, Shri Dharmendra Pradhan, which was also mentioned in the President's Address, that 75 per cent of the user households in all the 35 schemes have been brought under direct benefit transfer architecture. It is also a historical step, Sir.

Then, coming to Swachh Bharat Mission, Swachh Bharat is a dream of all Indians. Mahatma Gandhi...

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश)ः पहले भी था...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Madam, please don't pollute Swachh Bharat. Let us discuss it.

श्रीमती विप्लव ठाकुरः "निर्मल भारत"...**(व्यवधान)**...

श्री एम. वेंकैया नायडुः हां, "निर्मल भारत"। ...**(व्यवधान)**... हां, "निर्मल भारत" और "स्वच्छ भारत" इन दोनों में कोई ज्यादा अंतर नहीं है। ...**(व्यवधान)**... मगर अमल में ...**(व्यवधान)**... आप बोलना चाहें, तो बोलिए। मैं बैठ जाऊंगा।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please don't trouble.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: *Swachh Bharat Mission* is launched to achieve a Clean and Open Defecation Free India by October, 2019. Sir, it is not simple. I am also one of the Ministers who is implementing the scheme partly, because the other part is taken care of by the Rural Development Minister. It is a major challenge before the nation. After these many number of years, we have a huge shortage of toilets in urban areas as well as in rural areas. Because of un-hygienity, the World Health Organisation study reveals that an additional burden of ₹ 6,500 is coming on a common man on health. That is according to the report of the WHO. So, we have around 55 per cent or so, open

[Shri M. Venkaiah Naidu]

defecation. It is a big challenge that the Prime Minister has taken, and he has advised me that this is not a Government programme, this is not a party programme; it has to be a *jan andolan.* We are trying to make it a people's movement. I am happy that many State Governments are participating in this Programme. Many icons from different parts of public life, like industry, film, sports and media are extending their support and it is, slowly, becoming a popular movement. I wish that all of us, in Parliament also, join this movement and strengthen it and make this dream of Clean and Open Defecation Free India by 2019 a reality. That is possible only when we make combined efforts. That is why we have made a separate Mission for that.

Sir, another thing, our demographic composition, is that we have a younger generation which is maximum in our country. Keeping that in mind, we should treat that as a resource and then convert it into wealth by giving them skill upgradation. They have some inherent skills. All Indians, irrespective of the region, whatever vocation or profession they have, they have some inherent skills; but those skills have to be upgraded. That is why the Government has brought up Skill India, Deen Dayal Upadhyaya Grameen Kaushal Yojana, Deen Dayal Upadhyaya Antyodaya Yojana. These are the schemes that are formulated to give them skill upgradation. This is another important aspect of the Programme, which is widely welcomed by one and all. Sir, if you really harness the skills of our youngsters, India will become a strong nation in the coming years, surpassing all other countries. As I told you, we have a huge potentiality of the youth force in the country.

Then coming to Housing for All, it is also a major challenge. People are thinking about all these things; you have said, this has not happened. If construction of a house can be done overnight, our friends would have constructed houses for the entire world. Why? It is because it takes time. So, by Housing for All, we have an objective to cover Housing for All, the vulnerable sections and affected sections, by 2022. We are moving in that direction and we are also seeking the cooperation of the States because the States and the Centre have to work together. The States are also willing and some of the States have said that they will put some money, let the Centre also give some money, both can be dovetailed together and then go for massive housing programme, including some development and some rehabilitation programme. That is also another priority area of our Government, on which we are moving forward.

Sir, with regard to Pradhan Mantri Krishi Sinchai Yojana, there is need for supporting irrigation. Irrigation, basically, is a State subject, but the Centre also needs to extend its hand. Earlier, also, during Deve Gowdaji's regime, Accelerated Irrigation Benefit Programme (AIBP) was there. Now, Pradhan Mantri Krishi Sinchai Yojana, wants to strengthen the irrigation system in the States and also fund the incomplete projects which are lying because of shortage of funds. The Centre would like to extend support to the State Governments for that.

Then cattle wealth is our national wealth. We have to strengthen the cattle wealth, keeping that in mind, Rashtriya Gokul Mission has been launched with the objective of conserving and developing indigenous cattle breeds. This is an important area, on which our Government is focusing.

Food processing is a major issue. As a son of a farmer, I have experienced, during the season, when we produce more, the price goes down considerably. In the non-season, the price goes up. I have my own example of Madanapalli in Andhra Pradesh. Tomatoes in a particular season are sold one rupee a kilo. The same tomato in Bangalore is sold at ₹ 6 a kilo. The rate of the same tomato, by the time it reaches Delhi, becomes ₹ 18 or ₹ 20 sometimes. The same is the case with regard to *Pyaaz*, नासिक में क्या रेट होता है, दिल्ली में क्या रेट होता है, onions के बारे में हमको भी मालूम है। Keeping this in mind, we need to have a two-pronged approach which has been mentioned. One is refrigerating vans; second is, cold storage chain and the third one is, food processing. We purchase tomato ketchup. How costly it is? Then, what is the price of tomato, I have just explained. This is another area, which is a big challenge before us. To really help the farmers, we must go in a big way for the food processing units. That is why the Government has given a special fund of ₹ 2,000 crores to provide affordable credit to the units of certain notified areas also. Sir, this is an area where we have a lot of scope. Anand Sharmaji is smiling because this amount is not sufficient; I do agree.

SHRI ANAND SHARMA (Rajasthan): I am not smiling at you. Mr. Javadekar is distracting. ...*(Interruptions)*...

श्री एम. वेंकैया नायडु : ठीक है, एक दाढ़ी वाला दूसरे दाढ़ी वाले को देख कर स्माइल कर रहा है, तो अच्छा है। जिन्दगी में थोड़ा लाइटर मोमेंट भी होना चाहिए। There is no other intention. Otherwise, हमने बहुत गम्भीरता से बात की, तो फिर हम समझ नहीं पाएँगे।

श्री नरेश अग्रवाल (उत्तर प्रदेश): हम भी लाइटर मूड में थे, लेकिन आपकी तरफ वाले टेंस हो गए।

श्री एम. वेंकैया नायडु : जैसे हमारे त्यागी जी सीरियसली बोले, अगर उतना सीरियसली बोले, तो फिर टच करने में भी संकोच होगा।

Sir, then, Vajpayeeji has said that poverty has multiple effects. So, besides impacting our economy, it erodes our democracy. That is the point the hon. former Prime Minister has made. Keeping that in mind, Sir, separate thrust is given to ST, SC, OBC, minorities and other communities. For that, Upgrading the Skills and Training in Traditional Arts and Crafts for Development, USTTAD. 'उस्ताद' में भी एक मैसेज है। To strengthen them, and to give them the needed skills, and to provide them the needed credit, then, to make them to compete with others as they have been handicapped because of social reasons, because of political reasons and because of economic reasons all these years.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Venkaiahji, how much more time do you need?

SHRI ANAND SHARMA: There is enough time. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, I need another 10-12 minutes.

Sir, I come to that USTTAD Scheme. Then, there is the Van Bandhu Kalyan Yojana. This is another scheme. Then, there is Nanaji Deshmukh Scheme. Shri Nanaji Deshmukh was our colleague in this House. He is one of the pioneers of the social service movement in the country; a great man. So, in his name, that Programme is coming up for construction of hostels for de-notified, nomadic and semi-nomadic tribes. This is also an important aspect touching the common people, the poor people.

'Padhe Bharat Badhe Bharat', because education is vital to our growth. Why? Education really empowers us to fight corruption and also exploitation. But it is unfortunate an irony of our country that 38 per cent of the people of the country do not know how to read and how to write. It is a sad commentary on our system. I am not trying to score any points over this party or that party. But the fact of the matter is, 38 per cent of our people are still illiterate. That is the reality. So, we have to face that.

The second one is, 26 per cent of people are still below the poverty line. That is another area. As I told you, nearly 55 per cent of the people in the rural areas are going

for open defecation. That is a grey area. The farmers are committing suicides even now in different parts of the country. It is a major challenge for all of us, for the Centre and the States together, and understand the recommendations of the Swaminathan Commission, and then try to implement them. Sir, it is very easy to talk about the welfare of the farmers.

SHRI V. HANUMANTHA RAO (Telangana): What about Telengana?

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: The nature and the system has been unkind to the farming community. It is because we are all seeing the vagaries of Monsoon. How, yesterday and the day before, our Ram Gopalji and other friends were telling me, badly it affected *gehu* in this part of the country, and in certain parts of South India also it has affected. But, are we really in a position to compensate them, to rescue them —this side or that side — is a secondary matter. We have to find out some ways and means for strengthening the agriculture, we have to put our brains together and then work out something.

Sir, you know that the industrial goods have no restrictions. They can be transported anywhere, and they can be sold anywhere. But for agricultural goods, there are restrictions in different parts of the country. The restrictions are being removed. But we have to see that really in practice, those restrictions are not there. We know that the farmers are not united; they are helpless. So, that being the case, the Government is trying its best, Sir, through various schemes, to take care of farmers and then uplift them.

Then, Sir, coming to the Beti Bachao, Beti Padhao Abhiyaan, this also another gain to us. In our system, somehow, when we get a daughter, we feel more happy because मैं तो महसूस करता हूँ कि घर में लक्ष्मी जी का जन्म हुआ, मगर देश में लोगों की सोच में कुछ अन्तर है। बच्चा चाहिए, बच्चा चाहिए। बच्चा चाहिए, ठीक है, मगर लड़की क्यों नहीं चाहिए, बेटी क्यों नहीं चाहिए? इसके बारे में हम सब लोगों को सिस्टम पर ध्यान देना होगा, कोई प्रवचन देने से काम नहीं होगा। सिस्टम में प्रवचन देने से कोई काम नहीं होगा। देश का हरेक नागरिक, हरेक व्यक्ति और पूरी जनता इसके बारे में सोचे। अपने देश की निष्ठा के अनुसार पूरी सोसाइटी को इसके लिए हमें एजुकेट करना चाहिए। सभी बच्चियों को पढ़ाने के लिए, उनको आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए, इसके लिए चाहे राज्यों की 'लाड़ली लक्ष्मी योजना' हो, depositing some amount in the name of girl child and by the time she becomes eighteen, she gets a good amount for her marriage, for her future and even before that for her education also.

[Shri M. Venkaiah Naidu]

There is another scheme also, Sukanya Samridhi Account — a new scheme for small saving called 'Sukanya Samridhi Account' has been notified for enabling education of the girl child. It is a major initiative. I am not saying that whatever schemes we have launched, they are all sufficient. Everything is gone. अगर नौ महीने के समय में ही सब समस्याओं का समाधान हो जाएगा, तो इसके बारे में भी समाधान देना पड़ेगा इतने साल जिन्होंने राज किया, वे इसको क्यों नहीं कर पाए, ...**(व्यवधान)**... मेरा कहना यह है कि एक अच्छी शुरुआत हो गई है। हम सब लोगों को मिलकर इसको प्रोत्साहन देना चाहिए और साथ ही साथ आशीर्वाद भी देना चाहिए।

Apprentice Protsahan Yojana - there is a lot of demand for the skilled people and apprentices but there is a shortage of employment also. Both these things have to be married. You have to lay more emphasis on vocational training and apprenticeship training. I am a person who is working in the social field. I can share with you that my daughter and others, we have joined together, they train some twelve thousand people. The amount of happiness and satisfaction I have seen in those girls and boys who have got that training of cell-phone, TV, refrigerator, motor rewinding, fashion, painting; all these activities are really empowering them. So, we need to focus more on that in the coming days. The Government of India wants to give priority to Apprentice Protsahan Yojana which has been launched to promote apprentices in micro, small and medium enterprises in manufacturing sectors.

Sir, the EPF subscriptions have been made portable also benefitting casual workers in the unorganized sector. I will touch one issue, Sir. The statutory wage ceiling and minimum pension have been enhanced to fifteen thousand rupees. One thousand rupees is for the ordinary people. One thousand rupees pension may not look big, but I can tell you that when I was there in Hyderabad to launch that programme, one of the women came to me, when I gave her that certificate, I asked, 'Amma, how much are you getting so far?'. She said, 'thirty rupees.' I was surprised. Then Shri Chandrasekhar of TRS, Chief Minister of Telangana, who has recently started it, enhanced it from his own State fund, not from the Centre. So, my point is that Centre has enhanced it to one thousand rupees minimum pension for ordinary people. All the States should follow it and enhance it further, if at all possible, or, at least, take it to that level where a minimum pension, minimum assurance, is there. About the general pension I am not going to speak because some of my friends will say, budget, budget and all. Budget is there, we will discuss it.

The Universal Pension Yojana, which the Finance Minister has mentioned, paying one rupee and getting two lakh, that we will discuss a little later.

Coming to this Fourteenth Finance Commission's recommendations - the Fourteenth Finance Commission's recommendations have made a radical shift with regard to the finances of the States. Sir, there will be demands; there will be further expectations, further hopes also; I am not denying it. What was there yesterday, what is there today, what is going to be there tomorrow, that has to be seen. Sir, I remember, I am not an expert, Jairamji and Manmohanji themselves are present here, what, you call, could take up that much effectively. If I remember, on 24th February, 2014 Chidambaramji introduced the Budget; now in this Budget also, one figure I am quoting, not for Budget, say but for understanding the economy of the situation, 43.6 per cent of the revenue of India is going back for repaying interest. 43.6 per cent! If I am wrong, I will be very happy to be corrected and the figures can also be corrected, that will be a very good news for the country. I found, I am fully going through the Budget Speech, it will take some more time because to understand full Budget, it is not as much easy, as our friend was telling, for people like us who are coming from rural background. Though I am Urban Development Minister, I have a rural background. So, Sir, 43.6 per cent of the total revenue going for interest payment shows the present situation. Keeping that in mind, whatever is possible from the Government side, Sir, we are trying to give maximum support to the people of different sections. The Prime Minister's 'Make in India' programme is given here in the President's Address. We have launched a programme called as MISIDICI. The MISDICI is the name I have given, but the programme is Prime Minister's programme, which is also mentioned here. MISIDICI means, 'MI' means 'Make in India', 'SI' means skill India, 'CI' means 'Clean India', and 'DI' means 'Digital India'. MISICIDI programme is one of the important programmes taken up by this Government for uplift of the poorest of the poor, to make the Indian industry competitive and also to create more and more wealth. ...and also to create more and more wealth.

My understanding, since my school days, is that if you want to distribute wealth, if you want to take care of the people, you need to create wealth. If you start distributing the wealth, without creating it, you will become pauper. That has been our experience. That is why, I quoted the figure of 43.6 per cent. 43.6 per cent is going for interest payment. Keeping that in mind, we have to plan our programmes, our welfare measures, all these things, whatever we may give, depending upon the priority of the States. And,

[Shri M. Venkaiah Naidu]

our capacity to pay that should also be remembered. Enhancing the capacity to earn more and, then, stand on our own has to be given importance.

Coming to the National Highways infrastructure development. The National Highways are very important. Thanks to the great man, Shri Atal Bihari Vajpayee. He gave us so many four-way highways: Chennai-Calcutta, Calcutta-Delhi, Delhi-Jaipur, Jaipur-Ahmedabad, Ahmedabad-Mumbai, Bangalore, Krishnagiri, Dharampuri, Kanyakumari. We know how many highways were given during the fifty years. But, just in five years, he gave so many four-way highways. Shri Atal Bihari Vajpayee created a history. He goes down in the history of the country for the road network that he had created. That has created a boom in the country. There is a need to expand it further from four lane to six lane and from six lane to eight lane, and at the same time, strengthen Pradhan Mantri Grameen Sadak Yojana. You cannot boast yourself with good road network by simply constructing the National Highways and forgetting the farmer in the rural areas because transport is the key to his development. I am a villager. As I told, I used to walk three kilometres a day in the morning to go to school and, then, come back. There used to be no proper road at all and also no electricity. So, Atal Bihar Vajpayeeji introduced the Swaran Chaturbhuj Yojana. I had told him that we need to take care of the Grameen Sadak Yojana also. He said for Grameen Sadak Yojana, पंचायती राज है, स्टेट गवर्नमेंट है। Some of the CMs also were opposed to that. I remember, Nitishji was there in the Cabinet. Yashwant Sinhaji and all other colleagues supported me. And, at the end of the day, hon. Prime Minister agreed and, then, the Pradhan Mantri Sadak Yojana came. सड़क योजना नहीं है, तो गाँव में—रमेश जी भी मेरे बाद ग्रामीण विकास मंत्री थे... This is very vital for rural development. I feel, without transport connectivity, nobody will go to a village. I say it in my own way. If there is no road to the villages, no development will come, no doctor, no actor, no teacher, no video, no BDO, no DDO, no ADO, nobody will go there. Collector will not go there. Actor will not go there. Doctor will not go there. Only tractor will be able to go there. So, that being the situation, we need to focus with equal emphasis...*(Interruptions)*... Yes, that is the only factor. मैं कोई मजाक के लिए यह नहीं कह रहा हूँ। जनता को थोड़ी आसानी से यह समझ में आये, हमारे लोगों के माइंड में भी यह रजिस्टर हो, इस बात को ध्यान में रख कर मैं कर रहा हूँ। I feel happy that there is a small satisfaction for me. I was the Minister of Rural Development, at that time. But, now also, it needs to be strengthened further. Roads were made ten years back, twelve years back. Because of the concrete, sand and other

things going by those small roads, most of the roads are getting affected. Sand is required, but when it goes through the village roads, the village is getting affected. So, we have to find out a mechanism to strengthen the Pradhan Mantri Sadak Yojana, once again.

Then, I come to power. Power is a major area, but we have not made adequate progress in the recent past. We are all talking about free power. I have theory. Power should first be generated. Free power, according to me, is first low power, then, no power. No power is free power only. I am not talking about our power. I am talking about the electricity for the villages. It is very necessary. I, as a student, suffered studying under lantern – not lantern, lantern used to be a luxury item – under *dhibri.* We used to read in that light. Today, power supply is there for one hour, then, break; for four hours, then, break; for three hours, then, break. So, that is another area to which our Government is giving adequate importance. We have to learn lessons. We will have to go for preserving energy. And, then, Green Energy Corridor Scheme has been accelerated. I am very happy about it. In Delhi, I can share with you, five lakh street lights are being converted into LED street lights. By that, I am told, there will be 30 to 35 per cent of power energy saving. And I can tell you that those 5,00,000 street lights are going to be replaced not by the Corporation, not by the State Government, not by the Central Government but by an agency which will bear the cost, replace the lights and, then, again, get it from the savings of the power bill. It is a new idea. This is an out of box idea. So, our young Minister, Shri Piyush Goyal, is working on such schemes that have been mentioned here also. Solar power, LED, and, then, green energy corridors are also part of the President's Address. Sir, I do not want to elaborate further.

Now, I come to heritage development. Our culture, our heritage is very important to us. We should feel proud of our culture. That is why hon. President has quoted Dr. Shyama Prasad Mukherjee in the beginning itself. Sir, the culture, which our forefathers have lived for ages together, जो आदि काल से, वैदिक काल से, पुराने काल से हमारे पूर्वजों ने हमें दिया, जो हमें विरासत में मिला, उसी को हम संस्कृति कहते हैं, कल्चर कहते हैं। We should feel proud of it and we should keep that heritage. That is why these heritage cities have come. Heritage Development and Augmentation Yojana (HRIDAY) has been launched in certain cities. It will be extended to other cities also in the coming days. There is no shortage of number of cities, because every city has got some historical importance or the other in India. Sir, there is a Scheme called Pilgrimage

[Shri M. Venkaiah Naidu]

Rejuvenation and Spiritual Augmentation Drive (PRASAD). So, we are now trying to dovetail both HRIDAY and PRASAD together. The Ministry of Urban Development and the Ministry of Tourism and Culture are working together. Under this, we have taken up Velankanni in Tamil Nadu; we have taken up Kancheepuram, we have taken up Ajmer, we have taken up Gaya, we have taken up Puri, like that we have taken up a number of places, because they have some historical importance. It is not that there are no other places. There are a number of other places also. As I told you, जितना आटा, उतना रोटी। कहने का मतलब यह है कि आपके पास जितना पैसा है, उसी हिसाब से आप कर पाएंगे। अगर आपके पास ज्यादा पैसा नहीं है, तो ज्यादा स्कीम लेने का कोई मतलब नहीं है। अगर कोई लेगा, तो वह उसको लाँग टर्म में वैसे ही पेंडिंग रखेगा।

Sir, coming back to Pravasi Bharatiya, I am told that for Pravasi Bharatiya also the Government have brought an Ordinance. Sir, some of my friends are objecting to the Ordinance route. It is not desirable in democracy; I do agree. But, at the same time, when it becomes inevitable and it becomes necessary, Ordinances have been used earlier; we are using now also. I politely submit to the House, after Independence, 66 years after our Republic, 637 Ordinances were issued. That means, 11 Ordinances per year. During the Congress rule also, Left rule also and then during our rule also, everybody has got a role and rule. In this situation, we have to understand this. So, let us not try to score points and say 'yours is Ordinance raj.' What is Ordinance raj? ...*(Interruptions)*..

श्री शरद यादव (बिहार): वेंकैया नायडु जी, आप इतने Ordinances के नाम गिना रहे हैं, लेकिन आपके जो Ordinances हैं, उनमें जो चीजें आई हैं, उसके बारे में चिंता है। देश में जितनी भी सरकारें आई हैं, उन्होंने Ordinances निकाले हैं, लेकिन आपके Ordinance से इसलिए दिक्कत है, तकलीफ है, क्योंकि उसमें बहुत कुछ मिला हुआ है, उसमें बहुत कुछ शरीक किया गया है। ऐसी बात नहीं है कि Ordinance नहीं निकाले जाते हैं।

श्री एम. वेंकैया नायडु: शरद जी, मैं आपका और जॉर्ज साहब का बहुत आदर करता हूँ, यह आपको भी मालूम है, क्योंकि मैं बचपन से देखता आ रहा हूँ, in that generation, there were people who fought for the ordinary people and the working class. Shri George Fernandes is one of the great persons. He is not well now. I remember him; I remember his fighting spirit as a student. I used to invite him to my university in Visakhapatnam. He used to give a lecture and then inspired us; thereby, at the end of the day, I myself and Sharadji also landed in jail during emergency, because I supported Jayaprakash Movement. On that count, we are studying it. But please let us understand that when

you talk of merits of the Ordinance, that can be discussed when we take up conversion of ordinances into Bills. I do agree with you. We can have differences of opinion. But what I was suggesting is, it is not trying to score points. I am trying to convey to the country, to the Parliament and also to the Members that even the Left-backed United Front Government in which you also had a major role, 61 Bills and 77 Ordinances were issued — three Odinances per month at that time. What are the Ordinances? I don't want to go into that and have an unnecessary controversy and all. Even on the very first day of Indian Republic, three Ordinances were issued, though the Government at that time had absolute majority in both the Houses. *...(Interruptions)...* It was necessary for the symbols and all. Though the Government of the day had a comfortable majority both in Rajya Sabha and Lok Sabha, in spite of that, Sir. *..(Interruptions)..* During the first Prime Minister's period also, a good number of ordinances had been issued. What I am trying to say is, you disapprove our Ordinance by discussion, by saying, 'this is the shortcoming in the Ordinance, there is no urgency to have e-rickshaws, there is no urgency for coal auction and there is no urgency for xyz.' You discuss it. But we feel, yes, there was an urgency because of the Supreme Court observation, because of the earlier background of the scams that had taken place in coal. We thought the Ordinance is required and we proved to be right because after the Ordinance is issued, after the coal allocation has been made through auction in an open transparent manner — 18 coal blocks were auctioned — we got more than ₹ 1 lakh crore plus. *...(Interruptions)...* And, this money is going to the States. The argument earlier given was, 'वह पूरा कोयला मदर अर्थ में है।' Our Chidambaramji has used a very great phrase. He uses very great English – Shakespearean – but I am only an agrarian. *...(Interruptions)...* Sir, there are only two Members who can compete with Mr. Chidambaram. I think, one is Mr. Jairam Ramesh from that side and then Mr. Derek here. They can compete with him. *...(Interruptions)...* Yes, Jaitleyji also; Jaitleyji also. Yes, I agree with you. My young friend is also very knowledgeable in English. But poor fellows like me, Sharadji, Tyagiji – कहाँ गए वे — राजा और बाकी हम सब गाँव से आए हैं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You also speak good English.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: No, Sir. My English and my Hindi is not that much effective. I always feel about it. But I don't feel sorry. I am very proficient in my Telugu, my mother tongue. . मैं गर्व महसूस करता हूँ when I speak in Telugu. But I cannot speak in Telugu here. मैंने दिल्ली आकर थोड़ी टूटी-फूटी हिन्दी सीखी और हिन्दी में बोलने लगा।

[Shri M. Venkaiah Naidu]

...(**व्यवधान**)... हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। सर, बचपन में मैंने हिन्दी-विरोधी आन्दोलन में भाग लिया।...(**व्यवधान**)... यह मैं सच बता रहा हूँ। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Minister. We are running out of time.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: One minute only. वहाँ हिन्दी दो जगहों पर होती थी- रेलवे स्टेशन तथा पोस्ट ऑफिस, बाकी हमारे किसी इलाके में हिन्दी नहीं होती थी। किसी ने मुझे बताया कि वहाँ हिन्दी है। जब मैं वहाँ गया तो वहाँ रखे लेटर बॉक्स के ऊपर मैंने टार लगाई। जब मुझे दिल्ली लाया गया, तब मुझे मालूम हुआ कि मैंने तो अपने चेहरे के ऊपर टार लगाई, क्योंकि हिन्दी के बिना हिन्दुस्तान में आगे बढ़ना संभव नहीं है। यह प्रैक्टिकल है, क्योंकि यह जनता की लैंग्वेज़ है। I can speak in English in certain States. But if I go to Uttar Pradesh in a remote area and start speaking in English in Bulandshahr, तब क्या होगा? फिर तो बुलंद नहीं होगा, हुलंद हो जाएगा, यह सबको मालूम है। ...(**व्यवधान**)... Sir, I am not on that. ...*(Interruptions)*... I am not making any negative comments about Chidambaramji also. He is definitely well educated, highly knowledgeable. The only problem is, common men of the country do not understand what he says. ...*(Interruptions)*... That is the problem. Sir, the last point that I want to make is ...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We are running out of time.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I am thankful to you.

SHRI P. RAJEEVE (Kerala): They are also enjoying. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Are you not enjoying? ...*(Interruptions)*...

AN HON. MEMBER: Especially Mr. Jairam Ramesh.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Mr. Jairam is one of the intellectuals, undoubtedly. He made such a law which could not be understood by anybody. ...*(Interruptions)*... And I had to seek मैं यह मजाक में नहीं कह रहा हूँ— the permission of the then Prime Minister, Dr. Manmohan Singh, who was kind enough to send Mr. Jairam Ramesh to me and then I tried to learn from him as to what are the provisions in this. But when I go through the Andhra Pradesh Division Act, Sir, the Act says, one-third of the State Assembly will be the Legislative Council. Sir, 175 is the strength of the Assembly and the number of one-third is given as 50. It is there in the Act. Now an Amendment is coming. There were some mistakes. There is nothing wrong. Nobody is perfect. Mistakes have to be rectified. We will try to correct it.

Now I come to the last point. My friends were saying, वेंकैया नायडु ने यह कहा, वह कहा। जो कहा, वह कहा, उसको करने के लिए हम वचनबद्ध हैं। उस समय आप लोगों ने कहा, पोलावरम को ...**(व्यवधान)**...

डा. के.वी.पी. रामचन्द्र राव (तेलंगाना): कब? ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No. Let him speak. ...*(Interruptions)*...

श्री एम. वेंकैया नायडु: सुनिए भाई। ...**(व्यवधान)**... हमने आपको 50 साल मौका दिया, आप नौ महीने भी वेट करने के लिए तैयार नहीं हैं? डा. राव साहब, आपको मालूम है, ...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, please. ...*(Interruptions)*... Let him complete. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: They have not brought the Polavaram Ordinance. ...*(Interruptions)*... We brought the Ordinance. ...*(Interruptions)*... They have not allocated the money. We allocated the money. They said about the special status to Andhra Pradesh. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Listen to him, please. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: And now they are questioning me. We are doing our best. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Listen to him. He is reacting to you and you don't want to listen. ...*(Interruptions)*... What is this?

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Subbarami Reddyji, please. ...*(Interruptions)*... You people did not do your work at that time. That is why, people have given that verdict. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. ...*(Interruptions)*... He is reacting to you. Sit down. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I remember what we had said. ...*(Interruptions)*... I very well remember what we had requested Dr. Manmohan Singh and what Mr. Jaitley had spoken. We remember it well. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. ...*(Interruptions)*... Listen to him. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, we will take all the steps that are required for the speedy development of Telangana and for the speedy development of Andhra. Everything would be done. ...*(Interruptions)*... What is meant to be done will be done, Sir.

Thank you very much...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Dr. Maitreyan. ...*(Interruptions)*... Dr. Maitreyan. ...*(Interruptions)*...

SHRI JESUDASU SEELAM (Andhra Pradesh): Sir, I have a point of order. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No point of order. ...*(Interruptions)*... Dr. Maitreyan. You should finish in eight minutes.

SHRI JESUDASU SEELAM: Sir...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; sit down. I have not allowed you. ...*(Interruptions)*... No, no; sit down. ...*(Interruptions)*... Sit down. Now, listen. Sit down. I have not allowed you. ...*(Interruptions)*... I have not allowed you. It is not going on record.

SHRI JESUDASU SEELAM: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I am not allowing you. Sit down. ...*(Interruptions)*... Dr. Maitreyan, please start. Nothing else will go on record. ...*(Interruptions)*... Nothing else will go on record. ...*(Interruptions)*...

SHRI V. HANUMANTHA RAO: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Sit down; sit down. ...*(Interruptions)*... Nothing will go on record.

SHRI JESUDASU SEELAM: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: What is this? ...*(Interruptions)*...

SHRI V. HANUMANTHA RAO: *

---

*Not recorded.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I do not understand your rationale and logic. When he was about to respond, you were disturbing him and when he has sat down, you are shouting. When he was about to talk about Andhra Pradesh, if you were so agitated – and you are so agitated since morning – then you should have listened to him. You were not ready to listen to him. I can't understand this. ...*(Interruptions)*... Sit down. ...*(Interruptions)*... And now you are disturbing. This is not the way. Now, Dr. Maitreyan. ...(Interruptions)... Why do you do this? ...*(Interruptions)*...

DR. V. MAITREYAN (Tamil Nadu): Thank you, Sir.

I rise to thank the hon. President of India for his Address to the Joint Session of Parliament on the 23rd February. For this opportunity given to me to thank the hon. President, I thank my Leader and the people's Chief Minister, Puratchi Thalaivi Amma. When Members of my Party mention the words 'people's Chief Minister', there is a derisive laughter from certain quarters here. It is painful. I would like to explain to them a little bit about that. Puratchi Thalaivi Amma has always been working with the motto *makkalukkaga naan, makkalal naan*, which means 'I am for the people and I am by the people'. She always says, "Tamil Nadu is my family. The people of Tamil Nadu are my children. Their welfare is my welfare." That is why, crores of AIADMK Party cadre and the people of Tamil Nadu, by and large, affectionately call her the people's Chief Minister, whether she holds that position or not. In the *Ramayana*, while *Rama* was in exile, *Bharata* donned the mantle, but it was always Rama's *padukas* which were the seat of power. In the minds of the people of Ayodhya, *Bharata* had a place, but it was always Rama who was the King. In the same way, as far as we are concerned, the people from Tamil Nadu, particularly the AIADMK cadre, Puratchi Thalaivi Amma would always be the people's Chief Minister, in our lives. This obvious reality has been reiterated by the people of Srirangam, who elected Madam's candidate with a massive victory — with a huge victory margin of 96,000 votes — in the recent Assembly by-election.

As we debate today, the last week witnessed three events – the President's Address on 23rd, the Railway Budget on 26th and the General Budget on 28th. Consequently, my speech would touch all the three.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Within the allotted time?

DR. V. MAITREYAN: Yes, Sir; I would do it within 10 minutes. I will not exceed ten minutes.

[Dr. V. Maitreyan]

3.00 P.M.

Sir, I welcome the decision of the Government of India to abolish the Union Planning Commission, which has lost its relevance in the present context, and replacing it with the *Niti Aayog*. In fact, the last meeting of the Tamil Nadu Government with the Planning Commission was on 10th June, 2013, when *Puratchi Thalaivi Amma* had come to Delhi to meet the Planning Commission officials. It is an important date as far as I am concerned because on that very day, in Delhi, when Madam was here, I was nominated by her, for the third term, as a Rajya Sabha MP. On that day, after finishing the discussions with the Planning Commission, when Madam came out and met the Press, and they asked her if she was satisfied with her discussions with the Planning Commission, she said, "I have come all the way from Chennai to Delhi. To get my money and to spend it my way, I have to come all the way from Chennai to Delhi!" This is the pathetic state of the Planning Commission.

So, it is a good decision that the Union Government got rid of the Planning Commission. In fact, the AIADMK has always advocated an increased role for States in the development and in the nation-building process as well as greater autonomy as far as fiscal matters are concerned. With the active participation of Chief Ministers of all the States and Union Territories in its General Council, I am sure the new institution will definitely foster the spirit of co-operative federalism. I hope it will aid better formulation of economic and developmental policies for both the Centre and the State Governments with due regard to the unique and specific needs of different States.

I welcome the commitment of the Government in the President's Address to stop generation of black money, both domestically and internationally. I congratulate the Finance Minister, Shri Arun Jaitley, for announcing in his General Budget Speech comprehensive measures to check black money by reducing cash-based transactions and to prevent national wealth from being stashed away abroad.

I would like to place on record the heartfelt appreciation of the people of Tamil Nadu of *Puratchi Thalaivi Amma* for her relentless pursuit and untiring efforts to secure the legitimate rights of the State in various inter-State river water disputes. It is only because of her perseverance and courage that Tamil Nadu could secure historic verdicts from the Supreme Court in Mullaiperiyar as well as Cauvery Water issues.

In the memorandum submitted to the hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi, on 3rd June 2014, my people's Chief Minister, *Puratchi Thalaivi Amma*, had sought the immediate constitution of the Cauvery Management Board and Cauvery Water Regulation Committee for effective implementation of the final order of the Tribunal. Even after nearly 2 years of the final order, the notification of the Board has not taken place.

In the meantime, the Government of Karnataka is planning new reservoirs near Mekedatu in the guise of drinking water supply without the consent of the Government of Tamil Nadu. ...*(Interruptions)*... We have already approached the Supreme Court to restrain the Government of Karnataka in this regard. I urge the BJP Government not to accord clearance to any such projects of Karnataka to build dams across the river Cauvery by the Ministry of Environment and Forests. ...*(Interruptions)*... The Cauvery Board is to be formed as a Permanent Monitoring Mechanism. I also urge the Prime Minister to immediately constitute the Cauvery Management Board without any further delay.

Inter-state river water disputes pose a serious threat to national unity. We firmly believe that only the implementation of the Peninsular River Water Linkage Project as part of the National Water Grid Project can address this problem. Hence I urge the Government to fulfil its commitment to the implementation of interlinking of rivers project as mentioned in the President's Address.

The Prime Minister, Shri Narendra Modi, has shown special interest to put the Railways on track. Preparatory work on the Diamond Quadrilateral High Speed Rail network has commenced and I request the Prime Minister that routes to Chennai should be given high priority under this network.

Similarly, Tamil Nadu had sought support for 10 critical new rail projects and 22 projects pending because of shortage of funds. I urge the Prime Minister to look into this.

The Government of Tamil Nadu had suggested the implementation of 3 railway projects through a Special Purpose Vehicle -- Chennai-Thoothukudi freight corridor; Chennai-Madurai-Kanyakumari high speed passenger link and Coimbatore-Madurai high speed passenger link. We look forward to fast track movement in this regard.

Sir, my speech in Rajya Sabha will never be complete without touching the emotional issues of fishermen Tamil Nadu and Eelam Tamils.

[Dr. V. Maitreyan]

Normally Presidents' Addresses, year after year, at least, have a paragraph about the plight of Tamil Nadu fishermen and the need for justice for Eelam Tamils. There was, at least, a lip service in those years. But it is unfortunate and painful that this year's President's Address does not even mention a word about these two events.

Over the last 5 years repeated arrests of fishermen from Tamil Nadu by the Lankan Navy has been continuing unabated. Last week on 26th February, 29 fishermen and 3 fishing boats have been apprehended by the Lankan Navy and are under detention. Even today morning, we heard the news that fishermen from Rameshwaram have been assaulted by the Lankan Navy. I urge the Prime Minister to instruct the Ministry of External Affairs to take up this matter immediately and ensure the prompt release of 29 fishermen from Tamil Nadu and their boats from Lankan custody.

At this juncture, I would like to reiterate the consistent and considered view of my people's Chief Minister, Puratchi Thalaivi Amma, that the abrogation of 1974 and 1976 Agreements and retrieval of Kachchatheevu as well as restoration of the traditional and historical fishing grounds of Palk Bay to the Tamil Nadu fishermen will only be the ultimate solution. I expect the hon. Prime Minister to clarify his stand on this.

I would like to express my profound happiness and joy, मुझे खुशी इतनी मिली कि मन में न समाए। I congratulate Eelam Tamils for resoundingly defeating Mahinda Rajapaksa in the recent Lankan Presidential elections. The man, who was singularly responsible for the genocide of more than one-and-a-half lakh Eelam Tamils, who were my umbilical cord brethren, has been shown his place. The Government might have changed in Lanka. Maithripala Sirisena might have replaced Mahinda Rajapaksa, but the ground situation still continues to remain the same - atmosphere of fear and intimidation, presence of Lankan Army in large number in Tamil areas, the non-resettlement of internally-displaced Tamils, and the absence of any concrete and credible measures taken by the new Lankan Government. Restoring these things is important but equally important is that Rajapaksa should be tried for war crimes. Two weeks ago, the Lankan President was in India. Two weeks from now roughly, our Prime Minister is likely to visit Lanka. Mr. Modi is a champion of federalism, and in the true spirit of federalism, to understand the emotions and aspirations of people of Tamil Nadu, I hope that he will consult the people's Chief Minister, Puratchi Thalaivi

Amma, before his visit to Lanka. Just as he might be concerned about the geo-political situation, we, in Tamil Nadu, are concerned about justice and equality for Eelam Tamils.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, take your seat.

DR. V. MAITREYAN: Justice means only one thing. India should insist on independent international investigation into the war crimes and genocide in Lanka. I hope the hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi, will rise to the occasion. Thank you.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, Shri P. Rajeeve, you should finish within eight minutes.

SHRI P. RAJEEVE (Kerala): Sir, it is my maiden speech on Motion of Thanks to the President.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Anyhow, finish within ten minutes; not more than ten minutes in any case.

SHRI P. RAJEEVE: Sir, we heard the speech of our learned colleague, Mr. Venkaiah Naidu. He has stated the high percentage of woman MPs in this Parliament from BJP. But, Sir, I want to state one thing. I should say that for the first time in the history of this country, the ruling party does not have a single Muslim MP in Lok Sabha. Sir, the ruling party fielded only seven Muslim candidates out of 482 candidates in Lok Sabha elections, that is, only 1.45 per cent, which constitute 31 per cent of the electorate of this country.

The Minister also claimed high percentage of woman MPs from BJP in Lok Sabha, but we could not find a single word regarding the Bill relating to women's reservation in the Presidential Address. Sir, what is the state of women in this country? Yesterday, the Indian Express reported that ten women are raped daily in Delhi; ten women are abducted and five women are raped daily in the city. Sir, 1,838 women were raped in 2014 in Delhi alone. The Government has failed to do anything in this regard. When BJP was in opposition, we stood together against rape and murder of a girl in Delhi, but they now keep mum on such incidents.

Sir, I am now coming to the main part of my speech. We have been discussing the Motion of Thanks to the President's Address for the last three days. I read the 58th paragraph of the Speech. I could find out the name of Mahatma Gandhi in the last part of 57th paragraph while referring to Pravasi Bharatiya Diwas. They have referred to

[Shri P. Rajeeve]

Dindayal Upadhyaya, Shyama Prasad Mukherjee and Atal Behari Vajpayee in several places. But, I could not find the name of Nehru anywhere in the Speech. Congress people are not bothered about it because they have given the names of Gandhi and Nehru to several projects, but they have not adopted the policies of Gandhiji and Nehruji, particularly from 1991 onwards. Sir, in Malayalam, the RSS has an organ, that is, *Kesari*. In that organ, the BJP candidate from Chalakudy Lok Sabha constituency wrote an article. In that article, that person has stated, "Nathuram Godse should have killed Nehru instead of Gandhi". It is written in *Kesari*, the organ mouthpiece of RSS in Kerala. It states, "Nathuram Godse should have killed Nehru instead of Gandhi." That is reflected in the speech also, Sir. Sir, this Government is 3-in-1 Government. The components are, (i) the autocratic approach of the Indira Gandhi Government, particularly, of the period from 1975 to 1977; (ii) the neo-liberal policies of the Narasimha Rao Government of 1991; and, (iii) communal policies of the Vajpayee Government. Actually, it is UPA-II, UPA-III plus NDA-II. Nobody has to go to an astrologer to know the character of the entity of this combination; it is reflected in the Presidential Speech, it is reflected in the Budget Speech, and, it is reflected in the Railway Budget Speech also, Sir.

Sir, this Government is trying to weaken the democratic structure of the country. Our democratic system is working through Parliamentary institutions. Sir, imposition of Article 123 of the Constitution is meant for extraordinary situations. Now, Venkaiahji mentioned that the first step of the first Government of the country is to promulgate an Ordinance. That is true. They are following that step. The first function of this Government is promulgating an Ordinance to appoint a Principal Secretary to the Prime Minister. It happened for the first time in the history of this country. Now, they have promulgated 01 Ordinance in every 28 days. If you deduct the Session period, it would be more shocking, Sir. They have amended the well-discussed legislation through Ordinance without taking into consideration the views of the Parliament and stakeholders.

The Speaker of the first Lok Sabha, Shri G.V. Mavalankar said, and, I quote, "Promulgation of Ordinances is inherently undemocratic." Sir, after 1986, there should have been a change in the concept of Ordinances. Sir, in 1986, in the case of D.C. Wadhwa *Vs.* State of Bihar, the Supreme Court said that the Ordinance raj could not be permitted. This Government is continuing this thing, which is an attack on Parliamentary democracy.

Secondly, Sir, the Parliamentary Standing Committees are the extension of the Parliamentary system. Only the Parliamentary Standing Committee has the right to hear the views of the stakeholders. We have no opportunity to hear the voice of the stakeholders directly. It is true that we are working amongst the people but we have no structured mechanism for this. We have the Parliamentary Standing Committees only to do so.

Now, the Government is trying to push all the Bills without sending them to the respective Standing Committees. If you go through today's List of Business, the Regional Rural Banks (Amendment) Bill is there. This Bill was not sent to the Standing Committee. The Apprenticeship Bill is also another example. Several Bills are there. I would not like to go into the details of all the Bills, but, this is second way to weaken the existing Parliamentary democratic system in our country.

Thirdly, Sir, they are trying to implement a new methodology to weaken the established practices of the Parliamentary system. If a Bill is the property of one House, normally, the same Bill should neither be introduced nor be considered in the other House. This is the precedent of the Parliamentary system. But, Sir, the Government has introduced the Coal Bill, which is the property of this House, and, the Government will be introducing the Insurance Bill also, which is the property of this House. This shows that the democracy is in peril under the regime of this Government.

Sir, our Parliamentary Affairs Minister always stated that this House is trying to block the legislative process. This House can proudly state that this House is the mechanism to ensure the democratic principles of this country. Sir, attacks on secularism has already been explained by several learned colleagues. I would not like to discuss this issue in detail. But, I would like to ask one thing, secularism is a pre-requisite for ensuring democracy in a country like India where 'Unity in Diversity' is the character of the society.

Sir, in Valmiki's Ramayana, Bharat went to the jungle to see Rama. The first question raised by Rama to Bharat was, are you taking care of Carvakas? Who are Carvakas? They are atheists, they are materialistic. Sir, they are enjoying that much respect. Sir, as Shri Sitaram Yechury has already said about the three Indian enemies explained in the book 'We or our Nationhood Defined' written by Mr. Golwalkar and some other things, I would not like to go into the details. Sir, five churches were burnt in this city of Delhi.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: You know, Mr. Golwalkar is no more. I think, his reference here will not be... *(Interruptions)*....

SHRI P. RAJEEVE: I am referring to a book, which is in public domain.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I am happy, at least, you have agreed that Rama was there, Bharat was there. My friend Sitaram is here, and, both Rama and Sita are there in his name. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY (West Bengal): Sir, since the hon. Minister mentioned my name, I can only tell you अब मैं हिंदी में बोलूंगा कि मेरा नाम लेकर मुझे गाली भी देंगे तो आपको पुण्य ही मिलेगा।

श्री एम. वेंकैया नायडु : गाली तो नहीं दे रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

SHRI P. RAJEEVE: Sir, we heard the remarks of the Prime Minister mentioning about Article 25 of the Constitution. Yes, we are ready to take it in a positive sense, but why is the Prime Minister not ready to condemn the attacks on minorities in this country? Why is the Prime Minister not ready to condemn the burning of five churches in the Capital of this country? The hon. Prime Minister is here; I hope the Prime Minister may condemn all these attacks on the minorities and burning of these churches.

Sir, we have seen the advertisement, Ravi Shankar Prasadji is here, of the Preamble of the Constitution, given by the I&B Ministry. Sir, the Supreme Court made a historical judgement on two occasions that any Government, even if they are having 543 out of 543 seats in Lok Sabha, has no power to change Secularism and Socialism from the Preamble of the Constitution. These are the basic structure of the Constitution. But, Sir, in the contemporary India, the same apex Court worries over future of Secularism. "India till now is a secular country. We don't know how long it will remain a secular country." These are the remarks of the Supreme Court, the apex court of the country. Why does the Supreme Court apprehend like that? That reflects the existing situation prevailing in this country. Certainly, the sovereign character of the Republic is also under threat. For the first time in history, the Government of India constituted a working group along with USA to recommend the amendments to the Indian Patents Act, which is an attempt to dilute the sovereign power of this country.

Sir, I would like to add one more point. Our Prime Minister is here. On 7th November, 2013, Modiji spoke in an election rally in Chhattisgarh, I have the CD of

that speech, that every Indian family would get rupees fifteen lakhs *(Time-bell ring)* by bringing back the black money to the country. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Your time is over.

SHRI P. RAJEEVE: I am finishing, Sir. Just one minute.

Hon. Home Minister, Rajnath Singhji, also stated that we would bring the black money within 100 days. The people of the country are waiting *(Time-bell rings)* to get those fifteen lakh rupees deposited into their accounts, Sir. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay; your time is over. ...*(Interruptions)*... Now, take your seat.

SHRI P. RAJEEVE: I am concluding, Sir. ...*(Interruptions)*... This is not *(Time-bell rings)* declared in the General Budget Speech and the Railway Budget Speech. *(Time-bell rings)* With these words, I conclude, Sir. Thank you.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Raja, you can take three minutes. If you finish in three minutes, I will allow you.

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu) : Thank you, Sir. It is good that the Prime Minister is present in the House. Sir, the President's Address is supposed to outline the policies of the Government of the day. The President's Address really outlines the economic policies, several initiatives taken by the Government. We will have the opportunity to debate the economic policies when we debate the Budgets, both General and Railway Budgets. But, Sir, the development, the India first, is not the monopoly of the BJP. Everyone wants India to be first in every field in the world. Everyone wants development in the country. We are for creating wealth, but what we say is there should be equitable distribution of wealth. Venkaiahji was speaking about creating wealth. Yes, we should create wealth, but what about the equitable distribution of wealth? That is the issue we should debate. Development model means what; development for whom; development by whom? We should be very clear. What we understand today is development is for corporate houses, big business houses. How does it correspond to the lives of the common people in the country? Where is the solace to the problems of our common people, poor people? That is what we should debate on. Then, Sir, when we won the independence, the first Prime Minister, Pandit Jawaharlal Nehru, talked about Tryst with Destiny. Sir, India's tryst with destiny began with tragedy. When we won Independence, partition took place.

[Shri D. Raja]

Hindu-Muslim conflicts were everywhere. The Mahatma was not in Delhi; he was at Noakhali walking among dead bodies. When the people from Press asked that what is the message from the Mahatma, he said 'no message'. That was the tragedy. After that, Mahatma Gandhi was assassinated. India began its journey as an independent nation with tragedies. Sir, at that point of time, Dr. Ambedkar was carrying out the laborious job of completing the drafting of the Constitution and he did not succumb to the pressure of the historic situation at that point of time. He refused to succumb to the compulsions of history at that point of time. He did not allow India to become a theocracy. He did not allow India to become an autocracy. Dr. Ambedkar was very clear when he declared that India would remain as a Democratic Republic. Now, what is happening, Sir? I am asking this with great agony. The idea of India is challenged – the political idea of India, the economic idea of India, the social idea of India, the cultural idea of India – is being undermined and challenged by fundamentalist forces. You know who those forces are. Why are they trying to redefine Indian nationhood? I can take the names and they are all in public domain. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay.

SHRI D. RAJA: No, Sir. I am completing it, Sir. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. It's okay. You have to complete.

SHRI D. RAJA: So, Sir, it is the duty and responsibility of the Government of the day to uphold the secular democracy. It is inherent part of the Constitution. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, that's all. ...*(Interruptions)*... No, no. It's okay. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: Finally, I am completing it, Sir. ...*(Interruptions)*... I am completing it. It is because even Venkaiahji talked about energy – Generation of power. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. Don't go to such words of time. There is no time . ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: Only one point, Sir. It is because the Prime Minister is here. He

had 'Chai pe Charcha' with American President Barack Obama? What is the breakthrough that you have achieved as far as nuclear deal is concerned? The House wants to know what breakthrough you have achieved. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Done now. ...*(Interruptions)*... That's enough. ...*(Interruptions)*... Now, Shri Anand Sharma. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: Finally, Sir, ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: How many 'finallys' ? ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: The President's Address does not speak about the position of the Government on the foreign policy. I am asking the Prime Minister that what is the foreign policy perspective of this Government, particularly, in relation to the Sri Lankan Tamils. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Still you do not know. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: The Prime Minister should clarify the Government's position and tell the nation through the Parliament that this is the position of the Government. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, that is all. ...*(Interruptions)*... Shri Anand Sharma, please. ...*(Interruptions)*... Okay, now take your seat. ...*(Interruptions)*... Shri Anand Sharma. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: Government will stand by the side of Tamils in Sri Lanka and strive for a political solution to the problem of Tamils in Sri Lanka. ...*(Interruptions)*... I want him to respond on this matter. Thank you, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please. Okay.

श्री आनन्द शर्मा (राजस्थान) : माननीय उपसभापति महोदय, आप कृपा करें, टोका-टोकी न हो तो अच्छा है। महोदय, मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर जो धन्यवाद प्रस्ताव लाया गया है, उस पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए इस सदन में अपनी बात कहूंगा। सत्ता परिवर्तन के बाद राष्ट्रपति जी का यह दूसरा अभिभाषण है। 9 जून को, नयी सरकार जब बन चुकी थी, तब पहला अभिभाषण हुआ था, जिसमें सरकार की दिशा, दर्शन, सोच, लक्ष्य - सब बताए गए थे। भारत को, भारत की जनता को वायदे दिए गए और उन वायदों को पूरा करने का वचन आपने पहले अभिभाषण में दिया। आज आपको सरकार में आए 275 दिन हो चुके हैं, इसलिए समय आ गया है, लेखा-जोखा करने का। आपके

[श्री आनन्द शर्मा]

किए हुए वायदे, आपके किए हुए काम - कितने वायदे पूरे हुए, कितने वायदे तोड़े, कितने सपने दिए, कितने सपने लुटाए - इन तमाम बातों पर ज़िक्र जरूरी हो जाता है। मैंने पहले भी माननीय प्रधान मंत्री जी से एक बार कहा था कि भारत की संसद है, इसकी परम्परा है। अच्छा है, आप यहां हैं। यह परम्परा बनी रहनी चाहिए। यहां पर सदन में वार्ता भी होती है, बहस भी होती है, चर्चा होती है। सत्ता पक्ष अपनी बात रखता है, विपक्ष अपनी बात रखता है। विपक्ष का अधिकार है, विपक्ष का कर्तव्य है कि सरकार की कारगुजारियों से जनता को अवगत कराए। अगर सरकार की कोई नीति गलत है, अगर सरकार की दिशा गलत है, अगर सरकार ने कोई वायदाखिलाफी की है, तो हिन्दुस्तान की जनता को हम बताएं, यह हमारा फर्ज़ बनता है। आप वायदों की बड़ी लहर पर सत्ता में आए। आपकी जीत हुई और उस जीत के कई कारण थे। एक प्रचण्ड प्रचार तंत्र था, भारी साधन थे, एक प्रचार था। हमने आपको बधाई दी, जिस तरह से आपने टेक्नालॉजी का प्रयोग किया। एक जगह से बोलकर कई स्थानों पर प्रकट हुए, आपने यह सब चमत्कार करके दिखाया है और जनता ने आपको विश्वास दिया। अब समय आ गया है कि चुनाव प्रचार की मानसिकता से थोड़ा बाहर निकलें। हमने आपको बड़े गौर से सुना, सम्मान से सुना, उस सदन में जो आपने कहा, परन्तु उपसभापति महोदय, ऐसा लगा कि अभी चुनाव प्रचार की मानसिकता से वे बाहर नहीं निकले। इतना ही नहीं आगामी चुनाव जो कुछ राज्यों के होने हैं, उन पर भी अब निशाना है। इस वक्त तो अपना काम करने की बात है। देश के सामने बहुत ज्वलंत समस्याएं हैं, उन पर चर्चा होनी चाहिए।

आपके बहुत वायदे थे। मैं हर एक वायदे के बारे में नहीं कहता क्योंकि नेता प्रतिपक्ष और दूसरे साथी कह चुके हैं। आपने हिन्दुस्तान के नौजवानों को रोजगार देने का, नौकरी देने का वायदा किया था। प्रधान मंत्री जी, आपने किसान को उसकी उपज की कीमत देने का वायदा किया था। आपने महिलाओं की सुरक्षा का वायदा किया था। आपने 100 दिन में जो विदेशों में काला धन है, उसको वापस लाने का वायदा किया था। मैं आज बड़े सम्मान के साथ कह सकता हूं कि आपके वायदे खोखले हैं। हकीकत और दावों में बहुत बड़ा फर्क है। प्रधान मंत्री जी, जहां तक किसान की बात है, आपने किसान की खुशहाली की जो बात कही थी, बजट में एक परसेंट जीडीपी का पैसा रखा, उसमें 11 हजार करोड़ रुपया एग्रीकल्चर का काट दिया और किसान त्राहि-त्राहि कर रहा है। आपने एम.एस.पी. नहीं बढ़ाई, आपने प्रोक्योरमेंट कम कर दी। आपका जो निर्यात है वह टूट रहा है, चाहे वह चावल का है, गेहूं का है, कपास का है। इनकी कीमतें टूट रही हैं। मैं याद दिलाना चाहूंगा कि आप जब गुजरात के माननीय मुख्य मंत्री थे, तब आपने एक बड़ा मोर्चा निकाला था, आंदोलन किया था। मैंने आपको कपास की कीमत के लिए पत्र भी लिखे थे। हमने किसान की तकलीफ को देखते हुए एक फैसले से 3400 रुपये से 3700 रुपये और 3800 रुपये से 4100 रुपये हमने कपास का मिनीमम सपोर्ट प्राइस बढ़ाया। आपने कितना बढ़ाया है केवल 50 रुपया। आज एक्सपोर्ट नहीं हो रहा है। चीन ने अपना कपास दुनिया के बाजार में फैंक दिया है। आज सिर्फ एक चीज़, जिस पर आपकी बड़ी आपत्ति थी, हालांकि वह प्रचार सच्चा नहीं था, यह मैं कहूंगा। आपने चुनाव में कहा, चुनाव से पहले कहा, गुजरात के चुनाव में कहा, आपने Pink revolution की बात कही, हिन्दुस्तान से यूपीए की सरकार beef एक्सपोर्ट कराती है,

beef नहीं, इस देश में गाय नहीं काटी जाती, परन्तु वह आपका प्रचार था। मैंने आपको पत्र लिखा था। आज गेहूं, चावल, कपास का एक्सपोर्ट नहीं बढ़ा है बल्कि मीट का एक्सपोर्ट जरूर बढ़ा है। इस पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन आज ये प्रश्न उठते हैं, ये सारी बात बताने के। आज वास्तविकता क्या है? आप निर्माण की बात करते हैं, manufacturing की बात करते हैं, हम आपका स्वागत करते हैं। आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल होना चाहिए। आपने "मेक इन इंडिया" का नारा दिया है। हमने "मेड इन इंडिया" कहा था और दुनिया के हर बड़े देश में पांच साल लगातार, एक साल में पांच और पांच साल में 25 "मेड इन इंडिया" शो हुए, जिसके कारण पहले जो हमारा 80 बिलियन का एक्सपोर्ट था, वह बढ़कर 323 बिलियन डालर हो गया और इसे हम 323 बिलियन डालर पर छोड़कर गए हैं। अगर आज manufacturing बढ़ी है, आपका ऐसा कहना है, तो एक्सपोर्ट क्यों टूट रहा है? आज सुबह के आंकड़े हैं, पिछले पांच महीने के सबसे कम manufacturing के, यह चिंता की बात है। आपने रोजगार की बात कही थी, क्या रोजगार बढ़ा? रोजगार कम हुआ है, यह आपकी सरकार के आंकड़े हैं। यह मेरा कथन नहीं है। इसलिए प्रश्न यह पैदा होता है कि आपने नौजवानों को जो सपना दिखाया था, आपने देश की जनता से जो कहा था, आज वे अपने आपको ठगा सा महसूस करते हैं। देश में कोई नया उद्योग नहीं लग रहा है, बाहर से पैसा आ रहा है पर कर्जे में ज्यादा आ रहा है। कर्जे में ज्यादा पैसा आ रहा है, लेकिन manufacturing के लिए पैसा कम है। आपकी सरकार और आपके माननीय वित्त मंत्री जी, जिनका हम सम्मान करते हैं, ये उनके आंकड़े हैं। आप हुनर की बात करते हैं, स्किल्स की बात करते हैं, तो पहले भी यह स्किल डेवलेपमेंट मिशन था। देश की सोच में कई कड़ियां जुड़ी रहती हैं और कई सोच नई होती हैं। ये आपकी विचारधारा से जुड़ी होती हैं और जो आपका दर्शन है, उससे जुड़ी होती हैं, लेकिन मेरा एक प्रश्न है कि अगर आप सही रूप में गंभीर हैं और इस विषय को, चुनौती को, संजीदगी से देखते हैं, तो आपकी सरकार ने इस बजट के अंदर प्राथमिक शिक्षा के लिए 13,000 करोड़ रुपए कम किए हैं। आपने पूरी शिक्षा के लिए, जिसमें उच्च शिक्षा भी शामिल है, 21,000 करोड़ रुपए कम किए हैं। आप कहते हैं ' बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अच्छी बात है और पूरा देश इसका समर्थन करता है, लेकिन मैं कहता हूं कि आप इसके लिए पैसा भी लगाइए। यदि आप पैसा नहीं लगाओगे, तो फिर उनको कैसे पढ़ाओगे? अगर आप बजट में से हर चीज का पैसा काटते जाएंगे, उपसभापति महोदय, मुझे तो हैरानी होती है कि यह कैसे होगा?

मुझे इसलिए एक बात कहनी है कि जो वायदे किए गए थे, जब प्रधान मंत्री जी बोले तब उन्होंने हमको बताया था। इन्होंने 100 नए शहरों की बात की थी। 100 smart cities, वे कहां हैं? आपके पास उनकी कोई सूची है, उनकी कोई रूपरेखा है, कोई गाइडलाइंस हैं, नहीं हैं। इस बार के बजट में उनका कोई जिक्र भी नहीं है। अब हम क्या बोलें? हमने निर्माण की बात की थी। आप उसको कभी स्वीकार नहीं करते। उसको स्वीकार करने में कभी कोई आपत्ति नहीं है, पर मुझे आप से यह बात कहनी है कि हमने 16 औद्योगिक शहर निर्माण के नोटिफाई किए थे, उनमें चार लॉन्च किए थे, वे शेन्द्रा-बिडकिन हैं महाराष्ट्र में, यूपी में, नोएडा में हैं, विक्रम उद्योग पुरी है, उज्जैन में और आपके गुजरात में, जो देश का सबसे बड़ा धुलेरा इनवेस्टमेंट रीजन है, यह 2012 के बजट में था। हमने उसको लॉन्च किया था। आप देश के प्रधान मंत्री हैं, देश के वजीरे आज़म हैं, जब आप बड़ी बात करते हैं, नई सोच बताते हैं, तो कृपा

[श्री आनन्द शर्मा]

करके देश को यह भी बताएं कि पहले भी कोई काम हुआ था? आपकी सोच यह है कि आपने आने से पहले कोई काम नहीं हुआ है। आपके आने से पहले सरकार सोई रहती थी या गलत काम करती थी और हिन्दुस्तान के बारे में नहीं सोचती थी तथा वह अपने देशवासियों के बारे में नहीं सोचती थी। ऐसी मानसिकता स्वस्थ नहीं है। मैं आप से निवेदन करता हूं कि इससे देश का भला नहीं हो सकता है। आपने जो सपने दिखाए, तो नौजवानों ने आप पर विश्वास किया। आज उनका वह विश्वास टूट गया है। आपको जिन्होंने समर्थन दिया, वे आज सही मायने में आपकी वायदा-खिलाफी से दुखी हैं, इसीलिए मेरे कवि मित्र ने आज सुबह लिखवाया—

'कि क्या खबर थी कि हाथ लगते ही फूल से रंग छूट जाएगा।
किसको मालूम था वायदों का भरम, किस कदर जल्द टूट जाएगा।'

आपने और आपके दल ने 'काले धन का' एक बड़ा अभियान चलाया था।, प्रधान मंत्री जी पर, हमारी सरकार पर और यूपीए पर आरोप लगाए गए, निशाना लगाया गया और बदनाम करने के लिए यह निशाना था, एक दुष्प्रचार था। आपने इसको स्वीकार नहीं किया और आज भी स्वीकार नहीं किया कि जो भी सूचना आई, यूपीए की सरकार में माननीय डॉ. मनमोहन सिंह जी प्रधान मंत्री थे, हमने 80 से ज्यादा देशों के साथ एग्रीमेंट किए और सूचना लाए। आज उसी सूचना पर कार्यवाही हो रही है। क्या यह बात माननीय प्रधान मंत्री जी स्वीकार करेंगे? आपकी बीजेपी पार्टी की नेशनल executive ने जनवरी, 2014 में काला धन लाने के लिए एक कमेटी की रिपोर्ट को एक्सेप्ट किया। मुझे मालूम नहीं कि आपने 85 लाख करोड़ रुपए काला धन बाहर है, क्यों कहा। आप इनकार नहीं कर सकते। आपने कहा कि आप 100 दिन के अन्दर वापस लाएँगे। आप इनकार नहीं कर सकते। आज 275 दिन हो गए। मुझे यह भी याद है कि आपने देश के लोगों को कहा था कि हर किसी के खाते में 15 लाख रुपए दिए जाएँगे। ...**(व्यवधान)**... देखिए, मेरा समय कटेगा। ...**(व्यवधान)**... ऐसा कैसे चलेगा? ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You sit down. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... Why are you troubling? ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please, we have no time. ...*(Interruptions)*...

SHRI ANAND SHARMA: I am not yielding. Please sit down.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We have no time. Please don't interrupt. ..*(Interruptions)*... No, no, we have no time. Please sit down. ..*(Interruption)*.. We have no time.

श्री आनन्द शर्मा : देखिए, अगर सम्मान से एक-दूसरे की बात सुनेंगे, तो सदन की गरिमा बनी रहेगी।

मुझे आपसे एक बात कहनी है कि आज आप जो कार्रवाई कर रहे हैं, वह किस जानकारी पर है, उसे स्वीकार करें कि सूचना और जानकारी आई थी, सुप्रीम कोर्ट में मामला लम्बित था और काम हो

रहा है। आप उसको पूरा करें, पूरे देश की बधाई आपके साथ होगी, पर मुझे यह कहना है कि 15 लाख तो नहीं दिए, यह आया भी नहीं। ...(**व्यवधान**)... बीच में मत बोलिए। 15 लाख तो नहीं आया, पर अगर इसको गलत न समझा जाए, अच्छा काम है, स्वच्छता है, आपने सबके हाथ में झाड़ू पकड़ा दिया। अब मैं एक चीज़ सोचता हूँ। मैं आपकी सरकार का विज्ञापन देखता हूँ। स्वच्छता की बात अच्छी बात है, उसमें महात्मा गाँधी का चश्मा है। बापू ने कई बातें की थीं। आपने महात्मा गाँधी को केवल स्वच्छता में समेट दिया। महात्मा गाँधी का दर्शन, उनकी सोच विशाल थी। गाँधी जी क्या कहते थे? वे कहते थे - सत्य, अहिंसा, धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता, जन-जन का सशक्तिकरण। आप गाँधी जी की सारी बातें बोलें, गाँधी जी को इतना छोटा मत करें, गाँधी जी का पूरा दर्शन बताएँ। इस अभिभाषण में तो उनका नाम ही नहीं है। 57वें पैराग्राफ में आपने प्रवासी भारतीय दिवस के सम्बन्ध में गाँधी जी का नाम लिया, बाकी आप अच्छा जानते हैं। मेरे लिए यह बात कहना जरूरी था। प्रधान मंत्री जी, आज आपके वित्त मंत्री ने एक नए कानून बनाने की बात की है। उन्होंने कहा कि काले धन पर नया कानून बनेगा। आपका बयान था, उस समय के माननीय प्रधान मंत्री और यूपीए सरकार पर जब आपने निशाना खूब बाँधा, तो आपने बार-बार एक बात कही कि Prevention of Money Laundering Act है, उस पर यूपीए सरकार काम नहीं कर रही है; FEMA है, उस पर यूपीए सरकार काम नहीं करती। देश में कानून हैं। आज जो कार्रवाई हो रही है, वह किस कानून के तहत हो रही है? अगर कोई कानून नहीं होता, तो आप यह नहीं कहते कि हम कार्रवाई नहीं करते। क्या कभी हो सकता है कि इतने बड़े प्रजातंत्र के अन्दर, जो संविधान पर चलता है, कानून पर चलता है, नियमों पर चलता है, उसमें काले धन के खिलाफ कोई कानून न हो? बाहर किसी की सम्पत्ति हो, उसको सजा नहीं मिलेगी? आज यह कौन सी नई बात कह रहे हैं। आप अपनी वादाखिलाफी और नाकामयाबी छिपाने के लिए नए कानून की बात करते हैं। कानून है, आप उसके तहत काम करें। मुझे इस बात का दुख है और हमारे बहुत साथियों को दुख है, दूसरे सदन में आप खूब बोले, आपका अधिकार है, पर आप डाँट रहे थे। आप यह कह रहे थे कि किसी को नहीं छोड़ूँगा। क्या हममें से किसी ने आपको आवेदन दिया है, प्रार्थना पत्र दिया है कि किसी को छोड़ दो? कब दिया है? अगर छुड़वाना होता, तो हम सारी सूचना लेकर आते और 80 देशों से समझौता करते। यह धमकी मत दीजिए, इन धमकियों से कोई डरने वाला नहीं है। जो वायदा किया है, उसको पूरा करें, हम सिर्फ यही बात आपको कहना चाहते हैं।

प्रधान मंत्री जी, कई बातें और भी आपने कही हैं। आपका सारा काम rebranding का है, renaming का है और repackaging का है। आज आप जो 'Make in India' कह रहे हैं, यह भी वही है। बजट पर बोलते हुए मैं इस पर भी बोलूंगा, लेकिन 25 सितम्बर को आपने जो बात कही, जो सितारा दिखाया, उसकी वास्तविकता यह है कि 1 जनवरी, 2010 को 'Invest India' बन चुका था। National Manufacturing Policy, जिसके तहत ये सारी बातें आती हैं, उसको 25 अक्तूबर, 2011 को स्वीकृति दी जा चुकी थी, Industrial Corridor को मंजूरी दी जा चुकी थी, Industrial Corridor-II पर काम चल पड़ा था। चार औद्योगिक शहरों का मैंने जिक्र कर दिया था।

[श्री आनन्द शर्मा]

जो e-based प्रोजेक्ट है, वह 2009 में कंसीव हुआ था, Infosys ने उसको execute किया था। Agra Partnership Summit में 28 जनवरी, 2013 मैंने स्वयं उसका पोर्टल लाँच किया और 20 जनवरी, 2014 को common platform for the 'common delivery of services' लाँच हुआ। अभी वित्त मंत्री जी ने अपने भाषण में कहा कि मैंने इसको लाँच कर दिया है, यह सच्चाई नहीं है। चलिए, यह काम तो निरन्तर चलेगा।

अभी मैंने जो तथ्य दिए, इनसे कोई इन्कार नहीं कर सकता, ये सभी तथ्य भारत सरकार की websites पर उपलब्ध हैं और पूरे देश के सामने हैं। आपने दो services उसमें add की हैं, यह अच्छी बात है। यह काम चलता रहेगा, expand होता रहेगा, पर यह मत कहें कि यह सिर्फ आपने किया है।

मुझे आपसे एक बात और कहनी है, आपका एक नारा है, "Minimum Government Maximum Governance", यह हमारी समझ में नहीं आ रहा है। आज सत्ता के हर निर्णय का केन्द्रीकरण हो चुका है, पूरी शक्ति का केन्द्रीकरण हो चुका है। इस सरकार का एक पहला और बहुत बड़ा फैसला था। हमारे देश में cabinet form of Government है, लेकिन हर Cabinet Minister को 'Appointments Committee of the Cabinet' से बाहर रखा गया, ऐसा पहली बार हुआ है। उसमें केवल गृह मंत्री हैं, क्योंकि एक ही व्यक्ति की कमेटी नहीं बन सकती है।

सारी बड़ी नियुक्तियां केवल एक आपके कार्यालय से ही होती हैं, जो लोग हटाए जाते हैं, वह निर्णय भी वहीं से होता है। गृह मंत्री से स्वयं यह प्रश्न पूछा गया, आपके दस्तखत के बाद उनके पास 'सूचनार्थ' फाइल आती है, यह एक हकीक़त है। आपने बड़े-बड़े अधिकारियों और बड़ी संस्थाओं को छोटा करने का काम किया है। क्या कारण है कि ऐसा हो रहा है? आपका अधिकार है कि आप किसको, क्या बनाएं, पर सरकार की एक विश्वसनीयता होती है, एक गरिमा होती है। जो अधिकारी fixed tenure के लिए होते हैं, उनका निर्णय सोच समझकर होता है, लेकिन चाहे वे Home Secretary हों, चाहे Defence Secretary हों, चाहे Foreign Secretary हों, आपने उनको भी नहीं रखा है। आप तो बड़े अधिकारियों को ऐसे हटा रहे हैं, जैसे देश में उनका कोई योगदान ही नहीं रहा है। जो रिटायरमेंट की आयु पर पहुंच गए हैं, दुःख लगता है, अगर उनको अपमानित करके भेजा जाए। Finance Secretary को भी यूं ही हटा दिया गया और Foreign Secretary को भी यूं ही हटा दिया गया, लेकिन देश के लोगों को जिस बात के लिए सबसे बड़ा दुःख लगा, जिसको मुझे कहना होगा, वह Chief of DRDO के लिए लगा।

जब माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी प्रधान मंत्री थे, उस समय देश के Missile Scientist और Technologist श्री अब्दुल कलाम जी थे। उनके समय में अब्दुल कलाम जी को सम्मान दिया गया, अब्दुल कलाम जी को भारत रत्न दिया गया, अब्दुल कलाम जी को देश का राष्ट्रपति बना दिया गया, यह अटल बिहारी वाजपेयी जी ने किया था। लेकिन जिस Scientist ने भारत को अग्नि-5 के रूप में पहली Intercontinental Ballistic Missile दी और जो उस कार्यक्रम के निर्देशक और निर्माता हैं,

डॉ. अविनाश चन्द्र, 31 जनवरी, 2015 को जब अग्नि-5 का अंतिम सफल परीक्षण हो गया, तो शाम को बिना किसी सम्मान के उनको रास्ता दिखा दिया गया, हटा दिया गया। एक तरफ वाजपेयी जी ने इतना सम्मान दिया और दूसरी तरफ आप अपमानित करते हैं, यह कोई अच्छा रिवाज नहीं है, इससे लोगों का मनोबल टूटता है। ये देश के ऐसे नागरिक हैं, जिन्होंने बड़ा काम किया है। यह परम्परा अच्छी नहीं है, यह परम्परा बहुत गलत है। मुझे आज आपसे एक चीज़ और कहनी है। कई साथियों ने आपकी विदेश नीति के बारे में जिक्र किया। इस पर चर्चा तो है नहीं, सिर्फ दो पैराग्राफ्स हैं।

प्रधान मंत्री जी, आप अफ्रीका गये, अच्छी बात है। आप ब्रिक्स के सम्मेलन में ब्राजील गये, बहुत अच्छा। आप जी-20 के शिखर सम्मेलन में गये, आस्ट्रेलिया गये। आप ईस्ट एशिया समिट में म्यांमार गये। भारत में चीन के राष्ट्रपति श्री शी जिनपिंग आये। भारत में रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन आये। भारत में अमेरिका के राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा पहली बार हमारे गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में आये। यह अलग बात है और मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है कि आपकी क्या घनिष्ठता है, आप उनको कैसे सम्बोधित करते हैं, यह आप दोनों का अपना मामला है, इसमें मैं बीच में नहीं आता। परन्तु मुझे एक बात कहनी है। इन सब देशों से हमारी स्ट्रेटजिक पार्टनरशिप है। इन रिश्तों का सामरिक महत्व है और इन रिश्तों में संवेदनशीलता है। इन रिश्तों में संतुलन बनना चाहिए। विदेश नीति दुनिया के अन्दर देश के हित को, नेशनल इंटरेस्ट को प्रोजेक्ट करती है। उपसभापति जी, एक चिन्ता है, जो देश को बताना जरूरी है। भारत की आज़ादी के बाद पहली बार एक बात हुई है। रूस हमारा भरोसेमंद दोस्त है। रूस ने मुश्किल की हर घड़ी में भारत का साथ दिया और जब कोई चुनौती आई, रूस भारत के साथ खड़ा रहा। क्या वजह है, प्रधान मंत्री जी, कि पहली बार 1947 के बाद रूस ने पाकिस्तान के साथ डिफेंस पैक्ट कर दिया, सिक्योरिटी पैक्ट कर दिया? यह हमारे लिए बड़ी चिन्ता की बात है। यह अच्छी बात नहीं हुई। आपको इसे सुधारना चाहिए। क्या कारण है कि आपने कभी खाड़ी के देशों की तरफ नहीं सोचा? इसके क्या वजूहात हैं? खाड़ी के देशों से, पश्चिम एशिया से हमारे सम्बन्ध आपकी सरकार आने के बाद कमज़ोर हुए हैं। विदेश नीति पूरे विश्व के लिए होती है। विदेश नीति सीमित नहीं रहती। ये देश भारत के लिए महत्व रखते हैं। भारत के पचासों लाख लोग इन देशों के अन्दर रहते हैं। आपने क्या किया, यह आपको सोचना चाहिए?

मुझे आपसे एक बात और कहनी है। हमें कोई गरज नहीं है, अभी श्री डी. राजा इस बात को कह रहे थे कि आपने क्या बात की, राष्ट्रपति ओबामा से परमाणु क्षेत्र में क्या समझौता किया, वह बड़ा महत्वपूर्ण है। इसको अन्यथा न लें। आप जरूर बतायें कि क्या आश्वासन दोनों तरफ से दिये गये? यह एक सवाल है। कम से कम अब तो स्वीकार कर लीजिए, बराक ओबामा जी से तो मन की बात करते हैं, इधर हमारे साथ भी कर लीजिए और उसका श्रेय तो इधर दे दीजिए। 2008 में जो न्यूक्लियर एग्रीमेंट हुआ था, जो समझौता हुआ था, अब तो मान लीजिए। तब तो हमारी सरकार गिरानी थी। बिल्कुल उस कसौटी पर सरकार लगा दी थी। चुनौती हुई थी, वोट पड़े थे, कई अन्य विषयों पर सरकार गिराने की कोशिश हुई थी। अच्छी बात है कि देर आये दुरुस्त आये। आप उस बात को मान गये कि जो हम कर रहे थे, जो यूपीए सरकार कर रही थी, वह भारत के हित में था, सर्वोच्च हित में था।

[श्री आनन्द शर्मा]

आपने उसे कुबूल किया है, यह अच्छी बात है। एक होता है वि पक्ष में रह कर कुछ कहना और जब उधर जाते हैं तो तस्वीर दूसरी दिखती है। इसलिए शायद आपको हमारी मुश्किलातें समझ में आयी होंगीं और आपने यह भी देखा होगा कि डा. मनमोहन सिंह जी की, यूपीए सरकार की, सोनिया गांधी जी की और हम लोगों की क्या सोच रही थी।

मैं आपसे एक और बड़ी चिन्ता की बात करना चाहता हूँ। इसको आप ज़रा गौर से सुनिये। अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के साथ हमारे सम्बन्ध विशेष महत्व के हैं। हमने इन देशों के साथ, इन महाद्वीपों के साथ सम्बन्धों को मजबूत किया था। हमने इब्सा को आगे बढ़ाया। इंडिया, ब्राजील और साउथ अफ्रीका तीन बड़े प्रजातंत्र हैं और तीन इमर्जिंग इकोनॉमीज़ हैं। इनमें एक एशिया की है, एक अफ्रीका की दक्षिण अफ्रीका है और तीसरा ब्राजील है। उसको हमने आगे बढ़ाया। काम ढीला हुआ है। जहां 'ब्रिक्स' जरूरी है, वहीं ' 'IBSA' भारत के लिए जरूरी है, इस चीज को भूलना नहीं चाहिए। अफ्रीका पर दुनिया की निगाह है और भारत का एक विशेष रिश्ता अफ्रीका के साथ है। I have always maintained that India's relationship with Africa is distinct and different than the engagement of any other country in the world, a continent which is resource-rich both in human resources and material resources and mineral resources.

हमने अफ्रीकन यूनियन से बात की, हमने शिखर सम्मेलन बुलाया। India-Africa Forum Summit पहली अप्रैल, 2008 में और दूसरी Addis Ababa में मई, 2011 में और अब यह होनी थी 2014 में। इसको सदन सुने कि क्या हुआ। पहले तो जो हमारा करार था, हमारा समझौता था अफ्रीकन यूनियन के साथ कि पार्टिसिपेशन क्या होगा। उन्होंने हमको Format of participation दिया था, पर उसी के मुताबिक हमने उनको बुलाया। आपने तय किया, मैंने आपके विदेश मंत्री को आगाह किया कि अफ्रीकन यूनियन की, उनकी sensitivity है, संवेदनशीलता है। वह पहले कहते थे, जब हमने बात की थी, मुझे उनके शिखर सम्मेलन में बात करने के लिए भेजा गया था, उन्होंने कहा कि हमको भारत ऐसे नहीं बुलाए, जिस तरह दूसरे देश हमको बुलाते हैं। हम गरीब जरूर हैं, संघर्ष जरूर हो रहा है, पर हमारे सारे राष्ट्राध्यक्षों को, सारे प्रधान मंत्रियों को कोई बुलाए, हमको अच्छा नहीं लगता। अफ्रीका यूनियन में उस समय अफ्रीका के कई राष्ट्राध्यक्षों ने इस पर अपनी आपत्ति व्यक्त की थी। इसलिए हमने कहा कि आप हमें समझाएं कि पार्टिसिपेशन का क्या फॉरमेट होगा, हम आपको उसी तरह से सम्मान से बुलाएंगे। पर, आपने फैसला किया कि सबको बुलाओ। यह मुझे बताया गया, ठीक है। हमको चिंता थी। आपने 54 राष्ट्राध्यक्षों, प्रधान मंत्रियों को निमंत्रण भेज दिया, यह प्रधान मंत्री की तरफ से जाता है। यह दिसम्बर में होना था और वह गया। आपने इसका क्या कारण बताया? आपको कारण तो सोचकर बताना चाहिए। डिप्लोमेसी भी अपने आप में बड़ी गंभीरता की बात है। कहा कि अफ्रीका में इबोला वायरस है। इबोला वायरस तीन छोटे देशों में है, यह Equatorial Guinea में है, Sierra Leone में थोड़ा सा आया था, घाना को छुआ भी नहीं, बाकी अफ्रीका में नहीं है।

मैं आज सदन में कह रहा हूँ, मैं नाम नहीं लूंगा, दो राष्ट्रपतियों ने और एक प्रधान मंत्री ने मुझसे बात की है। हमने भी वर्षों काम किया है, हमारे भी संबंध हैं और मुझे यह कहा कि आनन्द शर्मा जी,

आपके देश के प्रधान मंत्री जी जब संयुक्त राष्ट्र संघ में थे, तब सब चीजें ठीक थीं। हम भी वहां पर थे, वहां आपके मित्र बराक ओबामा जी को भी अफ्रीका के राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री ठीक लगते थे, आपको भी ठीक लगते थे। उसी संयुक्त राष्ट्र संघ में बैठते थे, तब वह ठीक था। तब इबोला वायरस नहीं था, पर हिन्दुस्तान आने के लिए आपने खुद निमंत्रण दिया था, वह इनको ठेस पहुंचाई है, उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाई है, इसको दुरुस्त करना आपके लिए जरूरी है। मैं बड़े अदब से कहूंगा कि इसको आप अन्यथा मत लें। आज हमारे देश में स्वाइन फ्लू फैला हुआ है। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

श्री आनन्द शर्मा: सर, मैं दो मिनट में समाप्त कर रहा हूँ। सर, आज हमारे देश में स्वाइन फ्लू फैला हुआ है। ...(**व्यवधान**)...

श्री मुख्तार अब्बास नक़वी: सर, इनसे आधे घंटे की बात हुई थी और ये आधे घंटे से ज्यादा बोल चुके हैं। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

श्री मोहम्मद अली खान (आन्ध्र प्रदेश): सर ...(**व्यवधान**)...

†**محمد علی خان**: سر — (مداخلت) —

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You don't disturb, Shri Khan.

श्री आनन्द शर्मा: सर, मैं दो मिनट में समाप्त कर रहा हूँ। सर, मुझे एक बात कहनी है कि आज अगर हमारे देश में स्वाइन फ्लू है, हमारे देश के प्रधान मंत्री, हम आपका सम्मान करते हैं। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

श्री आनन्द शर्मा: आप दूसरे देशों में जाते हैं। अगर कहीं से आपको निमंत्रण आया हो और वह यह कह कर कैंसिल कर दिया जाए कि भारत में स्वाइन फ्लू है, आप मत आएं, तो भारत इसको बरदाश्त नहीं करेगा।

[MR. CHAIRMAN in the Chair.]

इसी तरह जो आपने किया है, मेरा आपसे यह निवेदन है, आग्रह है कि यह देश के हित में होगा कि इस पर आप खुद गौर करें, इसको सुधारें। अंत में मुझे आपसे यही कहना है, माननीय सभापति महोदय, कि सरकार नौ महीने के बाद अपने किए वायदों का हिसाब दे। आप देश के हित में जो काम करेंगे, आपको हमारी तरफ से रचनात्मक सहयोग मिलेगा। हममे से कोई नहीं चाहता कि देश आगे न

†Transliteration in Urdu Script.

[श्री आनन्द शर्मा]

बढ़े। पर अगर कोई बात हिन्दुस्तान को कमजोर करेगी, अगर कोई चीज़ ऐसी हुई, आपकी कोई नीति जो जनहित में नहीं हुई, तो हम एक बात स्पष्ट करना चाहते हैं, उसका विरोध होगा।

समय को देखते हुए अंत में मैं सिर्फ एक बात कहूँगा। जो आपकी कारगुजारी रही, जो वादाखिलाफी रही, उसको देखकर यह कहना हैः

"दावा था जिनका कि वो गुल खिलाएँगे,
देख रहा है देश, कुछ दिन के बाद वो गुलशन लुटाएँगे।"

धन्यवाद।

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी)ः आदरणीय सभापति जी, आदरणीय राष्ट्रपति जी के उद्बोधन पर, धन्यवाद प्रस्ताव पर यहाँ विस्तार से चर्चा हुई है। मैं भी आदरणीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रकट करने के लिए उपस्थित हुआ हूँ और इस सदन से भी यह प्रार्थना करने के लिए उपस्थित हुआ हूँ कि हम सब सर्वसम्मति से आदरणीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर, इस धन्यवाद प्रस्ताव को पारित करें।

चर्चा में सभी आदरणीय सदस्यों ने विस्तार से मार्गदर्शन किया है। मैं सबका आभारी हूँ। एक बात सही है कि यह सदन काउंसिल ऑफ स्टेट्स है। हममें से कई सदस्य ऐसे होंगे जिन्होंने जब उस राज्य का प्रतिनिधित्व किया होगा, तब उस राज्य की जनता का मूड एक होगा और आज उस राज्य की जनता का मूड दूसरा है। वहाँ राजनीतिक परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। जनता ने निर्णय बदले हैं और उस अर्थ में काउंसिल ऑफ स्टेट्स के हिसाब से उन राज्यों की जो भावनाएँ हैं, वहाँ की जो सरकारें हैं, उनकी भावनाएँ हैं, जिन्हें वहाँ की जनता ने चुनकर बिठाया है, उसका प्रतिनिधित्व यहाँ होना बहुत आवश्यक भी है और स्वाभाविक भी है। हम किस दल के प्रतिनिधि हैं, उससे ज्यादा हम जिस राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, उस राज्य में आज व्यवस्था जो है, उसका प्रतिनिधित्व है, उतनी ही हमारी जिम्मेदारी बनती है और उस अर्थ में यह सदन जनमत का भी आदर करेगा। जनता ने जो अपनी आशा और अपेक्षाओं को लेकर देश को सरकार दी है, उस सरकार का, उसके निर्णयों की आलोचना-विलोचना के साथ भी देश को आगे बढ़ाने के लिए साथ-सहयोग करना और साथ-सहयोग लेना, यह हम सब की मिली-जुली जिम्मेवारी है। मुझे विश्वास है कि उस मिली-जुली जिम्मेवारी को निभाने में हम पीछे नहीं हटेंगे।

दूसरा, लोकतंत्र में न धमकियाँ किसी की चली हैं, न चल सकती हैं। मुझे 10 साल तक गुजरात में हर दिन जेल भेजने की झाँसा चिट्ठियाँ आया करती थीं। ...(**व्यवधान**)... क्या खेल होते थे, मुझे मालूम है, मैं कहना नहीं चाहता हूँ, क्योंकि जनता ने मुझे कुछ और दायित्व दिया है। लेकिन, कभी न कभी इतिहास के पन्नों पर ये चीजें आकर रहने वाली हैं। इसलिए धमकियों का चरित्र किसका है, भाषा किसकी है, यह सब जानते हैं। लोकतंत्र में, आपातकाल में क्या कुछ जुल्म नहीं हुए थे। इससे बड़ी

4.00 P.M.

धमकियाँ क्या होती हैं? लेकिन, यह देश झुका नहीं था। इसलिए जो बातें कही नहीं गई हैं, कृपा करके ऐसी बातों को किसी के मुँह में न डाला जाए। क़ानून के तरीके से ही देश चलना चाहिए, क़ानून के दायरे में चलना चाहिए।

यहां पर यह भी बात होती है कि कुछ नया नहीं है, योजनाएं पुरानी हैं। यह सवाल मैंने उस सदन में भी कहा था और इस सदन में भी मुझे दोहराना पड़ रहा है। योजनाएं नई हैं, पुरानी हैं यह विवाद हमें दूर तलक ले जाएगा। मुद्दा समस्याएं पुरानी हैं। चिंता समस्याओं की है, समस्याओं के समाधान के रास्ते खोजने की है और हम इस बात के विचार वाले नहीं हैं कि हम यहां बैठे हैं इसलिए ईश्वर ने सारा ज्ञान हमको दिया है। यह सोच हमारी नहीं है। हममें भी पचासों कमियां हैं। लेकिन हम यहीं बैठकर के कमियों को पूरा कर सकते हैं और लोकतंत्र की यही तो ताकत है। कोई पूर्ण होने का दावा नहीं कर सकता। सब मिल करके पूर्ण होने की संभावना दिखती है। फिर भी शायद ईश्वर की इच्छा नहीं हो तो कुछ कम भी रह सकता है। इसलिए यह सोच हमारी नहीं है। इस सदन ने कभी यह नहीं सुना होगा और मैं शायद सच निकलूंगा, इस सदन ने कभी यह नहीं सुना होगा कि ट्रेजरी बेंच पर बैठ करके जो आज वहां बैठे हैं, उन्होंने कभी यह कहा हो कि इस देश को आगे बढ़ाने में किन्हीं औरों का भी योगदान था। जो आजादी के आंदोलन का क्रेडिट किसी को देने को तैयार नहीं हैं, वे विकास की यात्रा में औरों की भागीदारी को कैसे स्वीकार करेंगे? लेकिन मैं हूं जिसने.......**(व्यवधान)** मैंने लाल किले से कहा था कि यह देश आगे ले जाने में अब तक की सभी सरकारों का योगदान है, अब तक के सभी प्रधान मंत्रियों का योगदान है, सभी राज्य सरकारों का योगदान है। इसी सदन में मेरे पिछले भाषण को देख लीजिए, इन्हीं शब्दों को मैंने जिम्मेदारी और गर्व के साथ कहा हुआ है। हम यह नहीं मानते हैं, और हम तो यह भी सोच नहीं रखते हैं कि देश का जन्म 15 अगस्त, 1947 को हुआ था। यह हमारी सोच नहीं है। यह देश सदियों से, सहस्र वर्षों से बना हुआ है। ऋषियों ने, मुनियों ने, आचार्यों ने, भगवंतों ने, शिक्षकों ने, मजदूरों ने, किसानों ने, खेत और खलिहान में पसीना बहाने वाले लोगों ने यह देश बनाया है, सरकारों ने देश नहीं बनाया है। हम तो आते हैं, व्यवस्थाओं को चलाते हैं और फिर चले जाते हैं। इसलिए कृपा करके जो है ही नहीं, या जो आपके भीतर पड़ी हुई चीजें हैं, जिसको आपने जिया ऐसे ही है, कम से कम आप जिस नजरिए से जिए हो, उस नजरिए से हमें जीने के लिए मजबूर मत करो और न ही आप हमें उस प्रकार के आभूषणों से नवाजित करने की कोशिश करें।

आपने योजनाओं के बारे में कहा। मैं जरा सुनाता हूं। मैं बहुत लम्बा जा सकता हूं, 1984, 1986 तक जा सकता हूं लेकिन मैं उतना समय नहीं लूंगा। जब एन0डी0ए0 की सरकार थी, तब एक योजना थी, मल्टी परपज नेशनल आइडेंटिटी कार्ड प्रोजेक्ट। आप आए, वह बन गई आधार, यू0आई0डी0ए0आई0, वही योजना नया रंग रूप लेकर आई। सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना, वाजपेयी जी के समय थी। महात्मा गांधी नेशनल रूरल एम्प्लॉयमेंट गारंटी एक्ट आपके समय आई।...**(व्यवधान)** सुनना पड़ेगा। अटल जी के समय योजना थी, फ्रीडम ऑफ इंफार्मेशन एक्ट। आप आए, राइट-टू-इंफार्मेशन एक्ट।....**(व्यवधान)**

श्री सभापति : बैठ जाइए।

श्री नरेन्द्र मोदी : अटल जी के समय था अंत्योदय अन्न योजना। आप आए, नेशनल फूड सिक्योरिटी एक्ट। अटल जी के समय था सर्व शिक्षा अभियान और 86 कांस्टीट्यूशन अमेंडमेंट..(**व्यवधान**).. आपने राइट ऑफ चिल्ड्रन टु फ्री एंड कम्पलसरी एजुकेशन एक्ट कर दिया, अटल जी के समय था स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना, आप लाए नेशनल रूरल लाइवलीहुड मिशन..(**व्यवधान**)...अटल जी के समय था टोटल सेनीटेशन कैम्पेन, आप आए तो हुआ निर्मल भारत अभियान। अटल जी के समय था इंश्योरेंस रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी और आपने पेंशन फंड रेगुलेटरी एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी एक्ट कर दिया..(**व्यवधान**)..

श्री एम. वेंकैया नायडु: सर, ये कौनसी परंपरा है, जब प्रधान मंत्री जी बोल रहे हैं तो ये ऐसे खड़े होकर हंगामा करते हैं। ..(**व्यवधान**)..

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, please ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Chairman, Sir ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, please sit down. ...*(Interruptions)*... Please ...*(Interruptions)*... Hon. Members, please observe silence. ...*(Interruptions)*... Please do not disturb. ...*(Interruptions)*... Please allow the hon. Prime Minister to proceed. ...*(Interruptions)*...

श्री एम. वेंकैया नायडु : सर, हमने आनन्द शर्मा जी को शांति से सुना, गुलाम नबी आज़ाद जी को शांति से सुना है, आप लोगों को सदन की मर्यादा का ख्याल रखना चाहिए। देश के प्रधान मंत्री बोल रहे हैं ...(**व्यवधान**)... संसद परिवार होता है ..(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: बैठ जाइए। Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please do not disturb. ...*(Interruptions)*... Please allow the hon. Prime Minister to proceed. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदी : आदरणीय सभापति जी ..(**व्यवधान**)..

श्री सभापति : बैठ जाइए।

श्री एम. वेंकैया नायडु : सर, अगर नहीं सुनना चाहते, तो समाप्त कर दें?

MR. CHAIRMAN: Please proceed. ..(**व्यवधान**)... आप चुप रहिए।

श्री नरेन्द्र मोदी : आदरणीय सभापति जी, यहां कुछ राजनीतिक बातें भी हुई हैं, यह भी कहा गया कि ये कौन हैं, वह कौन है, काफी कुछ कहा गया। मैं सदन का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित

करना चाहता हूं कि राजनीतिक जीवन में perception के आधार पर निर्णय करने से कैसी गड़बड़ियां होती हैं। आप जानते हैं कि आप कहां से कहां पहुंच गए हैं। इसलिए सच्चाई के धरातल को भी राजनीतिक जीवन में समझना बहुत आवश्यक है। यह हमारे लिए और आपके लिए भी आवश्यक होता है। हम सिर्फ perception के आधार पर नहीं चल सकते। अभी मैं वेंकैया जी का भाषण सुन रहा था, वह कह रहे थे कि सब से ज्यादा किसान हमारे हैं, सब से ज्यादा दलित हमारे हैं। आप देखिए, आज लद्दाख को बीजेपी रिप्रजेंट करती है तो कन्याकुमारी को भी बीजेपी रिप्रजेंट करती है, कच्छ को अगर बीजेपी रिप्रजेंट करती है तो अरुणाचल प्रदेश भी बीजेपी रिप्रजेंट करती है। ...(**व्यवधान**)... इसलिए आप कच्छ से लेकर अरुणाचल तक देखिए। आप कभी सोचते थे कि ये हिंदी बेल्ट के लोग हैं, आप देखते हैं कि हम साउथ में भी सरकार बनाने में भी सफल रहे हैं। कभी-कभी हम पर यह आरोप भी लगाया जाता है कि उच्च वण के लोग ही इस पार्टी में है, लेकिन मुझे देखने के बाद आपको यह विचार बदलना पड़ा होगा। ऐसे कुछ राज्य हैं, जहां पर आदिवासियों की जनसंख्या ज्यादा है, उनमें से महाराष्ट्र हो, मध्य प्रदेश हो, छत्तीसगढ़ हो, झारखंड हो, राजस्थान हो, गुजरात हो, ये वे राज्य हैं जहां maximum आदिवासी हैं और वहां पर आदिवासी समाज ने भारतीय जनता पार्टी को सत्ता दी है। आपको यह भी मालूम है कि गोवा, जहां ईसाई समाज के निर्णायक वोट हैं, वहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार पूर्ण बहुमत से है। नागालैंड, जहां अधिकतम वोट ईसाई समाज के हैं, वहां भारतीय जनता पार्टी सरकार में है। जम्मू-कश्मीर, जहां पर मुस्लिम वोट निर्णायक है, वहां आज हम सत्ता में भागीदार हैं। पंजाब, जहां सिख समाज निर्णायक है, वहां हम कई वर्षों से सत्ता में शामिल हैं। ये ऐसे सारे क्षेत्र हैं। इसलिए कभी धरातल पर रह कर सोचें कि भारतीय जनता पार्टी की पहुंच, उसका विकास कहां-कहां हुआ है? आप जिन परसेप्शंस को लेकर बातें करते रहते हैं, वे बहुत पुरानी बातें हैं। कभी-कभार यह कहने को बड़ा सरल होता है, जैसे पुराने जमाने में हमारे सीताराम जी के जो पूर्वज थे, वे लोगों को यही बताते थे कि देख, वह जो गाड़ी चल रही है, उसमें पेट्रोल नहीं जल रहा है, तुम्हारा खून जल रहा है। हमने ऐसे डॉयलॉग सुने हैं, बहुत सालों से सुने हैं। क्या उन्हीं डॉयलॉग पर हम आज भी चलें? वक्त बदल चुका है और इसलिए मैं जरा पूछना चाहता हूँ।

श्री शरद यादवः सभापति जी, मैं प्रधान मंत्री जी से, उनकी सभी बातों से सहमत होते हुए एक बात निवेदन करना चाहता हूँ कि चाहे इनका राज हो, चाहे आपका राज है, हिंदुस्तान के संविधान में जो कमजोर तबकों को अधिकार मिले हैं, वे विधान सभा और लोक सभा में तो आए हैं, पहले वे इस तरफ हमारी तरफ आते थे, अब आपके साथ हैं, लेकिन हिंदुस्तान में बड़ी संख्या में जो सामाजिक विषमता है और हमारे संविधान में आर्थिक और सामाजिक विषमता दूर करने का उल्लेख है। आज सामाजिक विषमता के मामले में भारत सरकार के जितने भी विभाग हैं, चाहे एजुकेशन हो, चाहे मेडिकल हो, किसी विभाग में देख लीजिए, पिछड़ी जाति से लेकर दलित और आदिवासी लोगों की क्या दुर्गति है और वे कहां पहुंचे हैं? इस सामाजिक विषमता को अगर आप दृष्टि में नहीं रखेंगे, तो यहां की संख्या से देश नहीं बदलेगा, हिंदुस्तान धरती से बदलेगा और धरती की थोड़ी-बहुत संख्या आएगी।

[श्री नरेन्द्र मोदी]

...(**व्यवधान**)... निश्चित तौर पर जो लोग आरक्षण से लाभ नहीं पा रहे हैं, उनको आप देखिए। ...(**व्यवधान**)... हम आपसे यही निवेदन करना चाहते हैं, क्योंकि आप इस काम को कर सकते हैं। यही मैं आपसे कहना चाहता हूँ।

श्री नरेन्द्र मोदीः सभापति जी, शरद जी ने मेरे दिल की बात बता दी और मैं उनका आभारी हूँ। कभी आपको मौका पड़े, तो एक किताब "सामाजिक समरसता" है, उसको आप जरूर पढ़िए। जो आपके भाव हैं, मैंने उस बारे में विस्तार से व्याख्या की है, उसे पढ़कर आपको आनंद होगा। वह आनन्द आपका होगा, ऐसा मैं नहीं कह रहा हूँ। शरद जी ने जो बात कही है, उसको मैं स्वीकार करता हूँ।

महोदय, "स्वच्छता अभियान", क्या यह कॉर्पोरेट के लिए कार्यक्रम है, अमीरों के लिए है? क्वालिटी ऑफ लाइफ के लिए हमारे हिंदुस्तान का गरीब तरस रहा है, झुग्गी-झोंपड़ी में रहने वाला तरस रहा है। क्या हम स्वच्छता नहीं दे सकते हैं? जब मैं उस अभियान का कार्यक्रम चलाता हूँ, तो मैं उस गरीब की आवाज सुनता हूँ, माताओं-बहनों के सम्मान की बात करता हूँ। "जन-धन योजना" में इस देश के गरीबों के बैंक एकाउंट खुले। क्या यह कॉर्पोरेट वर्ल्ड का कार्यक्रम है? "जन-धन योजना" में गरीबों के बैंक के खाते खुले हैं। यह न अमीरों का कार्यक्रम है, न कॉर्पोरेट वर्ल्ड का कार्यक्रम है। स्कूलों में टॉयलेट्स, ये कौन से स्कूल हैं? जहां गरीब लोगों के बच्चे जाते हैं। सरकारी स्कूल, जहां गरीब लोगों के बच्चे जाते हैं, झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले बच्चे जाते हैं, ड्राइवर का बच्चा जाता है, जिनमें अब ऐस्पिरेशन है कि बच्चों को पढ़ाना है। वहां टॉयलेट्स नहीं हैं, मैं टॉयलेट्स की बात कर रहा हूँ, इसके लिए मैं लगा हुआ हूँ। क्या यह अमीरों का, कॉर्पोरेट वर्ल्ड का कार्यक्रम है? मैं सॉयल हेल्थ कार्ड की बात कर रहा हूँ। यह किस किसान के लिए है? जिस गरीब किसान के पास कम जमीन है, 'per drop more crop' की मैं बात कर रहा हूँ, क्योंकि छोटा किसान है, जमीन कम है, उसकी उपज कैसे ज्यादा हो, उसके लिए मैं मशक्कत कर रहा हूँ। क्या यह कॉर्पोरेट वर्ल्ड का कार्यक्रम है? क्या यह अमीरों के खजाने में जाने वाला काम है? हम कोल ऑक्शन करते हैं और जो कोल ऑक्शन से पैसा आता है, हिंदुस्तान का पूर्वी बेल्ट, जिसके पास इतनी प्राकृतिक संपदा है, चाहे बिहार हो, झारखंड हो, पश्चिमी बंगाल हो, असम हो, पूर्वांचल हो, ओडिशा हो, इतनी प्राकृतिक संपदा के बावजूद भी गरीबी उनका पीछा नहीं छोड़ रही है। महोदय, क्या उन राज्यों को गरीबी से बाहर लाना है या नहीं? क्या हिन्दुस्तान के पश्चिमी छोर का ही विकास होता रहेगा? मेरे मन में दर्द है, जब तक हम हिन्दुस्तान का संतुलित विकास नहीं करेंगे, तब तक देश आगे नहीं बढ़ेगा। इसलिए कोल ऑक्शन से जो पैसा आएगा, वह इन्हीं राज्यों के पास जाएगा, क्योंकि कोल उन्हीं के पास है और गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ने और राज्य को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें एक बहुत बड़ी ताकत मिलेगी। क्या यह अमीरों या कॉरपोरेट वर्ल्ड के लिए हो रहा है?

महोदय, गंगा सफाई। इस देश की 40 प्रतिशत जनसख्या, आर्थिक दृष्टि से डायरैक्ट और इनडायरैक्ट रूप से गंगा के साथ जुड़ी हुई है। गंगा सफाई किसी के लिए श्रद्धा का विषय हो सकता है, गंगा सफाई किसी के लिए एनवायरनमेंट का विषय हो सकता है, लेकिन गंगा सफाई एक बहुत बड़ा

प्रोग्राम भी है। यह आर्थिक चेतना जगाने वाली ताकत रखता है। यह उस इलाके के गरीब से गरीब लोगों के आर्थिक जीवन में बदलाव लाने का एक बहुत बड़ा साधन बन सकता है। यह सरकार, आखिरी छोर पर बैठे हुए दरिद्र नारायण की सेवा करने के लिए अपने संकल्प को लेकर चल रही है।

स्किल इंडिया, श्री आनन्द शर्मा जी बता रहे थे। मैं बताना नहीं चाहता हूं कि कितनी कमेटियां बनीं, कितने मिशन बने, कितने लोग आए, कितने लोग गए, मैं उसकी चर्चा नहीं करना चाहता हूं, लेकिन सारी दुनिया, समृद्ध से समृद्ध देश भी एक विषय पर फोकस कर के काम कर रहे हैं और वह है स्किल डैवलपमेंट। हम सब की जिम्मेदारी है कि हम अच्छे ढंग से इस दिशा में काम करें। हमारे पास डैमोग्राफिक डिवीडैंड है। अगर डैमोग्राफिक डिवीडैंड है, यानी हमारे पास भुजाएं हैं, तो हाथ में हुनर भी चाहिए। सिर्फ भुजाओं से बात बनने वाली बात नहीं है। भुजाओं में हुनर भी चाहिए। अगर हुनर होगा, तो मैं समझता हूं कि इस देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में हमारे देश का नौजवान एक बहुत बड़ी ताकत बन कर उभरेगा। इसलिए स्किल डैवलपमेंट, हिन्दुस्तान के सामान्य से सामान्य व्यक्ति, गरीब से गरीब व्यक्ति, पांचवीं कक्षा तक पढ़ा और छोड़ दिया, तीसरी कक्षा तक पढ़ा, आगे पढ़ाई छोड़ दी। उन बच्चों के लिए यह फोकस करने वाला एक कार्यक्रम है। इसे लेकर हम चल रहे हैं।

हाउसिंग फॉर ऑल। ये कौन लोग हैं, जिनके पास घर नहीं हैं। क्या ये कॉरपोरेट लोग हैं? ये गरीब लोग हैं। हमारी गरीब को घर देने की कोशिश है। हमारी कोशिश 4 करोड़ घर गांवों में और शहरों में 2 करोड़ घर बनाने की है। भारत की आजादी का अमृत महोत्सव, हम इस सपने को पूरा करने के लिए आगे बढ़ सकते हैं, नहीं बढ़ सकते हैं? इसमें कोई राजनीतिक एजेंडा नहीं हो सकता है। जहां पर कांग्रेस रूल की सरकारें होंगी, हम उन्हें भी कहेंगे, लीजिए, आइए, मिलिए, हम गरीबों को घर दें। यह इस सरकार का कार्यक्रम नहीं है। देश के गरीबों का कार्यक्रम है। इसलिए हम उन चीजों को लेकर चल रहे हैं। मैं मानता हूं कि हम गरीबों को लेकर जिन बातों को कर रहे हैं, उन्हें आगे बढ़ाने में हमें आपका पूरा सहयोग रहेगा। आप देखते हैं, बड़े बुद्धिमान लोग तो अलग-अलग एनैलेसिस करते हैं, लेकिन इस पूरे बजट में 42 परसेंट डिवॉल्यूशन राज्य को जाना, हमारे हिन्दुस्तान की इकोनॉमी को एक अलग तरह से देखना होगा और इसे अलग से देखने के लिए हमें भी सोचना होगा। अब यदि हम देश के विकास की बात करेंगे, तो राज्य सरकार की सम्पदा और राष्ट्र की सम्पदा को मिलाकर, हमें योजनाओं को एक परिप्रेक्ष्य में देखने का समय आ चुका है। इतना बड़ा डिवॉल्यूशन हुआ है और आप तो राज्यों के प्रतिनिधि हैं, आप कौंसिल ऑफ स्टेट्स हैं। इतना बड़ा डिवॉल्यूशन हुआ है कि यदि ये पैसे इन्फ्रास्ट्रक्चर में जाएं, विकास में लगें, तो आप देखिए वहां की इकोनॉमी जनरेट होनी शुरू हो जाएगी। मैं आग्रह करूंगा, आप माननीय सदस्य राज्यों को रिप्रजेंट करते हैं, इतनी बड़ी अमाउंट जब राज्यों के पास गई है, तो उसका उपयोग सच्चे अर्थ में विकास में हो। अगर सच्चे अर्थ में विकास में होगा, तो राज्य बहुत तेजी से अपनी कठिनाइयों से बाहर आएंगे। मेरा आग्रह रहेगा कि इस दिशा में हम सबका ध्यान होना चाहिए।

[श्री नरेन्द्र मोदी]

इस बजट के अंदर एक मुद्रा योजना की बात कही गई है। माइक्रो यूनिट्स डैवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी। हम देखते हैं कि अपने देश में सचमुच में देश की इकोनॉमी कौन चलाता है। इस पर अध्ययन नहीं हुआ है। इस देश के जो सामान्य लोग हैं, वे रोज़गार भी देते हैं, स्वरोज़गार भी करते हैं और देश की इकानॉमी को भी चलाते हैं। ऑटोरिक्शा रिपेयर करने वाला होगा, ऑटोरिक्शा चलाने वाला होगा और ऑटोरिक्शा रखने वाला होगा। स्कूटर रिपेयरिंग करने वाला होगा, साइकिल रिपेयरिंग करने वाला होगा, जूता पॉलिश करने वाला होगा, फल बेचने वाला होगा, ब्रेड बेचने वाला होगा, ये सब सामान्य व्यक्ति हैं। इस देश में करीब साढ़े पांच करोड़ से ज्यादा ऐसी इकाइयां हैं, जो 11-12 करोड़ लोगों को रोज़गार देती हैं। यह नंबर कम नहीं है। उनकी क्षमता है, एक को रोज़ी देते हैं या दो को देते हैं, रोज़गार देने की उनकी क्षमता है, लेकिन यह सब तो ऐसा है कि अगर उसको पैसा चाहिए तो कोई व्यवस्था नहीं है, जहां से उसको पैसा मिल जाए। 120 परसेंट ब्याज पर वह साहूकार के घर से पैसे लेता है और आधी ज़िंदगी उसकी ब्याज चुकाने में चली जाती है। पहली बार यह सरकार इस योजना को लेकर आई है "मुद्रा", जिसके तहत इसी वर्ग को धन मिलेगा। उसकी institutional arrangement होगी और उसके कारण वह अपने आर्थिक विकास को आगे बढ़ाएगा और मैं मानता हूं देश को आर्थिक प्रगति पर ले जाने वाले जितने और पहलू हैं, उनके साथ यह बराबरी के साथ खड़ा रहेगा और देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। यह एक ऐसा नया क्षेत्र है, जिस पर हमने फोकस किया है और मुझे विश्वास है किं वह नई ऊचाइयों पर ले जाने में फायदा करेगा। ये लोग कौन हैं? करीब 54 प्रतिशत लोग ग्रामीण क्षेत्रों में ही व्यवसाय करते हैं, अपना छोटा-मोटा कारोबार चलाते हैं। 46 परसेंट शहरों में हैं और इसमें जो काम करने वाले लोग हैं, उनमें 60 परसेंट, more than 60 per cent या तो शेड्यूल्ड कास्ट्स के हैं या शेड्यूल्ड ट्राइब्ज के हैं या ओबीसी के हैं, यानी यह समाज का इतना पिछड़ा वर्ग है, जिसकी ओर अगर हम ध्यान देंगे, तो मैं समझता हूं कि वह बहुत बड़ी मात्रा में अपने काम को आगे बढ़ा सकता है और हम उसको रोज़गार देने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं। अब तक इनको जो इंस्टीट्यूशनल फाइनेंस होता था ...**(व्यवधान)**...

सुश्री मायावती (उत्तर प्रदेश): माननीय सभापति जी, माननीय प्रधान मंत्री जी ने खास तौर से रोज़गार के संबंध में सबसे ज्यादा फायदा वीकर सेक्शन के लोगों को होने के बारे में बताया है, तो इस संबंध में मेरा माननीय प्रधान मंत्री जी से यह कहना है कि परम पूज्य बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के अथक प्रयासों के कारण देश में एससी/एसटी और ओबीसी के लोगों को, पहले एससी/एसटी के लोगों को, बाद में आर्टिकल 340 के तहत ओबीसी के लोगों को मंडल कमिशन की रिपोर्ट के तहत आरक्षण की सुविधा मिली - शिक्षा में, सरकारी नौकरियों में और राजनीति में, लेकिन दुख की बात यह है कि एससी और एसटी के लोगों को जो आरक्षण की सुविधा मिल रही थी, खास तौर से पदोन्नति में इनको जो आरक्षण मिल रहा था, वह खत्म हो गया। इसके अलावा इतना ही नहीं, वर्तमान में बीजेपी के नेतृत्व में जो एनडीए की सरकार चल रही है, तो यह सरकार बार-बार यह कहती

है कि हम पूंजीपतियों का ध्यान नहीं रख रहे हैं, बड़े-बड़े उद्योगपतियों का ध्यान नहीं रख रहे हैं, हम जो गरीब लोग हैं, जो वीकर सेक्शन के लोग हैं, उनका ध्यान रख रहे हैं, लेकिन इस सरकार में, खास तौर से एससी/एसटी के लोगों का बड़ा उत्पीड़न हो रहा है और इस सरकार में बड़े पैमाने पर ...(**व्यवधान**)... एक मिनट... आप मेरी बात तो सुन लीजिए। ...(**व्यवधान**)... इस सरकार में ...(**व्यवधान**)...आप मेरी बात तो सुनें।

श्री सभापति : सुन लीजिए।

सुश्री मायावती : इस सरकार में जो बड़े-बड़े कार्य हैं, वे प्राइवेट सेक्टर को दिए जा रहे हैं और प्राइवेट सेक्टर में एससी/एसटी के लिए आरक्षण की व्यवस्था नहीं है। तो जब तक प्राइवेट सेक्टर में इनके लिए आरक्षण की व्यवस्था नहीं होगी, तो इन लोगों को अभी तक जो आरक्षण का लाभ मिल रहा था, वह भी अब खत्म हो जाएगा। इसलिए सरकार की ओर से यह कहना कि हम इन लोगों के उत्थान का ध्यान रख रहे हैं, इनको रोज़गार दे रहे हैं, तो मेरा माननीय प्रधान मंत्री जी से यह कहना है कि क्या आप प्राइवेट सेक्टर में एससी/एसटी के लोगों के लिए आरक्षण की व्यवस्था करेंगे?...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : थैंक यू।

सुश्री मायावती : यदि आप आरक्षण की व्यवस्था नहीं करते हैं, तो मैं तो यही कहना चाहूंगी कि एससी/एसटी के लोगों को जो रिज़र्वेशन की सुविधा मिल रही थी ... वह भी प्राइवेट सेक्टर में धीरे-धीरे खत्म की जा रही है।

श्री सभापति : मायावती जी, आपने अपनी बात कह दी है। Thank you.

सुश्री मायावती : तो क्या यह पूंजीपतियों को बढ़ावा नहीं दिया जा रहा है? क्या यह उद्योगपतियों को बढ़ावा नहीं दिया जा रहा है?

श्री सभापति : नहीं, नहीं। मायावती जी..(**व्यवधान**).. आप बैठिए।..(**व्यवधान**)..

सुश्री मायावती : और यदि आप कहते हैं कि बढ़ावा नहीं दिया जा रहा है तो प्रधान मंत्री जी..(**व्यवधान**)..

श्री सभापति : अब आप बैठ जाइए, प्लीज़।

सुश्री मायावती : आप बताएं कि एससी, एसटी वर्गों के लोगों के लिए क्या आप प्राइवेट सेक्टर में रिज़र्वेशन की व्यवस्था करेंगे, कृपया इसके बारे में बताएं।

MR. CHAIRMAN: Thank you, Mayawatiji. ...*(Interruptions)*...

SHRI V. HANUMANTHA RAO: Mr. Chairman, Sir....*(Interruptions)*..

MR. CHAIRMAN: No. I am sorry. ...*(Interruptions)*... I am not allowing you. ...*(Interruptions)*... Sit down. ...*(Interruptions)*... Sit down. Sit down. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ....*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*...

SHRI V. HANUMANTHA RAO: Even our Prime Minister belongs to OBC. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: I would be compelled to take action against you.

श्री नरेन्द्र मोदी : आदरणीय सभापति जी, यह वरिष्ठ सज्जनों का सदन है, यहां अनुभवी लोग हैं, तपस्वी लोग हैं, देश को बहुत कुछ दिया है, ऐसे लोग हैं, मैं यहां बहुत नया हूं, आप हमारी रक्षा कीजिए। आदरणीय सभापति जी, 125 करोड़ लोगों में से 29 करोड़ लोगों के पास लाइफ इंश्योरेंस है और केवल 19 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिनके पास Accidental Death Insurance का कवर है। केवल 6 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिनके पास Organized Pension Scheme का कवर है। इसके अलावा बीपीएल केटेगरी में तीन करोड़, विधवा हों या वरिष्ठ नागरिक हों, उनके लिए 300 रुपए से लेकर 1500 रुपए तक आज पेंशन की व्यवस्था है। अपने आप में इतने बड़े देश में यह व्यवस्था बहुत सामान्य है। हम एक बहुत बड़ी समस्या का समाधान करने के लिए एक बहुत बड़ा कदम उठाने का प्रयास कर रहे हैं। मैं मानता हूं कि 'प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना' के तहत, 'प्रधान मंत्री जीवन ज्योति योजना' के तहत और 'अटल पेंशन योजना' के तहत हम समाज के सभी वर्गों को स्पर्श करने के लिए प्रयास कर रहे हैं। हम बड़ी आसान सी व्यवस्थाएं करना चाहते हैं। 18 से 70 वर्ष की आयु के लोगों के लिए प्रति मास सिर्फ एक रुपया देने पर इस योजना के द्वारा दो लाख रुपए का Accidental Death Cover बीमा होगा। मैं समझता हूं कि हमारे देश में जिस प्रकार की व्यवस्था है, उसमें यह गरीब से गरीब व्यक्ति की चिंता करने का प्रयास है। प्रधान मंत्री जीवन ज्योति योजना के तहत साल भर के 330 रुपए, यानी प्रतिदिन ज्यादा से ज्यादा 1 रुपया, और वह भी 18 से 50 साल की उम्र के लोगों के लिए है, जिसमें कोई मेडिकल टैस्ट कराए बिना उसका इंश्योरेंस होगा। अगर स्वाभाविक क्रम में भी उसकी मृत्यु हो जाए तो भी उसके परिवार को 2 लाख रुपए का बीमा उपलब्ध होगा। 'अटल पेंशन योजना' के तहत पेंशन राशि के विकल्प में किसी को अगर साठ साल के बाद एक हजार रुपए पेंशन चाहिए, दो हजार चाहिए, तीन हजार चाहिए या पांच हजार चाहिए, जितनी पेंशन चाहिए, उसके हिसाब से यह योजना काम करेगी। अगर कोई 20 साल का युवक इससे जुड़ता है और यदि वह 60 साल की आयु के बाद पांच हजार रुपए की पेंशन चाहता है तो उसे 60 साल की आयु तक 248 रुपया contribute करना होगा और 60 साल के बाद जीवन भर प्रति मास पांच हजार रुपए की पेंशन उसको मिलती रहेगी। अगर उसके पहले उसका स्वर्गवास हो गया तो यह पेंशन उसकी पत्नी को continue रहेगी। इतना ही नहीं, यदि दोनों नहीं रहेंगे तो बच्चों को साढ़े आठ लाख रुपया, जो उन्होंने जमा किया है, वह वापस मिलेगा। यानी हमारे देश में सोशल सिक्योरिटी के विषय में जो अवेयरनेस चाहिए...। देश जहां पहुंचा है, वहां हमारे समाज के इस

आखिरी तबके की जिंदगी के लिए एक सतोष और सुरक्षा का भाव हो, उसकी दिशा में हमने काम करने का एक प्रयास शुरू किया है। एक प्रकार से सारे देश को, हमारा किसान यह मांग रहा था कि मैं इतनी मेहनत करता हूं, बूढ़ा हो जाता हूं, बच्चे अलग कर देते हैं, मेरे पास पेंशन होती, तो इस व्यवस्था के कारण किसान को भी पैसा मिलेगा। गृहिणी है, बुढ़ापे में अगर बच्चे ने छोड़ दिया, घर में बच्चे नहीं हैं, परेशानी है, तो पेंशन स्कीम से उसको लाभ मिलेगा।

हमने एक नया प्रयास "गोल्ड बांड" का किया है। हम देखते हैं कि देश आज़ाद हुआ, लेकिन अभी भी हमारे "गोल्ड" का हॉलमार्क किसी न किसी विदेशी हॉलमार्क से चलता है। यह मन को चुभता है कि हमारे देश के हॉलमार्क का क्या "गोल्ड" नहीं होना चाहिए? इसीलिए अब coin होगा, गिन्नी होगी, बिस्कुट होगा, अशोक चक्र के Emblem के साथ और उसकी दुनिया में भी पहुंच होनी चाहिए, उस दिशा में हम आगे बढ़ना चाहते हैं। कभी-कभी कुछ चीजें होती हैं जो स्वाभिमान से जुड़ जाती हैं, उनके कारण बहुत बड़ी ताकत खड़ी हो जाती है। हम sovereign gold bond की बात करते हैं। आज हमारे यहां 20 हजार टन सोने की बात होती है। अब हमारे आनन्द शर्मा जी फिर खड़े हो जाएंगे। वे कहेंगे कि मोदी ने 20 हजार टन कहा था, दिखाएं। मैं कहता हूं कि ऐसा कहा जाता है। ...(**व्यवधान**)...ऐसा कहा जाता है।

श्री आनन्द शर्मा : प्रधान मंत्री जी, एक मिनट। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please. He is not yielding. आनन्द जी, आप बैठ जाइए। Please. ...*(Interruptions)*... No interventions, please. ...*(Interruptions)*... Please do not intervene. ...*(Interruptions)*.. No, no, he is not conceding. ...*(Interruptions)*... He is not conceding. Please. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदी: आज हम सोने को ...(**व्यवधान**)...

श्री आनन्द शर्मा: प्रधान मंत्री जी, मैं तो कुछ और कह रहा हूं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: I am sorry. ...*(Interruptions)*... He is not conceding. ...*(Interruptions)*... Please resume your place. ...*(Interruptions)*... Please resume your place. He is not conceding. ...*(Interruptions)*... No, no, he is not conceding. ...*(Interruptions)*... Please sit down. Sharma Saheb, please don't do it. ...*(Interruptions)*... He is not conceding. Please sit down. Please.

श्री नरेन्द्र मोदी : आज गोल्ड इतनी बड़ी मात्रा में एक प्रकार से वह डेड मनी की अवस्था में पड़ा है। वह अगर सर्कुलेशन में आता है, तो देश की इकोनॉमी को एक बड़ा ड्राइव मिलता है। इसलिए हम चाहते हैं, पहले नियम था कि आधे किलो से कम नहीं, अब हम कोई नियम नहीं रखना चाहते हैं, थोड़ा-सा भी हो, उसे रखो, पैसे लो और अपनी गाड़ी आगे बढ़ाओ। मैं समझता हूं कि इसके कारण

[श्री नरेन्द्र मोदी]
बहुत बड़ी मात्रा में, यह जो डेड मनी एक प्रकार से गोल्ड के रूप में पड़ा है, इससे इकोनॉमी को एक बहुत बड़ा बूस्ट मिलेगा। इसी प्रकार से हम " sovereign gold bond" के लिए आगे बढ़ना चाहते हैं। जरूरी नहीं कि आप मेटल्स प्रत्यक्ष लें। आप कागज के रूप में भी गोल्ड ले सकते हैं। आप जब कागज वापस देंगे, तो उस समय का जितना गोल्ड होता होगा, वह आपको मिल जाएगा। एक प्रकार से इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट का जो हमारा imbalance रहता है, उसको भी balance करने के लिए एक प्रयास होगा। यह एक ऐसी योजना है जिसके कारण मैं समझता हूं कि काफी लाभ होगा।

एक बात निश्चित है कि देश में अच्छी स्थिति लाने के लिए अच्छी नीति की भी जरूरत है और अच्छी रीति की भी जरूरत है। अकेली नीतियों से परिणाम नहीं आएगा इसलिए नीति और रीति का combination चाहिए, नीति और रीति की पटरी पर ही विकास की गाड़ी आगे बढ़ सकती है। इसलिए हमारी कोशिश यह है कि हम अपनी ऐसी कार्यशैली को विकसित करना चाहते हैं, जिस कार्यशैली के द्वारा हम आगे बढ़ना चाहते हैं।

श्रीमन्, यहां पर गुलाम नबी आज़ाद जी ने भी और आनन्द शर्मा जी ने भी अफसरों के तबादलों को लेकर बड़ी पीड़ा व्यक्त की और मैं देख रहा हूं कि जैसे पानी में चूना सूखता है वैसे ये लोग सूख रहे हैं। इनको इतना दर्द हो रहा है कि ट्रांसफर हो गए। मैं जरा कहना चाहता हूं कि उपदेश देने से पहले जरा हम भी आईने में अपने आपको देख लें। वर्ष 2004 में आपकी सरकार बनी थी, 2004 में सरकार बनते ही, आपने एक पल के विलम्ब बिना केबिनेट सेक्रेटरी को हटा दिया था। आपकी 2004 में सरकार बनी थी, आपने सीनियरिटी को छोड़कर के फॉरेन सेक्रेटरी की नियुक्ति की थी। 2004 में आपकी सरकार बनी थी, आपने पल भर में होम सेक्रेटरी को निकाल दिया था। 2004 में आपकी सरकार बनी थी, आपने महत्वपूर्ण डिफेंस सेक्रेटरी को पल भर में निकाल दिया था। इतना ही नहीं आपने गवर्नर्स को अंधेरे में रख करके अपमानित करके निकाल दिया था, लेकिन हमने यह काम नहीं किया।

गुलाम नबी जी, आप तो Health Minister थे। आपके समय में जब आपके ही विभाग का एक सेक्रेटरी पोलियो के लिए यूएन का सम्मान प्राप्त कर रहा था, जब उसके एक हाथ में यूएन का सम्मान दिया जा रहा था, तब दूसरे हाथ से आपने उसको निकाल दिया था। इसलिए हम क्या-क्या बातें खोलना चाहते हैं, पहले यह तय करें। मैं नया हूं, लेकिन मेरे पास खजाना बहुत बड़ा है। हम किस दिशा में जाना चाहते हैं, किसमें नहीं जाना चाहते हैं, पहले हम वह तय करें, इसीलिए हम यह कहते हैं कि हमारी यह कोशिश है, good governance हमारा प्रयास है।

यहां पर एक बात और भी आई है, कुछ तो हमारे समर्थकों के मुंह से आई है, कुछ हमारे प्रति अच्छा भाव रखने वाले लोगों की तरफ से आई है और कुछ हमसे विशेष प्रेम करने वाले लोगों की तरफ से भी आई है। मुझे तो विशेष प्रेम करने वालों का बहुत प्रेम मिला है। हमारे लिए कहा जाता है कि जमीन पर कुछ नजर नहीं आ रहा है, मोदी जी बातें तो बहुत अच्छी करते हैं, सोचते तो बहुत अच्छा हैं, लेकिन जमीन पर कुछ नजर नहीं आता है।

मैं अपने साथियों से कहना चाहता हूं, लम्बे अरसे तक आप सत्ता में रहे हैं। सत्ता का एक नशा होता है। भगवान करे कि हम उस नशे से बच जाएं, लेकिन जब सत्ता का नशा होता है, तब सिर काफी ऊँचा रहता है, जब सिर ऊँचा रहता है, तो झुकने की आदत छूट जाती है और जब झुकने की आदत छूट जाती है, तब जमीन दिखती ही नहीं है, लेकिन जितना झुकोगे, उतना ही जुड़ोगे। जो जमीन की बात पूछना चाहते हैं, उनको मैं बताना चाहता हूं कि काम कैसे होता है। रेलवेज़ सरकार की है और हाईवेज़ भी सरकार की है, लेकिन दोनों के बीच इतना टकराव चलता था कि हाईवेज़ के 350 से अधिक प्रोजेक्ट्स ऐसे थे, जिन्हें या तो रेलवेज़ मंजूर नहीं करती थी अथवा रेलवेज के प्रोजेक्ट्स को हाईवेज़ मंजूर नहीं करती थी। किसी को रोड क्रॉस करके रेल ले जानी है और किसी को रेल क्रॉस करके ओवर ब्रिज बनाना है, इस तरह कई सालों से ये 350 प्रोजेक्ट्स बीच में लटके हुए थे। जब हम आए, हमारे ध्यान में यह बात आई, हमने दोनों डिपार्टमेंट्स को एक साथ बैठाया, silo को खत्म किया, दोनों के बीच एमओयू करवाया और आज मुझे खुशी है कि इसका online portal बना दिया गया है, जिसमें online clearance दी जाती है। इससे दोनों डिपार्टमेंट्स में सालों से अटके हुए सारे के सारे, 350 प्रोजेक्ट्स क्लीयर हो गए हैं, साथ ही आगे अगर कोई भी प्रपोज़ल आएगा, उसको 60 दिनों के अन्दर क्लीयर करना तय कर दिया गया है। जो काम अभी प्रोसेस में है, उसमें सिर्फ 22 प्रोजेक्ट्स ऐसे हैं, जो प्रोसेस में हैं। यह है 'good governance', यह है - 'काम होना'।

आप देखिए, अब मैं जरा आपको हिसाब देता हूं कि जमीन पर कैसे काम होता है। मैं यूपीए के समय की बात करता हूं, उस समय per day 7.4 किलोमीटर्स हाईवे के एवार्ड होते थे और 5.2 किलोमीटर्स per day एचीव होता था। आनन्द जी, यह मैं हमारे 9 महीनों का हिसाब दे रहा हूं। हम per day 18 किलोमीटर्स का एवार्ड देते हैं और अब तक का रिकॉर्ड है, 10.1 किलोमीटर्स per day एचीव करते हैं, जो उस समय से डबल है। काम कैसे चलता है, सरकार जमीन पर कैसे दौड़ती है, यह मैं आपको उसकी बात बता रहा हूं।

रेलवेज़ में, UPA के समय में, 2013-14 में न्यू लाइन 319 किलोमीटर्स बनाई गई और NDA-II के 2014-15 के केवल 9 महीनों के समय में न्यू लाइन 410 किलोमीटर्स बनाई गई। 2013-14 में गेज कन्वर्जन का काम 585 किलोमीटर्स हुआ और 2014-15 के हमारे 9 महीनों के समय में 700 किलोमीटर्स हुआ। यूपीए के 2013-14 के समय में डब्लिंग का काम 675 किलोमीटर्स हुआ और हमारे 2014-15 के 9 महीनों के समय में 810 किलोमीटर्स हुआ। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर हम जमीन के साथ जुड़ें तो जमीन पर क्या चल रहा है, यह अपने आप पता चलने लग जाएगा, यह मुझे पूरा विश्वास है। सर, एक 'आदर्श ग्राम योजना' है। मुझे खास करके कुछ माननीय सांसदों का आभार भी व्यक्त करना है, उनका अभिनन्दन करना है। करीब 660 सांसदों ने इस काम को आगे बढ़ाया है और बड़े मनोयोग से आगे बढ़ाया है। कुछ लोगों की जो मुझे जानकारी है, ऐसे ही मुझे उसका उल्लेख करना अच्छा लगता है। मैं खास करके आदरणीय मोती लाल वोरा जी की बात करना चाहूँगा। उन्होंने छत्तीसगढ़ के मोहाली गाँव में बहुत बढ़िया काम किया है। उन्होंने सभी राशन कार्ड धारकों को 'जन-धन' के अकाउंट खुलवा दिए और उन्होंने खुद इंटरेस्ट लिया, उनको आधार कार्ड से जोड़ दिया

[श्री नरेन्द्र मोदी]

तथा सरकारी वितरण की दुकान की निगरानी और चौकसी कमेटियों का निर्माण किया है, ताकि पीडीएस सिस्टम का लाभ गरीब से गरीब को भी मिले। आदरणीय मोती लाल वोरा जी ने इस काम को लागू किया। यानी इस प्रकार से हमारे आदरणीय सांसद रुचि लें, तो एक नया माडल गाँवों के लिए विकसित हो रहा है। मेरे पास कई लोगों की जानकारी है। मैंने देखा कि हमारे पार्लियामेंट में श्री कामाख्या प्रसाद जोरहाट से सांसद हैं, उन्होंने 'आईसीडीएस' और 'मिड डे मील' की निगरानी के लिए काफी परफेक्ट व्यवस्था बनायी है, ताकि बच्चों को अच्छा खाना मिले। श्री अशोक जी हमारे उड्डयन मंत्री हैं। उन्होंने आन्ध्र के अन्दर एक गाँव दत्तक लिया, जहाँ लोग शराब पीते थे। उन्होंने वातावरण ऐसा बनाया कि जिसके पास शराब की दुकान का लाइसेंस था, उसने सामने होकर कह दिया कि मैं सरेंडर करता हूँ, लेकिन मैं इस गाँव को शराबमुक्त करूँगा। अगर हम लोग चाहें, तो 'आदर्श ग्राम योजना' को किस प्रकार से हम आगे बढ़ा सकते हैं, मैं समझता हूँ कि इसमें सबका सहयोग रहेगा, तो यह काम आगे बढ़ेगा।

लेबर के सम्बन्ध में आपको मालूम होगा कि कई वर्षों से हमारे मजदूरों ने जो पसीना बहाया है, उनके करीब 27 हजार करोड़ रुपये सरकारी खजाने में पड़े हैं। यह अमाउंट छोटा नहीं है, लेकिन उसको कोई लेने वाला ही नहीं है। क्यों? किसी के 50 रुपये हैं, किसी के 100 रुपये हैं, तो किसी के 200 रुपये हैं और वह बेचारा पहले एक जगह पर मजदूरी करता था, अब दूसरी जगह पर चला गया। तो वापस आकर अपने 50-100 रुपये लेने के लिए वहाँ जाना, उससे भी ज्यादा वहाँ जाने का खर्चा होता है। इसी के कारण कुछ लोगों का स्वर्गवास हो गया। कोई हिसाब-किताब नहीं है। सरकारी खजाने में मजदूरों के 27 हजार करोड़ रुपये पड़े हैं। हमने एक योजना बनाने की कोशिश की है- Universal Account Number (UAN). इस Universal Account Number के द्वारा कोई मजदूर कहीं पर भी जायेगा, इस अकाउंट नम्बर के साथ उसका जो भी मनी होगा, वह वहाँ ट्रांस्फर हो जायेगा। इसके कारण यदि उन 27 हजार करोड़ रुपये में भी उसका कोई पुराना हिसाब पड़ा होगा, वह भी उसमें चला जायेगा। यह गरीब के हक का पैसा है और सरकार इसे कहीं और नहीं लगाना चाहती। हम उन पैसों को वापस करना चाहते हैं। मैं समझता हूँ कि यह काम, धरती पर एक अच्छा काम इसके द्वारा हुआ है। मैं मानता हूँ कि इसका लाभ जरूर मिलेगा।

'प्रधान मंत्री जन-धन योजना' की बहुत बातें हुई हैं। मैं उसके लिए आपका और अधिक समय लेना नहीं चाहता हूँ। यहाँ पर एक चर्चा फर्टिलाइजर के सम्बन्ध में आई। आप जानते हैं कि पिछली बार यूरिया जो 112 लाख टन था, इस बार 117 लाख टन यूरिया खाद की बिक्री आलरेडी हो चुकी है और इसलिए उसमें भी पीछे रहने का कोई कारण नहीं है।

हम बार-बार 'मनरेगा' की चर्चा करते हैं। मैंने उस सदन में जो कहा है, मैं उसको रिपीट नहीं करता हूँ, क्योंकि वह बहुत अच्छी तरह रजिस्टर हो गया है, बात पहुँच गयी है। अब देखिए, मैं थोड़ा आधार कार्ड, जिसकी चर्चा होती है और मनरेगा की बात कहूँगा। मुझे कम्पेरिज़न आलोचना करने के लिए नहीं करना है, लेकिन मुझमें यह कहने की हिम्मत है और मेरे संस्कार भी हैं कि पुरानी सब

सरकारों का कोई न कोई योगदान है, तभी तो देश यहाँ पहुँचा है। हो सकता है कि जहाँ इसे पहुँचना चाहिए, वहाँ पहुँचने में रुकावटें आई होंगी, उसमें भी योगदान होगा। लेकिन यह आधार कार्ड, जिसकी चर्चा होती है, यूपीए के 45 महीने में यानी करीब साढ़े तीन साल में 7 करोड़ "आधार" आधारित हस्तांतरण हुए थे, एनडीए के नौ महीने में 17 करोड़ हो गए हैं। कहां 45 महीने और कहां 9 महीने! यूपीए के 45 महीने में 5 हजार आधार नंबर से लिंक "मनरेगा" भुगतान किए गए थे, एनडीए के नौ महीने में 8 लाख उसके साथ जोड़ दिए गए। कहां 45 महीने का 5 हजार और कहां 9 महीने का 8 लाख! यूपीए के 45 महीनों में 1.7 करोड़ "आधार" जॉब कार्ड के साथ जोड़े गए थे, हमने नौ महीने में यह काम 5 करोड़ लोगों तक पहुंचाया। कहां 1.7 करोड़ और कहां 5 करोड़! और इसलिए कभी-कभार धरती पर--- मैंने कहा, नीति और रीति, दोनों की पटरी पर ही विकास होगा।

हम "मनरेगा" की बात करते हैं, हमने 100 दिन रोजगार की गारंटी की बात कही है, गरीब परिवार को कही है। गरीब परिवारों को 100 दिन रोजगार के अधिकार के संबंध में 2013-14 में एवरेज़ 42.5 दिन ही रोजगार मिला है यानी 50 परसेंट भी नहीं पहुंचे हैं। 2013-14 में 100 दिन की रोजगारी कितनों को मिली? केवल 6.35 परसेंट। और सबसे बड़ी बात यह है कि जब यह विषय यानी "मनरेगा" का विषय सुप्रीम कोर्ट में आया, तो यूपीए ने यह स्वीकार किया है कि "मनरेगा" में 5 साल में जो एक लाख करोड़ रुपए खर्च किये गये, हमारे पास उसकी कोई ऑडिट रिपोर्ट नहीं है। यह सुप्रीम कोर्ट में दायर की गई आपकी एफिडेविट है। अब मुझे बताइए कि योजनाओं, उसकी चर्चा, वाहवाही, नियम-कानून बनें, ये सब कुछ ठीक हैं। देश को आवश्यकता है, जो भी अच्छा है, उसको हम धरती पर उतारें, गरीब के घर तक पहुंचाएं। सामान्य से सामान्य व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाने का प्रयास करें और आप देखेंगे, नौ महीने में आप देखेंगे कि सरकार का प्रयास उस दिशा में है।

यहां पर आदरणीय मायावती जी ने बुन्देलखंड की चर्चा की थी। बुन्देलखंड के दो हिस्से हैं, मध्य प्रदेश में भी है और उत्तर प्रदेश में भी है। मध्य प्रदेश के छः जिलों के लिए 3,760 करोड़ रुपए दिए गए थे, उत्तर प्रदेश के सात जिलों के लिए 3,506 करोड़ रुपए दिए गए थे। मध्य प्रदेश में 96 परसेंट अमाउंट खर्च की गई। उसका यानी बुन्देलखंड का मध्य प्रदेश के हिस्से का परिणाम क्या आया? उसका परिणाम यह आया कि गेहूं के उत्पादन में 1629 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर से 2323 किलोग्राम तक वह गेहूं उत्पादन को ले गए। सिंचाई में इन पैसों से उन्होंने 1 लाख 42 हजार हेक्टेयर जमीन को सिंचाई के अंदर जोड़ा। वहां दूध उत्पादन 9 लाख टन था, जिसको वे 12 लाख टन तक ले गए। उन्होंने 561 मिल्क कॉपरेटिव सोसाइटियों को प्रारंभ किया। पेयजल आपूर्ति में 40 लीटर प्रति व्यक्ति से 55 लीटर तक वह पहुंचा कर ले गए।

अब आप उत्तर प्रदेश की हैं, तो मैं कहना नहीं चाहता हूँ कि वहां क्या हुआ है, उसकी रिपोर्ट मैं नहीं देता हूँ, लेकिन आपने जो चिंता व्यक्त की है, हो सकता है कि उसमें सच्चाई हो और आपका दर्द सही हो, लेकिन मध्य प्रदेश जहां दूसरा पार्ट था, उसकी जानकारी मैंने आपको दी है।

यहां पर पश्चिमी बंगाल की भी चर्चा हुई। जो लोग एक बहुत बड़ी वैश्विक विचारधारा ले करके,

[श्री नरेन्द्र मोदी]

इम्पोर्टेड आइडियाज़ ले करके देश चलाने की कोशिश करना चाहते हैं, 30 साल तक पश्चिमी बंगाल में उनको राज करने का अवसर मिला। आज जो स्थिति है, इसके लिए देरेक, मैं आपको दोष नहीं देता। आप बाकी जो करना हो करें, क्योंकि आपकी सी.आर. ठीक रहनी चाहिए। पश्चिमी बंगाल, जो कभी हिन्दुस्तान में औद्योगिक ऐक्टिविटी का कैपिटल हुआ करता था और कोलकाता की पहचान देश की औद्योगिक राजधानी के रूप में थी, वह पूरा का पूरा 30 वर्षों में नष्ट हो गया। पश्चिमी बंगाल कृषि विकास में बहुत तेज गति से बढ़ने वालों में से था, पर 30 साल में वह काफी माइनस तक पहुँच गया। इंडस्ट्रियल आउटपुट में बंगाल का हिस्सा 1980 में 10 परसेंट था, जो 4 परसेंट पर आ गया। 1976-77 में कुल फैक्ट्रियों में से 7.6 प्रतिशत बगाल में थीं, जो 2008-09 में सिर्फ 4 प्रतिशत रह गई। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी (पश्चिमी बंगाल)ः सर, ये गलत बोल रहे हैं।...(**व्यवधान**)...

SHRI T.K. RANGARAJAN : Hon. Prime Minister should not...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: No, no. ...*(Interruptions)*... Resume your place. ...*(Interruptions)*... Do not intervene. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदीः वर्ष 1966 to 1976 में पश्चिमी बंगाल की ऐग्रीकल्चर ग्रोथ में 17.3 परसेंट की वृद्धि हुई थी, जो 2001-07 में 7.8 प्रतिशत रह गई। 2007 में नेशनल सैम्पल सर्वे (एनएसएस) की रिपोर्ट में पाया गया कि स्टारवेशन की स्थिति पश्चिमी बंगाल में सबसे ज्यादा थी। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरीः सर, यह गलत बता रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: He is not conceding. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदीः 60 परसेंट स्कूलों में बालिकाओं के लिए functional toilets हैं, जबकि इसका national average 75 परसेंट है। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरीः सर, ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please resume your place. ...*(Interruptions)*... Do not intervene. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदीः सीताराम जी ने कल एक बात कही। उन्होंने कहा कि चेन्नई में नोकिया का जो कारखाना है, वह बंद हो गया। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: He is not conceding. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदीः आपको मौका मिलेगा। ...(**व्यवधान**)...मौका मिलेगा। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरीः सर, ये गलत आँकड़े दे रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Yechuryji, please. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदीः हमारे देश में जॉब क्रिएशन की आवश्यकता है। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरीः सर, ये सब गलत आँकड़े दिए जा रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please don't do this. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदीः जॉब क्रिएशन की दिशा में हम जितना आगे बढ़ सकें ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरीः सर, ये क्या बोल रहे हैं? ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please resume your seat. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदीः अगर हमें जॉब क्रिएशन में आगे बढ़ना है, तो हमें "मेक इन इंडिया" के मंत्र को आगे बढ़ाना पड़ेगा। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरीः प्रधान मंत्री होने के नाते आप गलत आँकड़े नहीं दे सकते। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: You know the procedure. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदीः इंफ्रास्ट्रक्चर को आगे बढ़ाना पड़ेगा। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरीः सर, प्रधान मंत्री होने के नाते ये गलत आँकड़े नहीं दे सकते। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please sit down. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदीः इंफ्रास्ट्रक्चर जितनी तेज गति से आगे बढ़ेगा, रोजगार की संभावनाएँ बढ़ेंगी। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरीः सर, यह मामला प्रिविलेज़ का होगा। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please resume your place. ...*(Interruptions)*... You know the procedure. ...*(Interruptions)*... बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)...

श्री नरेन्द्र मोदीः रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए हमें इंफ्रास्ट्रक्चर पर बल देना चाहिए। ...(**व्यवधान**)...

[श्री नरेन्द्र मोदी]

कल श्रीमान् सीताराम जी ने चेन्नई में नोकिया की जो फैक्टरी बंद हो गई, उसके बारे में चिन्ता व्यक्त की थी। ...(**व्यवधान**)...25 हजार लोगों की जॉब चली गई, उसकी चिन्ता इन्होंने व्यक्त की थी। ...(**व्यवधान**)... पिछली बार इन्होंने जो चिन्ता व्यक्त की थी, उस पर मैं कहना चाहता हूँ कि नोकिया की जो फैक्टरी बंद हो गई है, वह इस सरकार के कारण बंद नहीं हुई है, बल्कि पिछली सरकार के कामों का वह परिणाम हुआ है। आपकी चिन्ता सही है, वहाँ 25 हजार लोग बेरोजगार हो गए हैं, लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमने इस दिशा में प्रयास शुरू किया है और उस प्रयास का यह परिणाम होगा कि आने वाले दिनों में नोकिया फिर से शुरू होगी और लोगों को रोजगार मिलेगा। हम जानते हैं कि रोजगार के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर पर बल देना होगा और इस दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं, कोशिश कर रहे हैं।

राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में "डिजिटल इंडिया" की बात कही है। आदरणीय सभापति जी, यह बात सही है कि किसी समय haves and have-nots की एक थ्योरी दुनिया में चलती थी। मैं समझता हूँ कि आने वाले दिनों में digital divide भी गरीबी और पिछड़ेपन का एक कारण बन सकता है। इसलिए देश में कभी भी digital divide की स्थिति पैदा नहीं होनी चाहिए। यह digital divide की स्थिति पैदा न हो और आज जो नया वर्ल्ड क्रिएट हुआ है, उसमें गरीब से गरीब व्यक्ति का भी -- भारत के पास आज करीब 90 करोड़ से ज्यादा मोबाइल फोन्स हैं, जो देखते ही देखते 100 करोड़ तक पहुँच जाएँगे। हम मोबाइल गवर्नेंस की ओर जाना चाहते हैं। गरीब से गरीब व्यक्ति को भी मोबाइल पर इसकी व्यवस्था कैसे मिले और उसके लिए उसी प्रकार से डिजिटल इंडिया की जब बात करते हैं तो नॉर्थ-ईस्ट में जहां के नौजवान अंग्रेजी अच्छी तरह बोल सकते हैं, अंग्रेजी भाषा में पढ़े-लिखे हैं क्या हमारे बी0पी0ओ0 सेंटर हैदराबाद, बेंगलुरु, मुम्बई, चेन्नई और अहमदाबाद ही चलने चाहिए या हमारे नॉर्थ-ईस्ट के इन नौजवानों के पास भी जाने चाहिए? हमारी कोशिश यह है कि उस दिशा में हम जाएं, ताकि हमारे नौजवानों के लिए भी हम रोजगार की व्यवस्था करें।

ब्लैक मनी के संबंध में सभी ने चिंता जताई है। यही एक विषय है जो कुछ समय पहले कोई छूने को तैयार नहीं था, बोलने को तैयार नहीं था। हम ही बोलते रहते थे और उस समय अनेक प्रकार के आंकड़े आते थे। मैं मानता हूं कि जिस समय 2011 में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि एस0आई0टी0 बनाओ, अगर उसी समय एस0आई0टी0 बना देते, उसी समय कार्यवाही शुरू करते तो जो सपना हम देख रहे थे कि इतने रुपए आते और इतने रुपए जाते, यह संभव होता। लेकिन उस समय इसलिए एस0आई0टी0 नहीं बनाई गई कि किसी को बचाने का इंटरेस्ट था। अगर उस समय एस0आई0टी0 बन जाती और उस समय प्रक्रिया हुई होती तो रुपया आने-जाने का जो समय मिला है, वह समय नहीं मिल पाता। मैं मानता हूं कि अभी भी देश में एक-एक पाई वापस लानी चाहिए। काले धन के लिए आवश्यक जो भी कानूनी व्यवस्था करनी चाहिए, वह हम करते हैं। इतना ही नहीं, जी-20 सम्मिट की बात हो, स्विटजरलैंड के साथ डॉयलोग की बात हो, अमेरिका के साथ एम0ओ0यू0 करने की बात हो, दुनिया के देशों के साथ इंफार्मेशन एक्सचेंज के लिए हम एम0ओ0यू0 करते चले जा रहे हैं, एक के बाद

5.00 P.M.

एक नए देश जुड़ रहे हैं। कभी इंफार्मेशन के बिना लड़ाई नहीं लड़ पाएंगे। दूसरी तरफ, भारत के नागरिकों को विदेश में उनकी कोई भी सम्पत्ति हो, धन हो, उसकी जानकारी देने के लिए कानूनी बंधन अब शुरु हो जाएगा और इसलिए चीजें प्रकट होंगी और उसी में से देश का काला धन वापस लाने का हमारा संकल्प है, उस प्रक्रिया को हम पूरा करेंगे और हमें करना चाहिए।

यहां पर हमारे सभी आदरणीय सदस्यों ने भूमि अधिग्रहण अध्यादेश की चिंता की है। यह एक वरिष्ठजनों का सदन है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस प्रावधान में किसानों के खिलाफ कोई भी बात हो, मैंने डे-वन से कहा है कि हम करेक्ट करने के लिए तैयार हैं। लेकिन जो हुआ है उसमें कमियां हैं, क्योंकि वह करने वालों में हम भी थे। हम मना नहीं करते कि हमने नहीं किया है। अगर अच्छा है तो हमें क्रेडिट मत दो लेकिन पाप है तो कुछ पाप की भागीदारी हमारी भी है। लेकिन अब हमें उसमें से बाहर आना चाहिए, देशहित के लिए आना चाहिए, विकास के लिए आना चाहिए और मैं इसको अहंकार का और राजनीति का पहलू नहीं बनाना चाहता हूं। प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना को सफल करना होगा, किसानों को पानी पहुंचाना होगा, तो इरिगेशन के लिए जमीन लगेगी। हमें ग्राम सड़क बनानी होगी तो जमीन लगेगी। हमें रूरल हाउसिंग करना है, गरीबों के लिए घर बनाना है तो जमीन लगेगी। और यह जमीन मिलने का प्रावधान वर्तमान कानून में नहीं है। इसलिए दूसरा, मेहरबानी करके एक अपप्रचार हम न फैलाएं कि कंपनसेशन कम होने वाला है। कंपनसेशन के विषय को जरा भी हाथ किसी ने नहीं लगाया और न ही लगने वाला है। जितना कंपनसेशन तय हुआ है वही होगा और इसलिए कृपा करके हम यह न करें। लेकिन कानून यहां बना 2013 में, हुआ क्या?

2014 की जनवरी में लागू हुआ। हरियाणा में जुलाई महीने में जब कि वहां कांग्रेस की सरकार थी, उसने इसी कानून के ऊपर रूल्स बनाए, उन रूल्स के अनुसार उन्होंने यह compensation देने से मना कर दिया। इतना ही नहीं, महाराष्ट्र में कांग्रेस की सरकार थी, लेकिन कानून बनाया हमने। इस का मतलब यह हुआ कि राज्यों के लिए इस कानून के तहत काम करना मुश्किल है। मैं कांग्रेस या बीजेपी की बात नहीं कर रहा हूं, उनको मुश्किल हो रही है। इसलिए सभी राज्यों ने अपनी व्यथा व्यक्त की और यह तो काउंसिल ऑफ स्टेट है। राज्यों के दायित्वों की रक्षा करना आपका भी दायित्व है और इस सदन की यह पहली जिम्मेदारी है कि राज्यों ने जो भावनाएं व्यक्त की हैं कि हम पर यह कानून बोझ बन गया है, हमारी कठिनाइयां दूर करें, इस नए कानून से राज्यों की आशा, आकांक्षा के अनुसार परिवतन लाने का प्रयास किया गया है। कानून रहेगा, लेकिन हमें कमियां दूर करनी हैं। उसमें भी कोई कमी है, वह भी दूर करनी है और मैं आपको निमंत्रित करता हूं कि आप आइए, सहयोग कीजिए और हम सब मिलकर हमारे देश की विकास यात्रा को आगे बढ़ाएं। हम कितने ही बुद्धिमान क्यों न हों, लेकिन जिस कानून ने 1894 से 2014 तक यानी 120 साल तक देश का विकास किया, किसान की सेवा भी की, वह अचानक रातों-रात बेकार हो जाता है, ऐसा नहीं है। हमें अपने देश के किसानों की चिंता करनी चाहिए, उनको पूरी तरह सुरक्षा मिलनी चाहिए, उन्हें protection मिलना चाहिए और हम सब को मिलकर उस दिशा में आगे बढ़ना चाहिए, यह मेरा आप सभी से आग्रह है।

[श्री नरेन्द्र मोदी]

महोदय, एक दूसरा भ्रम फैलाया जा रहा है। वह शायद आपकी गलत information के कारण हो, आपका इरादा भले ही गलत न हो, लेकिन हम ऐसा न करें। महोदय, खाद्य सुरक्षा के संबंध में जो 67 परसेंट गरीब लोगों का कवरेज है, उसमें से कुछ भी कम करने का सरकार का निर्णय नहीं है। कोई कहता है 67 परसेंट का 40 परसेंट हो जाने वाला है, मैं मानता हूं कि ऐसा कुछ नहीं है और कृपा कर के इस प्रकार के भ्रम न फैलाए जाएं। यह जो devolution हुआ है ...**(व्यवधान)**...

श्री सीताराम येचुरी : शांताकुमार साहब की रिपोर्ट है।

श्री नरेन्द्र मोदी : उनको फूड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की रिस्ट्रक्चरिंग का काम दिया गया था। ...**(व्यवधान)**... देखिए, पचासों प्रकार की रिपोर्ट्स सरकार के पास आती हैं। आप भी देते हैं, लेकिन रिपोर्ट के आधार पर यह सब नहीं होता है, सरकार अपना निर्णय देती है। मैं आपको सरकार का निर्णय बताता हूं और मैं मानता हूं कि आप सरकार के निर्णय से जुड़े हुए लोग हैं। दूसरी बात, इस नए 42 परसेंट devolution के कारण पश्चिम बंगाल को 22000 करोड़ रुपए ज्यादा मिलेंगे, आंध्र प्रदेश को 15000 करोड़ रुपए ज्यादा मिलेंगे, ओडिशा को 8000 करोड़ रुपए ज्यादा मिलेंगे। उसी के साथ-साथ ..**(व्यवधान)**.. मैं सारा बता सकता हूं, लेकिन अभी मेरे पास तीन के ही आंकड़े हैं। वह सारा बजट स्पीच में है। उसमें तेलंगाना भी आ जाएगा। सब को 42 परसेंट मिल रहा है। अब सब से बड़ी बात खनिज की रॉयल्टी ...**(व्यवधान)**...

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): With due respect to the hon. Prime Minister...

MR. CHAIRMAN: Mr. O'Brien, please. He is not conceding. You know the procedure.

SHRI DEREK O'BRIEN: With due respect to the hon. Prime Minister, Sir, this is misleading. These are not the right figures.

श्री नरेन्द्र मोदी : खनिज की रॉयल्टी डेढ़ गुना बढ़ा दी गयी है, जो ज्यादातर पूर्व के राज्यों को मिलने वाली है। इतना ही नहीं जो कोल ऑक्शन हुआ है ...**(व्यवधान)**...

MR. CHAIRMAN: Please, resume your place.

श्री नरेन्द्र मोदी : उसका जो पैसा आने वाला है, वह भी स्टेट्स के पास जाने वाला है। अब तक 18 कोल माइंस का ऑक्शन हुआ है और 1 लाख से ज्यादा रकम उससे निकली है। यह रुपया भी इन राज्यों के पास जाने वाला है। आज जो हिसाब बैठता है, उसके अनुसार टोटल अमाउंट का 62 परसेंट राज्यों के पास होगा और सिर्फ 38 परसेंट केन्द्र के पास होगा। यह एक पूरी ऐसी स्थिति बन रही है ...**(व्यवधान)**... और इसलिए ...**(व्यवधान)**...

SHRI DEREK O'BRIEN: Sir, these figures are not right. We do not accept these figures.

MR. CHAIRMAN: Sorry. You know the procedures. ...*(Interruptions)*... He is not conceding.

SHRI DEREK O'BRIEN: These are not acceptable figures. This is misleading the House.

श्री नरेन्द्र मोदी : आप इसे वेरीफाई कर लीजिए। इतना ही नहीं, यहां पर विदेश नीति की भी चर्चा हुई है। ...(**व्यवधान**)...

श्री सुखेन्दु शेखर राय (पश्चिमी बंगाल): जो मैंने कहा है, उसे भी कंसीडर कीजिए।

श्री नरेन्द्र मोदी : यह बात सही है, वह आपको विरासत में मिला है। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : प्लीज बैठ जाइए, please, this is not your time. ...*(Interruptions)*... Please sit down. Do not intervene. ...*(Interruptions)*...

श्री अली अनवर अंसारी (बिहार) : बिहार को बंटवारे के बाद जो राशि मिलती थी, उसमें कटौती की गयी। कृपा कर के वह भी बताइए।

श्री नरेन्द्र मोदी : आज हम मान कर चलें, दुनिया की पहले की जो स्थिति थी, ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी: विरासत में क्या मिला? बताइए। ...(**व्यवधान**)..

MR. CHAIRMAN: Mr. Yechury, please. Please बैठ जाइए। ... (**व्यवधान**)... What is this? ...*(Interruptions)*... Please resume your place. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदी: आज दुनिया अलग-अलग हिस्सों में बंटी हुई है। पहले जिस प्रकार से दुनिया में खेमे थे, उन खेमों का रूप बदल गया है। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: You had your chance to speak. ... *(Interruptions)*... नहीं, नहीं। बैठ जाइए। आप बोल चुके हैं। All of you have spoken. ...*(Interruptions)*... Now, you please listen. ... *(Interruptions)* ...

SHRI SITARAM YECHURY: What are you doing Sir? How are you allowing this to go on?

श्री नरेन्द्र मोदी: भारत के हितों की सुप्रीम रक्षा, यही हमारे केन्द्र बिन्दु में है। सभी सरकारों के लिए भी यही केन्द्र बिन्दु में होता है। ...(**व्यवधान**)... उसी को लेकर दुनिया की सभी शक्तियां भारत के

[श्री नरेन्द्र मोदी]

महत्व को समझें। मैंने चुनाव के पहले भी कहा था, चुनाव के बाद भी कहा था, प्रधान मंत्री बनने के बाद भी कहा था। वैश्विक संबंधों के संबंध में हमारी सोच साफ है कि दुनिया के साथ हम अपने रिश्ते बनाना चाहते हैं, पड़ौसियों के साथ विशेष गहरे संबंध हम बनाना चाहते हैं। हमने यह भी कहा था कि हम दुनिया के साथ अपने रिश्ते बनाएंगे, दुनिया के साथ आगे मिल जुल कर आगे बढ़ेंगे, लेकिन हम आंख झुका कर जीना पसंद नहीं करेंगे। आंख दिखाकर के भी दुनिया से संबंध नहीं बनते हैं, इसलिए हमारा रास्ता है आंख मिलाकर दुनिया में भारत का स्थान बनाना। उसी दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं और आप सबको खुशी होगी। अभी अफगानिस्तान से फादर प्रेम का आतंकवादियों के कब्जे से वापस आना, यह कोई छोटी घटना नहीं है। पिछले नौ महीने में दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों में फंसे हुए ग्यारह हजार से ज्यादा हिंदुस्तानियों को वापिस लाया गया है। केरल की हमारी नर्सेज बहनों के आतंकवादियों से वापसी को लेकर सबकी सांसें अंदर हो गई थीं, उन्हें वापस लाने में हमें सफलता मिली है। इतना ही नहीं, उन्हें टिकट देकर यहां तक लाना और उनके होम स्टेट तक जाने के लिए विमान का टिकट देने तक प्रबंध इस सरकार ने किया है।

दुनिया में दूसरी एक व्यापक चर्चा जम्मू-कश्मीर को लेकर हुई है। मैं इस सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूँ और इस देश के सवा करोड़ देशवासियों को भी विश्वास दिलाना चाहता हूँ। जम्मू-कश्मीर में जो सरकार बनी है, यह कॉमन मिनिमम प्रोग्राम के आधार पर बनी है और सरकार कॉमन मिनिमम प्रोग्राम के आधार पर चलेगी। किसी के बयान से हम उसका समर्थन कतई नहीं कर सकते। आतंकवाद के संबंध में जीरो-टॉलरेन्स पॉलिसी के साथ यह सरकार आगे बढ़ेगी। कहीं कोई बयान देंगे और हम यहां पर उसके जवाब देते रहेंगे तो मैं समझता हूँ कि हम सही दिशा में नहीं जाएंगे। हमारी नीति, हमारी योजनाएं क्या हैं, उन्हीं योजनाओं को लेकर हम चल रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... मैं यह साफ करता हूँ कि कश्मीर के मतदाताओं ने न सिर्फ लोकतंत्र की आन-बान-शान को बढ़ाया है, बल्कि जो दुनिया भर में कश्मीर के बाबत भ्रम फैले हुए थे, उन सारे भ्रमों को निरस्त करने का काम सर्वाधिक मतदान करके कश्मीर के मतदाताओं ने पूरा किया है और इसलिए हिंदुस्तान जिस बात की वकालत पिछले पचास साल से कर रहा था, उस पर ठप्पा मारने का काम कश्मीर के नागरिकों ने किया है। हम उनको जितनी बधाई दें, कम है। मैं अपने कश्मीर के नागरिकों का अभिनंदन करता हूँ। हमारा भरोसा कश्मीर के नागरिकों के प्रति है। ...(**व्यवधान**)

श्री सभापतिः बैठ जाइए। Please sit down. ... *(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*...

श्री नरेन्द्र मोदीः कश्मीर के भरोसे के प्रति हम देश की एकता और अखंडता के साथ प्रतिबद्ध लोग हैं और इसलिए मैं एक बार फिर आदरणीय सभापति जी, आपके माध्यम से और इस सदन के माध्यम से संपूर्ण राष्ट्र को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि कश्मीर के लिए हिंदुस्तान के सदनों ने जो प्रस्ताव पारित किए हुए हैं, उनको लेटर एंड स्पिरिट से फॉलो किया जाएगा। उसमें कोई कंप्रोमाइज नहीं किया जाएगा। यह मैं देशवासियों को विश्वास दिलाता हूँ।

सभापति जी, मैं एक बार फिर सदन से प्रार्थना करता हूँ कि हम सब मिलकर सर्वसम्मति से राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पारित करें और मैं सबका धन्यवाद करता हूँ।...(**व्यवधान**)....

MR. CHAIRMAN: This concludes the discussion.

श्री गुलाम नबी आज़ाद : माननीय सभापति महोदय, मुझे दो चीजों का क्लैरीफिकेशन माननीय ...(**व्यवधान**)...

†شری غلام نبی آزاد : مانئی سبھاپتی مہودے، مجھے دو چیزوں کا کلیریفکیشن مانئی —(مداخلت)—

MR. CHAIRMAN: I don't think there is any....

SHRI GHULAM NABI AZAD: Why not? ...*(Interruptions)*...

श्री एम. वेंकैया नायडु: सर, प्रधान मंत्री के भाषण के बाद कोई क्लैरीफिकेशन कभी नहीं हुआ। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : आज़ाद साहब, आप बैठ जाइए। ... (**व्यवधान**)... आप बैठ जाइए।

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, I want to say something. You may have *bhashans* here. That is not allowed. ...*(Interruptions)*... You must allow us. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: This concludes the discussion on the Motion of Thanks. I shall now put... श्री आनन्द शर्मा जी, सुन लीजिए। आनन्द जी, बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)... No, no; please sit down.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir,...

MR. CHAIRMAN: You know the procedures very well. Please sit down. ...(Interruptions)... कृपया आप बैठ जाइए। ...(व्यवधान)... No more discussions on the Motion of Thanks.

SHRI SITARAM YECHURY: No, Sir. Please allow us.

MR. CHAIRMAN: I know the procedures. बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)... Please sit down. ...*(Interruptions)*... No, no; that is not the procedure. ...*(Interruptions)*... Please sit down.

†Transliteration in Urdu Script.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, the procedure is, when the Minister makes a statement, he asks the hon. Members...

MR. CHAIRMAN: We have had a full discussion and a reply has been given; that is the end of it.

SHRI SITARAM YECHURY: Of course, it is not allowed. ...*(Interruptions)*... You are the custodian of this House.

MR. CHAIRMAN: No, no;....

SHRI SITARAM YECHURY: That is not the procedure.

MR. CHAIRMAN: If you are dissatisfied with the reply, you know the procedures. But there can't be any further discussions. ...*(Interruptions)*.... No banners, please. ...*(Interruptions)*... कृपया आप बैठ जाइए। ...(व्यवधान)...आप बैठ जाइए।

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, I want to seek some clarifications.

MR. CHAIRMAN: I am sorry. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, how can you deny the LoP?

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, we have had more than 14 hours of discussion by Members of the House. A reply has been given to it. Now, we proceed with the next stage because the discussion is over.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, we have the right to seek clarifications. That is the procedure of the House. ...*(Interruptions)*...

That is the procedure of this House. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: No, no; this is not correct. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: This is not the procedure of the House. It never happened. ...*(Interruptions)*... On the President's Address' no clarifications have been given. ...*(Interruptions)*.... Please let us allow the House to function normally. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Sir,...

MR. CHAIRMAN: There will be no end to it. I shall now proceed to put the amendments which have been moved to vote. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... I am sorry, you cannot have any more discussions. ...*(Interruptions)*... आप बैठ जाइए। Please sit down. Shri Seelam, this is not correct. Shri Ramachandra Rao, I will be compelled to ask you to leave the House if you don't put down that banner. Shri Ramachandra Rao, if you display banners I will have to invoke a rule against you. Please don't compel the Chair to do it. ...*(Interruptions)*... Mr. Ramachandra Rao, please put down that banner and resume your place. ...*(Interruptions)*....

SHRI JESUDASU SEELAM: Sir, let the hon. Prime Minister speak. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: You had your turn. You said your piece. Please sit down. Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please sit down. ...*(Interruptions)*... Shri Ghulam Nabi Saheb, an hon. Member on your side is showing a banner.

श्री गुलाम नबी आज़ाद: सर, हमें भी यही करना था।

†شری غلام نبی آزاد: سر، ہمیں بھی یہی کرنا تھا۔

श्री सभापति : नहीं, प्लीज। I will be compelled to invoke a rule which I am reluctant to do. Please tell him. ...*(Interruptions)*.... Thank you. I shall now put the amendments which have been moved to vote. ...*(Interruptions)*...

SHRI JESUDASU SEELAM: Sir, ...*(Interruptions)*....

MR. CHAIRMAN: Please sit down. Don't violate discipline.

SHRI JESUDASU SEELAM: Sir, I want to say something on this issue. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Sit down. ...*(Interruptions)* I shall now put amendment Nos. 1 to 28 by Shri Vishambhar Prasad Nishad to vote. Are you withdrawing the amendments or shall I put them to vote?

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद (उत्तर प्रदेश): हमने राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर जो संशोधन दिए हैं, उन पर हम बल देते हैं और हम स्पष्टीकरण चाहते हैं कि जो ...(**व्यवधान**)...

Transliteration in Urdu Script.

श्री सभापति : आप सवाल का जवाब दीजिए। भाषण मत दीजिए। भाई आप सवाल का जवाब दीजिए, भाषण मत दीजिए। ...*(व्यवधान)*...

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद : हमने जो संशोधन दिया है, उसके बारे में सरकार ने कुछ नहीं कहा है।

MR. CHAIRMAN: Are you pressing the amendments? Or, are you withdrawing them? Give answer in one word. ...*(Interruptions)*...

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद : हम उम्मीद करते हैं ...

श्री सभापति : नहीं, आप भाषण नहीं देंगे। आप सिर्फ सवाल का जवाब देंगे और कुछ नहीं।

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद : माननीय सभापति महोदय, मैं अमेंडमेंट्स को विद्ड्रॉ करता हूं।

The Amendments (Nos. 01 to 28) were, by leave, withdrawn.

MR. CHAIRMAN: The amendments are withdrawn. ...*(Interruptions)*...

Now, Amendments (Nos. 29 to 72), by Smt. Kanak Lata Singh. Are you withdrawing the amendments? Or, shall I put them to vote?

श्रीमती कनक लता सिंह (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं अमेंडमेंट्स विद्ड्रॉ करती हूं।

The Amendments (Nos. 29 to 72) were, by leave, withdrawn.

MR. CHAIRMAN: Amendments (Nos. 73 to 87) by Shri Naresh Agrawal. Are you withdrawing the amendments? Or, shall I put them to vote? ...*(Interruptions)*...

श्री नरेश अग्रवाल : माननीय सभापति जी, हम विरोध भी कर रहे हैं, इस बात का कि प्रधान मंत्री जी ने उत्तर प्रदेश के बारे में कोई बात नहीं कही, जबकि ...

श्री सभापति : नहीं, नहीं, आप सिर्फ इसका जवाब दीजिए।

श्री नरेश अग्रवाल : लेकिन परपरा रही है प्रेज़िडेंट ऐड्रेस पर वोट करने की, इस कारण मैं विद्ड्रॉ करता हूं।

The Amendments (Nos. 73 to 87) were, by leave, withdrawn.

MR. CHAIRMAN: Amendments (Nos. 88 to 106) by Shri Madhusudan Mistry. Are you pressing the amendments? ...*(Interruptions)*...

श्री मधुसूदन मिस्त्री (गुजरात) : सर, जैसा अभी अग्रवाल जी ने कहा कि प्रेज़िडेंट ऐड्रेस पर ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Are you withdrawing the amendments? Or, shall I put them to vote?

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: I am coming to that. Just give me a minute, Sir, to speak. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: No; this is only a question to be answered.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: I have not spoken, Sir. I have to say...

MR. CHAIRMAN: No; I am sorry. This is not the time to speak.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: No; I am not speaking. I am just drawing your attention for five minutes. What is this, Sir? ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: No, I am sorry.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: I just want one minute.

MR. CHAIRMAN: That is not the procedure. That is not the procedure, Mistryji...*(Interruptions)*...

श्री मधुसूदन मिस्त्री : सर, मैं आपका ध्यान इस तरफ आकर्षित करना चाहता हूं कि हमारे प्राइम मिनिस्टर जो हैं, उन्होंने ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : नहीं, नहीं, आप इस सवाल का जवाब दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री मधुसूदन मिस्त्री : सर, मैं आपको बता रहा हूं कि मनरेगा के अंदर प्राइम मिनिस्टर ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Are you withdrawing the amendments? Or, shall I put them to vote?

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: Sir, I am coming to it. Please, give me a minute. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: No, you cannot speak on this occasion.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: I am not speaking, Sir. I just want to make a point.

MR. CHAIRMAN: The question is simple and straightforward.

SHRI MADHUSUDHAN MISTRY: I am answering to that.

MR. CHAIRMAN: What is the answer? Are you withdrawing? ...*(Interruptions)*...

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: The question is...

MR. CHAIRMAN: What is the question?

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: The question is: When the hon. Prime Minister was Chief Minister of Gujarat...

MR. CHAIRMAN: No, no. That is not relevant. It is not going on record. ...*(Interruptions)*...

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: *

MR. CHAIRMAN: This is not going on record.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: *

MR. CHAIRMAN: Are you withdrawing your amendments? Or, shall I put them to vote?

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: *...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: No; you will not. Come to the point. You just answer the question.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: *

MR. CHAIRMAN: I am sorry. Please, observe the procedure. Don't do this.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: *

MR. CHAIRMAN: I cannot allow you a minute now. You have had your time to speak. ...*(Interruptions)*...

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: *

MR. CHAIRMAN: No. You cannot do that. You simply answer the question.

---

*Not recorded.

श्री मधुसूदन मिस्त्री : *

MR. CHAIRMAN: Please. None of this is going on record.

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: *...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Are you withdrawing the amendments? Or, shall I put them to vote?

SHRI MADHUSUDAN MISTRY: Sir, I withdraw them. But...

The Amendments (Nos. 88 to 106) were, by leave, withdrawn.

MR. CHAIRMAN: Amendments (Nos. 107 to 209) by Dr. T. Subbarami Reddy. Are you pressing the amendments? Or, shall I put them to vote. ...*(Interruptions)*...

DR. T. SUBBARAMI REDDY (Andhra Pradesh): Sir, I will not withdraw all the Amendments. My amendments are from 107 to 209. There are 103 amendments. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: What is the answer to the question?

DR. T. SUBBARAMI REDDY: My answer is: Out of 103 amendments, I am not agreeable to withdraw six amendments unless the Government assures that it will fulfill the assurances given to the residuary State of Andhra Pradesh in the Andhra Pradesh Reorganisation Act. Otherwise, I will not withdraw. I will press for voting.

MR. CHAIRMAN: Will you mention the six amendments, so that I can put them to the House for voting? ...*(Interruptions)*...

DR. T. SUBBARAMI REDDY: Sir, unless the Government gives an assurance, I am not going to withdraw.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, I appeal to the hon. Member that he will have an opportunity during this Budget Session. He can still raise those issues. Please, this is the hon. President's Address...*(Interruptions)*...

DR. T. SUBBARAMI REDDY: The Government has to give some assurance...*(Interruptions)*...

*Not recorded.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Whether you accept it or not, it is your prerogative. I am not disputing with it. मेरी प्रार्थना है कि सदन को राष्ट्रपति अभिभाषण पर धन्यवाद देना है, इसलिए कृपया उस पर insist मत कीजिए। बजट पर चर्चा के दौरान आपको इसका समाधान मिलेगा। सरकार इसके बारे में आपको response देगी। Sir, I have already said that the Government has taken note of your concerns and they will be addressed in due course of time.

DR. T. SUBBARAMI REDDY: I am happy that the Government has taken note of this fact. Therefore, I am withdrawing my Amendments.

The Amendments (Nos. 107 to 209) were, by leave, withdrawn.

MR. CHAIRMAN: Now, Amendments (Nos. 210 to 231) by Shri Narendra Kumar Kashyap. Are you pressing the Amendments or I shall put them to vote?

श्री नरेन्द्र कुमार कश्यप (उत्तर प्रदेश) : सभापति जी, सदन की गरिमा के हिसाब से मैं अपना संशोधन वापस लेता हूं।

The Amendments (Nos. 210 to 231) were, by leave, withdrawn.

MR. CHAIRMAN: Amendment Nos. 232 to 319 by Shri Sitaram Yechury, Shri P. Rajeeve and Shri T.K. Rangarajan. Are you pressing them or I shall put them to vote?

SHRI SITARAM YECHURY: No, Sir. I am not withdrawing the Amendments after what we have heard from the hon. Prime Minister. We would have withdrawn them in the normal course. But, since he is asking for a fight, we don't want to back out. I am not withdrawing the Amendments. Out of these Amendments, please take the Voice Vote and then I will tell you my next point.

MR. CHAIRMAN: If you are not withdrawing the Amendments, then the Amendments will have to be put to vote.

SHRI SITARAM YECHURY: Yes, Sir, you may take the Voice Vote.

MR. CHAIRMAN: The question is that Amendment Nos. 232 to 319 be...

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, I want a division on Amendment No. 233.

SHRI DEREK O'BRIEN: We have the same issue at Amendment No.357.

MR. CHAIRMAN: Is that the only one you are pressing? ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, on Amendment No.233, I want a division. Do I have the permission to read it out?

MR. CHAIRMAN: Every Member has a copy of the Amendments. There is no need to read it. ...*(Interruptions)*...

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, Sitaramji is a very senior Member. There was a mention about steps taken on unearthing black money and bringing back the black money, and also the Prime Minister spoke on this. I request Sitaramji that this is an issue on which there can't be any difference of opinion. But, moving an Amendment to the President's Address, normally, does not happen. You have a right, I do concede. But, I request you to consider the fact that your concerns are understood. There is no disagreement generally as far as fighting black money is concerned. Please don't press for division. That is my request to you.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, normally, I would have conceded to the request of the hon. Parliamentary Affairs Minister. But, here, the normal procedure in the House is that when we disagree with something, we ask for an interjection; that was not allowed. After the Prime Minister makes a speech, we rise to ask for clarifications; that was not allowed. Then, the Leader of the Opposition was not allowed to seek a clarification. Sir, there have been violation of all the norms and procedures in this House. We strongly object to it and we want to record that as well in this vote, in the manner in which our Parliamentary democracy in this House is being treated. You can't have a situation where the hon. Prime Minister will address the House, reply to a discussion—12 hours of discussion we have had—where every major point that was made in the discussion has been scuttled. But, okay, that is his opinion. But, he can't leave the House and go after this. ...*(Interruptions)*... I insist on a division.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Sir, I would like to place before the House that the rules of procedure and also the precedents in the House are that when you make a statement, you have an opportunity to seek clarifications. Here, it is a Motion which was discussed. Every Member and party had an opportunity; they have put their view and the Prime Minister also has intervened and he has put his point of view. Never before any clarifications are given ...*(Interruptions)*... He has to understand that. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please, let us ...*(Interruptions)*...

THE MINISTER OF COMMUNICATIONS AND INFORMATION TECHNOLOGY (SHRI RAVI SHANKAR PRASAD): Sir, I have just only one request. As far as seeking clarification on the response by hon. Prime Minister on Presidential Address is concerned, I am a Member of this House for the last sixteen years, it is never allowed. So many decisions are there, Sir. As a matter of principle, it is allowed, but not in this.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, I know my rights as a Member. I will exercise that right and, particularly, after the reply that was given, that right of mine is an inalienable right as long as I am a Member of this House. I exercise that right; no need of any further clarification because we were not allowed to ask. And, therefore, please allow me to exercise my right. You have to protect me. I am asking for a division on Amendment No. 233.

MR. CHAIRMAN: One minute. I think the hon. Members are well aware of the procedures. If an amendment is moved and the amendment is not withdrawn, then the hon. Member always has the right to press it. What the hon. Minister of Parliamentary Affairs has said is a different matter of a certain convention and propriety. Now, if in spite of that you wish to push it to the point, it is your right. The Chair cannot deny it to you. ...*(Interruptions)*...

SHRI SITARAM YECHURY: Like you have explained that you cannot deny, I am also asking you to just give me a minute. हम यह नहीं चाहते हैं कि इस तरह की बात यहां पर हों, लेकिन इसके अलावा और कोई चारा हमारे लिए छोड़ा नहीं गया। 14 घंटे की बहस में जो मुख्य मुद्दे उठे, उनका जवाब नहीं मिला। हमें न यह अधिकार मिला कि प्रधान मंत्री महोदय से हम पूछ सकें कि इन सवालों के ऊपर क्या जवाब है? वह अधिकार भी जो मिलता रहा है, मेरा पिछले दस साल का अनुभव है, जो अधिकार मिलता रहा है, वह नहीं दिया गया है।

श्री सभापतिः देखिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरीः थोड़ी सी courtesy होती है, अगर कोई यहां पर उठकर क्लेरिफिकेशन्स पूछता, तो उसकी परमिशन मिलती। यहां पर माननीय प्रधान मंत्री उस तरह की परमिशन देने से भी इन्कार कर गए।...(**व्यवधान**)... इसीलिए हम डिविजन चाहते हैं। ...(**व्यवधान**)...हम डिविजन चाहते हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री रवि शंकर प्रसादः सर, मैं 16 साल से इस हाउस में हूं। ...(**व्यवधान**)... राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर कभी क्लेरिफिकेशन नहीं मिलता है। ...(**व्यवधान**)... ये क्या बात कर रहे हैं? ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः नहीं, नहीं। ...(**व्यवधान**)...

श्री भुवनेश्वर कालिता (असम)ः प्रधान मंत्री के बाद LOP को बोलने दिया जाता है। ...(**व्यवधान**)..

श्री सभापतिः आप बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)... Which amendments are you pressing? *...(Interruptions)...*

SHRI SITARAM YECHURY: Amendment No. 233. They also had a similar Amendment.

श्री रवि शंकर प्रसादः सर, क्या वे आपके निर्णय पर आपत्ति उठा रहे हैं? ...(**व्यवधान**)... इसका क्या मतलब है? ...(**व्यवधान**)... वे वरिष्ठ मेम्बर हैं। ...(**व्यवधान**)... आपने निर्णय दिया है। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: This is not your amendment, it is his amendment. *...(Interruptions)...* What are you saying?

श्री सीताराम येचुरी : आप भी जानते हैं और हम भी जानते हैं कि मतलब क्या है? ...(**व्यवधान**)...

SHRI SUKHENDU SEKHAR ROY: I have an identical amendment at serial no. 357.

MR. CHAIRMAN: When we will come to it, we will take it up.

SHRI SUKHENDU SEKHAR ROY: So, both the amendments should be put to vote.

MR. CHAIRMAN: No, no. When we come to it, we will take it up.

SHRI SUKHENDU SEKHAR ROY: Both the amendments should be put to vote. *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: All right, now one minute please. Silence. I shall now put to vote the amendments (Nos.232 to 319) except amendment (No.233) and the one which is identical to it. Which one is that?

SHRI DEREK O'BRIEN: Sir, it is No. 357.

MR. CHAIRMAN: It is not here. So, when we come to it, we will take it up. Otherwise, it will disturb the order.

The Amendments (No.232 and Nos.234 to 319) were, by leave, withdrawn.

MR. CHAIRMAN: Now, I shall put the Amendment (No. 233) moved by Shri Sitaram Yechury to vote. The question is:-

That at the *end* of the Motion, the following be *added*, namely:-

'but regret that there is no mention in the Address about the failure of the Government to curb the high-level corruption and to bring back black money'.

SHRI SITARAM YECHURY: No, Sir, I want division.

MR. CHAIRMAN: Okay; let the lobbies be cleared.

The House Divided.

MR. CHAIRMAN: Ayes: 120
Noes: 58

AYES

Abraham, Shri Joy

Achuthan, Shri M.P.

Aga, Ms. Anu

Agrawal, Shri Naresh

Aiyar, Shri Mani Shankar

Akhtar, Shri Javed

Ali, Shri Munquad

Anand Sharma, Shri

Ansari, Shri Salim

Antony, Shri A.K.

Ashwani Kumar, Shri

Azad, Shri Ghulam Nabi

Bachchan, Shrimati Jaya

Baidya, Shrimati Jharna Das

Balagopal, Shri K.N.

Balmuchu, Dr. Pradeep Kumar

Bandyopadhyay, Shri D.

Banerjee, Shri Ritabrata

Batra, Shri Shadi Lal

Bhattacharya, Shri P.

Biswal, Shri Ranjib

Bora, Shri Pankaj

Budania, Shri Narendra

Dalwai, Shri Husain

Darda, Shri Vijay Jawaharlal

Deo, Shri A.U. Singh

Dua, Shri H.K.

Dwivedi, Shri Janardan

Faruque, Shrimati Naznin

Fernandes, Shri Oscar

Ganguly, Dr. Ashok S.

Gill, Dr. M.S.

Gowda, Prof. M.V. Rajeev

Gupta, Shri Vivek

Haque, Shri Md. Nadimul

Hariprasad, Shri B.K.

Harivansh, Shri

Hashmi, Shri Parvez

Jayashree, Shrimati B.

Jugul Kishore, Shri

Kalita, Shri Bhubaneswar

Kashyap, Shri Narendra Kumar

Khan, Shri Javed Ali

Khan, Shri K. Rahman

Khan, Shri Mohd. Ali

Kidwai, Shrimati Mohsina

Kujur, Shri Santiuse

Mahendra Prasad, Dr.

Mahra, Shri Mahendra Singh

Mayawati, Km.

Misra, Shri Satish Chandra

Mistry, Shri Madhusudan

Mukut Mithi, Shri

Naik, Shri Shantaram

Nanda, Shri Kiranmay

Narayanan, Shri C.P.

Natchiappan, Dr. E.M. Sudarsana

Nishad, Shri Vishambhar Prasad

O Brien, Shri Derek

Parida, Shri Baishnab

Patel, Shri Ahmed

Patil, Shrimati Rajani

Perween, Shrimati Kahkashan

Punia, Shri P.L.

Raja, Shri D.

Rajan, Shri Ambeth

Rajaram, Shri

Rajeeve, Shri P.

Ramalingam, Dr. K.P.

Ramesh, Shri Jairam

Rangarajan, Shri T.K.

Rao, Dr. K.V.P. Ramachandra

Rao, Shri V. Hanumantha

Rapolu, Shri Ananda Bhaskar

Ravi, Shri Vayalar

Reddy, Dr. T. Subbarami

Reddy, Shri Palvai Govardhan

Roy, Shri Mukul

Sadho, Dr. Vijaylaxmi

Sahani, Dr. Anil Kumar

Saini, Shri Rajpal Singh

Salam, Haji Abdul

Saleem, Chaudhary Munvvar

Seelam, Shri Jesudasu

Seema, Dr. T.N.

Selja, Kumari

Sen, Shri Tapan Kumar

Sharma, Shri Satish

Shekhar, Shri Neeraj

Shukla, Shri Rajeev

Singh, Dr. Kanwar Deep

Singh, Dr. Manmohan

Singh, Shri Arvind Kumar

Singh, Shri Bhupinder

Singh, Shri Digvijaya

Singh, Shri Ramchandra Prasad

Singh, Shri Veer

Singh, Shrimati Kanak Lata

Sinh, Dr. Sanjay

Siva, Shri Tiruchi

Soni, Shrimati Ambika

Syiem, Shrimati Wansuk

Tazeen Fatma, Dr.

Thakur, Shri Ram Nath

Thakur, Shrimati Viplove

Thangavelu, Shri S.

Tirkey, Shri Dilip Kumar

Tiwari, Shri Alok

Tiwari, Shri Pramod

Tulsi, Shri K.T.S.

Tyagi, Shri K.C.

Varma, Shri Pavan Kumar

Verma, Shri Ravi Prakash

Vora, Shri Motilal

Yadav, Dr. Chandrapal Singh

Yadav, Prof. Ram Gopal

Yadav, Shri Darshan Singh

Yadav, Shri Sharad

Yechury, Shri Sitaram

Zhimomi, Shri Khekiho

NOES

Arjunan, Shri K. R.

Bernard, Shri A. W. Rabi

Bhunder, Shri Balwinder Singh

Chandrasekhar, Shri Rajeev

Dave, Shri Anil Madhav

Desai, Shri Anil

Dhindsa, Sardar Sukhdev Singh

Dhoot, Shri Rajkumar

Dudi, Shri Ram Narain

Gehlot, Shri Thaawar Chand

Goel, Shri Vijay

Gohel, Shri Chunibhai Kanjibhai

Gujral, Shri Naresh

Heptulla, Dr. Najma A.

Irani, Shrimati Smriti Zubin

Jain, Shri Meghraj

Jangde, Dr. Bhushan Lal

Jatiya, Dr. Satyanarayan

Javadekar, Shri Prakash

Jha, Shri Prabhat

Judev, Shri Ranvijay Singh

Khanna, Shri Avinash Rai

Kore, Dr. Prabhakar

Laway, Shri Nazir Ahmed

Maitreyan, Dr. V.

Mandaviya, Shri Mansukh L.

Manhas, Shri Shamsher Singh

Manjunatha, Shri Aayanur

Mitra, Dr. Chandan

Muthukaruppan, Shri S.

Nadda, Shri Jagat Prakash

Naidu, Shri M. Venkaiah

Naqvi, Shri Mukhtar Abbas

Nathwani, Shri Parimal

Nirmala Sitharaman, Shrimati

Panchariya, Shri Narayan Lal

Pandian, Shri Paul Manoj

Pandya, Shri Dilipbhai

Parrikar, Shri Manohar

Patil, Shri Basawaraj

Pradhan, Shri Dharmendra

Prasad, Shri Ravi Shankar

Ramesh, Shri C.M.

Rangasayee Ramakrishna, Shri

Rao, Dr. K. Keshava

Sai, Shri Nand Kumar

Sancheti, Shri Ajay

Selvaraj, Shri A. K.

Singh Badnore, Shri V.P.

Sinha, Shri R. K.

Sood, Shrimati Bimla Kashyap

Swamy, Shri A.V.

Tarun Vijay, Shri

Tundiya, Mahant Shambhuprasadji

Vadodia, Shri Lal Sinh

Vegad, Shri Shankarbhai N.

Vijila Sathyananth, Shrimati

Yadav, Shri Bhupender

The motion was adopted.

MR. CHAIRMAN: Amendments (Nos. 332 to 351) by Shri Kiranmay Nanda. Are you withdrawing your amendments?

SHRI KIRANMAY NANDA: I withdraw my amendments.

The Amendments (Nos. 332 to 351) were, by leave, withdrawn.

MR. CHAIRMAN: Amendments (Nos. 352 to 361) by Shri Sukhendu Sekhar Roy. Are you withdrawing your amendments?

SHRI SUKHENDU SEKHAR ROY: I am withdrawing the amendments, excepting Amendment No.357. It should be put to Division. Other Amendments, I am withdrawing.

The Amendments (Nos.352 to 356 and 358 to 361) were, by leave withdrawn.

MR. CHAIRMAN: Okay, Amendment No.357. Are you seeking Division on it?

SHRI SUKHENDU SEKHAR ROY: Already an identical amendment has been accepted by the House, therefore, I am withdrawing it.

The Amendment (No.357) was, by leave, withdrawn.

MR. CHAIRMAN: Amendments (Nos. 368 to 371) are by Shri Tiruchi Siva. Are you withdrawing the amendments?

SHRI TIRUCHI SIVA: I am insisting only on four issues and one of them is regarding Tamil Nadu fishermen. The Prime Minister while replying...

MR. CHAIRMAN: We are not going into the speech. ...*(Interruptions)*...

SHRI TIRUCHI SIVA: If I am moving, Sir, no explanation. ...*(Interruptions)*... I am withdrawing. ...*(Interruptions)*... The Prime Minister said that there will be very good relationship with neighbours, at the same time, we will not surrender. Taking his words into confidence, Sir, I am withdrawing my amendments.

The Amendments (Nos.368 to 371) were, by leave, withdrawn.

MR. CHAIRMAN: I shall now put the Motion as amended to vote.

The question is:

That an Address be presented to the President in the following terms:

That the Members of the Rajya Sabha assembled in this Session are deeply grateful to the President for the Address which he has been pleased to deliver to both Houses of Parliament assembled together on 23rd February, 2015, but regret that there is no mention in the Address about the failure of the Government to curb the high-level corruption and to bring back black money.

The motion, as amended, was adopted.

[MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair*]

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Order please. ...*(Interruptions)*... Order, order. Please don't stand and walk in the passage. Those who want to go out, may go out. Order please. Please don't walk on the passage. ...*(Interruptions)*... Those who want to go out, may go out. Others may resume their seats.

MESSAGES FROM THE LOK SABHA-*Contd.*

The Mines and Minerals (Development and Regulation) Amendment Bill, 2015

SECRETARY-GENERAL: Sir, I have to report to the House the following message received from the Lok Sabha, signed by the Secretary-General of the Lok Sabha:-